नवम्बर 2003
Rs. 12 /-
चन्दामामा

PARLE
चुप्पक्क चक्क
चँ...नकचक्क
चिश्श ट्वीश नक?
गोली
मस्त
बोली
mango bite
mango
bite
अपने मुंह में रखिए मैंगोबाइट की एक गोली,
और शुरू कीजिए बोलना मैंगोबाइट की बोली.
Visit: www.parleproducts.com

CHANDAMAMA

चन्दामामा

सम्पुट - १०७ नवम्बर - २००३ सञ्चिका - ११

विशेष आकर्षण

भल्लूक मांत्रिक

९

वज्र कंकण

१५

बौनी राक्षसी

२४

दुर्वास की हँसी

६७

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20

Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to

Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट
या मनी-ऑर्डर द्वारा 'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

आमना-सामना : तब और अब

इस अंक में कहीं पर एक कहानी है : एक आमना-सामना। कृपया इस स्तम्भ को पढ़ने से पूर्व उसे पढ़ लें। कहानी अपने-अपने रथ पर सवार दो राजाओं की है जिनका एक संकीर्ण मार्ग पर आमना-सामना हो जाता है। दोनों में से किसी एक को पीछे हटना था ताके दूसरे को आगे बढ़ने का मार्ग मिल सके।

कहानी बुद्ध की जातक-कथा से है, ढाई हजार वर्ष से भी अधिक पुरानी। हाल में एक वैसी ही स्थिति उत्पन्न हो गई। दो सरकारी विभागों के अधिकारियों के वाहन विपरीत दिशाओं से आते हुए एक संकीर्ण पुल पर आमने-सामने खड़े हो गये। कौन मार्ग देगा? इस प्रश्न को किसी विभाग से लेना-देना नहीं है, बल्कि हमारी मानसिकता से है। दोनों वाहनों ने एक दूसरे को मार्ग देने के लिए पीछे हटने से इनकार कर दिया। दोनों में गरमागरम बहस हुई और एक ग्रुप दूसरे ग्रुप के एक अधिकारी को पकड़ कर ले गया। दूसरे ग्रुप ने निकटतम पुलिस स्टेशन में यह शिकायत दर्ज करायी कि उनके एक अधिकारी का अपहरण कर लिया गया है।

आगे क्या हुआ यह महत्वपूर्ण नहीं है। निस्सन्देह किसी उच्चाधिकारी ने हस्तक्षेप किया होगा और इस भद्दी अहं की टकराहट को खत्म कर दिया होगा। प्रश्न अत्यन्त अधिक आधार भूत है। हम उस युग से शिष्टाचार और धैर्य के क्षेत्र में कितना आगे बढ़ पाये हैं जो इस पत्रिका में दी गई उस पौराणिक कथा की पृष्ठभूमि है। हम लोगों के लिए जो महत्वपूर्ण है वह यह कि इस प्रश्न पर गहराई से मनन करें।

सम्पादक : *विश्वम*

Visit us at : http://www.chandamama.org

सकलानंद की सलाह

खांदेड नामक गाँव में हर शुक्रवार को हाट लगती थी। उस हाट में अच्छी नस्ल के पशुओं को खरीदने के लिए लोग दूर-दूर से आते थे।

शिवानंद एक किसान था। कृषि संबंधी कामों के लिए उसे बैलों की एक जोडी की सख्त ज़रूरत थी। वह खांदेड की हाट में बैल खरीदने आया। उसके वहाँ आते-आते रात हो गयी, इसलिए उस रात को सराय में ही ठहरना उचित समझा। हालांकि वहाँ चोरों का डर नहीं था, फिर भी उसने यही सही समझा कि उसके पास जो पाँच सौ रुपये हैं, सराय के मालिक देवनारायण के सुपुर्द करूँ। उसने पाँच सौ रुपये सुरक्षित रखने के लिए उसे दे दिया।

सबेरे हाट में जाने के पहले उसने देवनारायण से वे पाँच सौ रुपये माँगे।

देवनारायण ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, ''पाँच सौ ! मुझे दिया? तुम भोले-भाले हो या मुझे भोला-भाला समझ रहे हो?''

उसके इस जवाब से शिवानंद एकदम घबरा गया। उसने रुआँसे स्वर में कहा, ''आप यह क्या कह रहे हैं? क्या मैंने कल रात को आपको पाँच सौ रुपये नहीं दिये? मैंने कहा भी था कि हाट जाते समय ले लूँगा।''

''पाँच सौ क्या, पाँच पैसे भी तुमने मुझे नहीं दिये, झूठ बोल रहे हो।'' देवनारायण ने कड़वे स्वर में फटकारा।

अब शिवानंद परेशान हो उठा। चुपचाप वह सराय से बाहर आ गया। उसकी दीन स्थिति को देखकर एक अजनबी ग्रामीण ने उसकी दीनता का कारण पूछा। पूरी बात जानने के बाद ग्रामीण ने शिवानंद से कहा, ''तुम्हारी रक़म तुम्हें मिलनी हो तो इसका एक रास्ता है। देखो, उस गली के आख़िर में बरगद के पेड़ के बगल में एक घर है। वहाँ सकलानंद नामक एक बुद्धिमान

और चतुर व्यक्ति रहता है। वहाँ जाओ और उससे पूरी बात खुलासा बताना।''

शिवानंद, सकलानंद के पास गया। उस समय वह चबूतरे पर बैठकर कोई किताब पढ़ रहा था। शिवानंद ने अपना और अपने गाँव का नाम बताकर अपनी पूरी कहानी सुना दी।

''जो हुआ, सो हो गया। अब तुम एक काम करो। एक और पाँच सौ रुपये ले आना। अगले गुरुवार को उसी की सराय में ठहरना। और उसे सुरक्षित रखने के लिए देना। इस बार राम मंदिर के पुजारी को भी अपने साथ ले जाना। उसी की उपस्थिति में वे रुपये देवनारायण को देना।'' सकलानंद ने कहा। शिवानंद अगले गुरुवार की रात को पुजारी के साथ गया और पाँच सौ रुपये सुरक्षित रखने के लिए देवनारायण को दिये।

दूसरे दिन सबेरे शिवानंद, सकलानंद से मिला और पूछा, ''कहिये, अब मुझे क्या करना है?''

''अभी वहाँ जाना और वे पाँच सौ रुपये लौटाने के लिए उससे कहना,'' सकलानंद ने सलाह दी।

शिवानंद ने लौटकर देवनारायण से पाँच सौ रुपये माँगे। चूँकि रक़म लेते समय वहाँ पुजारी भी उपस्थित था, इसलिए देवनारायण ने चुपचाप रुपये लौटा दिये। यह काम हो जाने के बाद शिवानंद फिर से सकलानंद के पास आया और कहा, ''मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि पुराने वे पाँच सौ रुपये उससे कैसे वसूल करूँ।''

''यह कोई गंभीर समस्या नहीं है। शाम को पुजारी को अपने साथ सराय ले जाना और देवनारायण से पाँच सौ रुपये माँगना।'' सकलानंद ने सलाह दी।

शिवानंद पुजारी को लेकर सराय गया और अपने पाँच सौ रुपये माँगे। देवनारायण ने वे पाँच सौ रुपये भी चुपचाप लौटा दिये।

खुश होता हुआ शिवानंद, सकलानंद के पास आया और रक़म की वसूली का उपाय बताने के लिए उसे हार्दिक धन्यवाद दिया। तब सकलानंद ने मुस्कुराते हुए कहा, ''धन के विषय में बड़ी सावधानी बरतनी चाहिए। धोखेबाज़ जंगलों में, सरायों में और गलियों में भी रहते हैं।''
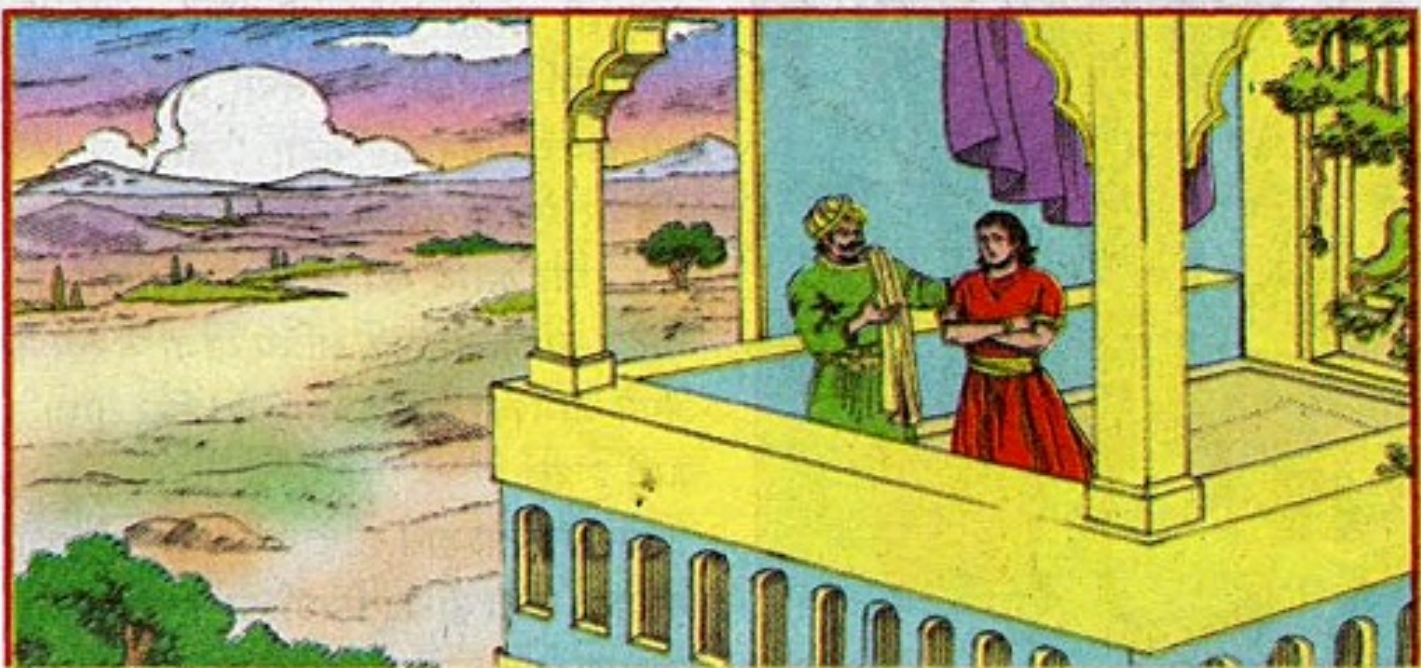
भल्लूक मांत्रिक

प्राचीन काल में ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर एक भयंकर जंगल था। उस जंगल में बसे एक गाँव में कालीवर्मा नामक एक क्षत्रिय युवक रहा करता था। उसका पिता महान योद्धा था जो चन्द्रशिला नगर के राजदरबार में एक सैनिक अधिकारी था। एक बार युद्ध में वह अपने अनुपम पराक्रम का परिचय देते हुए काम आया। उस वक़्त कालीवर्मा केवल दस साल का बालक था। उसकी माँ अपने पति की मृत्यु की चिंता में घुल-घुलकर शीघ्र ही मर गई। ऐसी हालत में बलभद्र नामक एक विश्वासपात्र नौकर ने कालीवर्मा को पाल-पोसकर बड़ा किया और उसे क्षत्रियोचित सारी विद्याएँ सिखाईं।

कालीवर्मा जब बीस साल का युवक हुआ, तब बलभद्र ने एक दिन उसे समझाया- ''कालीवर्मा, अब तुम इस छोटे से गाँव को छोड़ राजधानी नगर में जाओ। वहाँ पर राजदरबार में कोई नौकरी पाने की कोशिश करो।''

कालीवर्मा बोला- ''चन्द्रशिला नगर के राजा जितकेतु असमर्थ और कायर हैं। ऐसे राजा के दरबार में सैनिक बनकर पेट भरने से बढ़कर अपमान की बात मेरे लिए क्या हो सकती है? इसलिए मेरा अपना यही विचार है कि कहीं और जाकर आजीविका का कोई उपाय करूँ।''

वृद्ध बलभद्र ने थोड़ी देर सोचकर कहा- ''राजाओं के शासन की दक्षता अधिकतर उनके दरबारी अधिकारियों पर निर्भर होती है। जितकेतु के पिता महान पराक्रमी थे। तुम्हारे पिता जैसे प्रतापी और बुद्धिमान उनके दरबार में थे। उनकी मृत्यु के बाद जितकेतु गद्दी के वारिस बने। मेरा

संदेह है कि राजा तो स्वार्थी और झूठी तारीफ़ करनेवाले लोगों से घिरे हुए हैं।''

''हो सकता है ! मगर ऐसे राजा का क्या मैं अकेले ही उद्धार कर सकता हूँ? तब तो मैं इसी गाँव का खेत जोतकर अपना पेट पालना ज़्यादा उचित समझता हूँ।'' कालीवर्मा ने कहा।

''यह काम तुम जैसे क्षत्रिय युवक के करने लायक़ नहीं है। अलावा इसके जानते हो, तुम्हारे पिता ने अपनी मृत्यु के समय मुझसे क्या कहा था?'' इन शब्दों के साथ बलभद्र कालीवर्मा को एक कमरे के पास ले गया जिसे आज तक खोला नहीं गया था। उसे खोलकर कालीवर्मा को कमरे के भीतर ले गया।

उस कमरे में कालीवर्मा के पिता के द्वारा इस्तेमाल किये गये तरह-तरह के आयुध, कवच तथा उन अस्त्र-शस्त्रों के पास सोने की मूठवाली तलवार भी पड़ी थी। बलभद्र ने कालीवर्मा की कमर में तलवार बांध दी, तब उसे कवच पहनाकर कहा, ''ओह, ये सब हथियार ऐसे प्रतीत हो रहे हैं, मानो तुम्हारे लिए तैयार कराये गये हों ! तुम्हारे पिता का आदेश था कि तुम एक क्षत्रिय योद्धा के रूप में अपने जन्म को सार्थक बनाओ ! फिर तुम्हारी जैसी इच्छा !''

अपने पिता द्वारा छोड़े गये कवच व खड्ग के धारण करते ही कालीवर्मा का उत्साह उमड़ पड़ा। उसने तत्काल म्यान में से तलवार खींचकर उसकी धार की जांच की। उसकी चमक पर आश्चर्य करते हुए बोला, ''बलभद्र ! मैं निश्चय ही अपने पिता के आदेश का पालन करूँगा। मेरे भविष्य का निर्माण करनेवाली चीज़ हल का फाल नहीं, तेज धारवाली यह तलवार है !''

ये बातें सुन बलभद्र बड़ा खुश हुआ और दूसरे दिन ही कालीवर्मा कवच धारण कर तलवार कमर में बांध और मार्ग-व्यय के लिए एक सौ स्वर्ण मुद्राएँ ले घोड़े पर सवार हो चल पड़ा।

जंगल के रास्ते दुपहर तक कालीवर्मा की यात्रा बेरोकटोक चली। दुपहर के वक़्त उसने सोचा कि अपने साथ लाई गई रोटियाँ खाकर किसी पेड़ की छाया में विश्राम करे। तब पानी की खोज में वह किसी पहाड़ी नाले की ओर चल पड़ा, तभी उसे एक पेड़ पर से किसी के कराहने की आवाज सुनाई दी।

कालीवर्मा ने सर उठाकर पेड़ की शाखाओं

में देखा। शाखाओं में से एक मानव आकृति चीख़कर धम्म से जमीन पर गिर पड़ी। कालीवर्मा झट से घोड़े से उतर पड़ा और उस व्यक्ति के निकट पहुँचा। वह एक वृद्ध था।

कालीवर्मा उसके समीप जाकर बोला, ''दादाजी, इस अवस्था में तुम पेड़ पर क्यों चढ़ गये?''

बूढ़े ने पल भर कालीबर्मा की ओर परखकर देखा, तब बोला, ''बेटा, तुम तो कोई राजभट जैसे लगते हो ! वैसे तुम लोग फ़सल की कटाई के समय कर वसूली को छोड़ फिर कभी इस प्रदेश में दिखाई नहीं देते !''

''मैं राजभट नहीं हूँ। यही नौकरी पाने के लिए राजधानी नगर में जा रहा हूँ। लेकिन तुमने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया। तुमने हाथ-पैर तो नहीं तुड़वाये? क़िस्मतवर लगते हो !'' कालीवर्मा एक सांस में सारी बातें बोल गया।

बूढ़ा चुपचाप उठ खड़ा हुआ, चार-पाँच क़दम चलकर संतुष्टि के साथ सर हिलाकर बोला, ''तुम्हारे कहे अनुसार मैं क़िस्मतवर हूँ। ऐसा न होता तो इस बार लुटेरों ने जब गाँव पर हमला किया, तब घर पर ही रहकर उनके हाथों नाना प्रकार की यातनाएँ झेलता।''

बूढ़े की बातें सुनने पर कालीवर्मा को उसकी हालत थोड़ी बहुत समझ में आ गई। इसका मतलब था कि बूढ़ा लुटेरों से बचकर भाग आया, और पेड़ पर छिप गया, किन्तु पाँव फिसल जाने की वजह से नीचे गिर गया है।

''दादाजी ! मैंने भी सुना है कि इस प्रदेश में लुटेरों का दबदबा कहीं ज्यादा है। लेकिन मैंने यह बात नहीं सुनी थी कि दिन दहाड़े ही वे लोग हमला करके लूट लेते हैं। तुम्हारे गाँव के और लोग कहाँ गये हैं?'' कालीवर्मा ने पूछा।

''बेटा, लुटेरों के हमारे गाँव में प्रवेश करते देख सब लोग जहाँ-तहाँ भाग गये हैं। लुटेरों के गाँव छोड़कर जाने के बाद ही एक-एक करके सब लोग घर लौट आयेंगे।'' बूढ़े ने क़हा।

राजा के बारे में जानते हुए भी बूढ़े के मन की बात ताड़ने के ख्याल से कालीवर्मा ने पूछा, ''दादा, तुम लोगों ने लुटेरों के बारे में राजा को क्यों सूचित नहीं किया?''

दादा उदासपूर्ण चेहरा बनाकर बोला, ''हमारे द्वारा सूचना देने के पहले ही राजा के सिपाही हमारी आधी फ़सल उठा ले जाते हैं। बाक़ी आधी

फसल इन चारों तरफ़ के पहाड़ों में बसनेवाले लुटेरे लूट ले जाते हैं।''

उसी वक़्त पेड़ों की ओट में से चार लुटेरे सामने आये और मज़ाक के स्वर में बोले, ''वाह, बूढ़े ने खूब कहा! आगे होनेवाली फ़सल में से राजा का हिस्सा भी हम ही लोग लेनेवाले हैं।'' इन शब्दों के साथ तलवार उठाकर कालीवर्मा से बोले, ''तुम्हारे कवच, तलवार और घोड़े को देखने पर ऐसा लगता है कि तुम अपने साथ थोड़ा धन भी ले आये हो। धन की वह थैली जमीन पर रखकर चार क़दम पीछे हट जाओ।''

कालीवर्मा ने चोरों की ओर एक बार तीव्र दृष्टि डाली, तब घोड़े के पास जाकर वह जीन से लटकनेवाली रोटियों की छोटी-सी थैली ले आया और उसे जमीन पर रखकर चार क़दम पीछे हट गया। चोरों में से एक बड़ी आतुरता के साथ झुककर थैली उठाने को हुआ, उसी वक़्त कालीवर्मा ने म्यान से तलवार खींचकर चोर की गर्दन उड़ा दी तथा दूसरे ही क्षण तेजी से आगे कूदकर दो और चोरों की छातियों में तलवार भोंक दी।

चौथा चोर डर से ज़ोर से चिल्लाया और भागने को हुआ। पर कालीवर्मा ने तेजी के साथ दौड़कर उसके केश पकड़ लिये और उसकी कमर पर जोर से लात मारी। उसे बूढ़े के पास खींच लाया।

अचानक अपनी आँखों के सामने तीन चोरों का मर जाना तथा चौथे का हाथ-पैर मारते छटपटाना देख बूढ़ा काँप उठा और बोला, ''बेटा, यह तुम्हारा कैसा साहस है? मेरे गाँव में तुम से भी ज्यादा बलवान कितने ही नौजवान हैं! वे

क्या कभी साहस करके इन चोरों का सामना करके वध कर पाये?''

''यह काम उन युवकों के द्वारा कराकर ही मैं राजधानी में जाऊँगा। भूख की बात फिर सोची जाएगी। तुम रोटियों की यह थैली लेकर अपने गाँव का रास्ता बतला दो। मैं अपने घोड़े के साथ इस लुटेरे को भी तुम्हारे पीछे ले आता हूँ।'' कालीवर्मा ने कहा।

बूढ़ा और कालीवर्मा वहाँ से निकलने को ही थे तभी थोड़े से ग्रामवासी हांफते हुए वहाँ पहुँचे और पूछा, ''दादाजी, क्या हुआ? चीखनेवाले वे लोग कौन थे?''

कालीवर्मा ने उनकी ओर घृणा भरी दृष्टि दौड़ाकर कहा, ''ऐसा तो मुझे मालूम नहीं होता कि तुम में से कोई अंधा है। गाँवों पर हमला करके लूटनेवाले डाकुओं का सम्मिलित रूप से सामना करना छोड़ तुम लोग कायरों की भांति जंगलों में भाग जाते हो?''

ये बातें सुन सबने लज्जा के मारे अपने सिर नीचे कर लिये। इस पर बूढ़े ने उन्हें सारा वृत्तांत सुनाकर समझाया, ''अबे, सुनो! आसपास के गाँवों के बूढ़ों को छोड़ बाक़ी लोग इस युवक को अपना नेता बनाकर पहाड़ों में छिपे लुटेरों का सामना करो। हम लोग दिन के वक्त भी घर-द्वार छोड़कर आखिर कितने दिन इस प्रकार जंगलों में अपने सर छिपाते फिरेंगे?''

ये बातें सुन कालीवर्मा ने संतुष्टि के साथ सर हिलाकर कहा, ''मैं तुम लोगों से जो कुछ कहना

चाहता था, उसे इस वृद्ध ने बता दिया है। हमारे हाथ लगे इस चोर के द्वारा बाक़ी लुटेरों का निवास जानने में कोई कठिनाई नहीं होगी। तुम लोगों में जो भाला व लाठी चलाना जानते हैं, वे सब मेरे पीछे चलो। एक हफ्ते के अंदर सभी लुटेरों का सर्वनाश करके मैं अपने रास्ते चला जाऊँगा।''

इसके बाद ग्रामवासी सादर कालीवर्मा को अपने गाँव ले गये और उसे बढ़िया दावत दी। उस दिन शामको कुछ युवक दूर के गाँवों में जाकर कई युवकों को अपने साथ ले आये। कालीवर्मा ने उन्हें समझाया कि कैसे लुटेरों का हिम्मत के साथ सामना करना है।

हाथ लगे लुटेरे ने जान के डर के मारे कालीवर्मा को अन्य लुटेरों के बारे में यह बता दिया कि उनमें से कितने लोग किस पहाड़ की गुफा या

घाटी में छिपे हैं और वहाँ के गुप्त मार्ग क्या हैं?

कालीवर्मा ने गाँव के युवकों को साथ ले लुटेरों पर हठात् हमला कर दिया और अनेक लुटेरों को मार डाला। जो लुटेरे बच गये, वे राज्य की सीमा को पार कर जंगलों में भाग गये।

लुटेरों को भगाकर कालीवर्मा इतमीनान से राजधानी नगर की ओर चल पड़ा। पंद्रह दिन की यात्रा के बाद वह जंगल को पार कर चन्द्रशिला नगर की सरहद पर पहुँचने ही जा रहा था कि एक दिन सूर्योदय के समय अचानक दस अश्वारोहियों ने आकर उसे घेर लिया। कालीवर्मा को म्यान से तलवार खींचने का मौक़ा तक नहीं मिला।

अश्वदल के सरदार ने कालीवर्मा की ओर तीव्र दृष्टि से देखते हुए पूछा, ''तुम्हीं कालीवर्मा हो न? लुटेरों को राज्य की सीमा से पड़ोसी राज्य में भगाने की धृष्टता करनेवाले भी तुम्हीं हो न?''

''हाँ, हाँ, मैंने ही यह काम किया है। ऐसे साहस का कार्य करनेवाले मुझे आदरपूर्वक राजधानी में न ले जाकर राजा के दर्शन कराने के बदले आप लोग इस तरह घेर रहे हैं, जैसे किसी लुटेरे को घेरा जाता है। यह कैसी बात है?'' अचरज के साथ कालीवर्मा ने उनसे पूछा।

यह उत्तर सुनकर अश्वदल का नेता ठठाकर हँस पड़ा और बोला, ''तुमने राजा जितकेतु के प्रति बड़ा ही अपराध किया है। यहाँ से भागनेवाले लुटेरों ने पड़ोसी राज्य में लूट-खसोट शुरू कर दिया है। वहाँ के राजा यह सोचकर कि हमने ही उन लुटेरों को उनके राज्य में भगा दिया है, चन्द्रशिला नगर पर हमला करने जा रहे हैं। इस गड़बड़ी का कारण तुम्हीं हो। इसलिए हम तुम्हें फांसी पर लटकाकर तुम्हारी लाश को उस राजा की सेवा में भेजने जा रहे हैं।''

''क्या तुम्हारे राजा जितकेतु के साथ तुम्हारे भी दिमाग खराब हो गये हैं?'' ये शब्द कहते कालीवर्मा तलवार की मूठ पर हाथ डालने को हुआ कि अश्वारोही उसे बन्दी बनाकर घोड़े पर डाल राजधानी की ओर चल पड़े।

(क्रमशः)
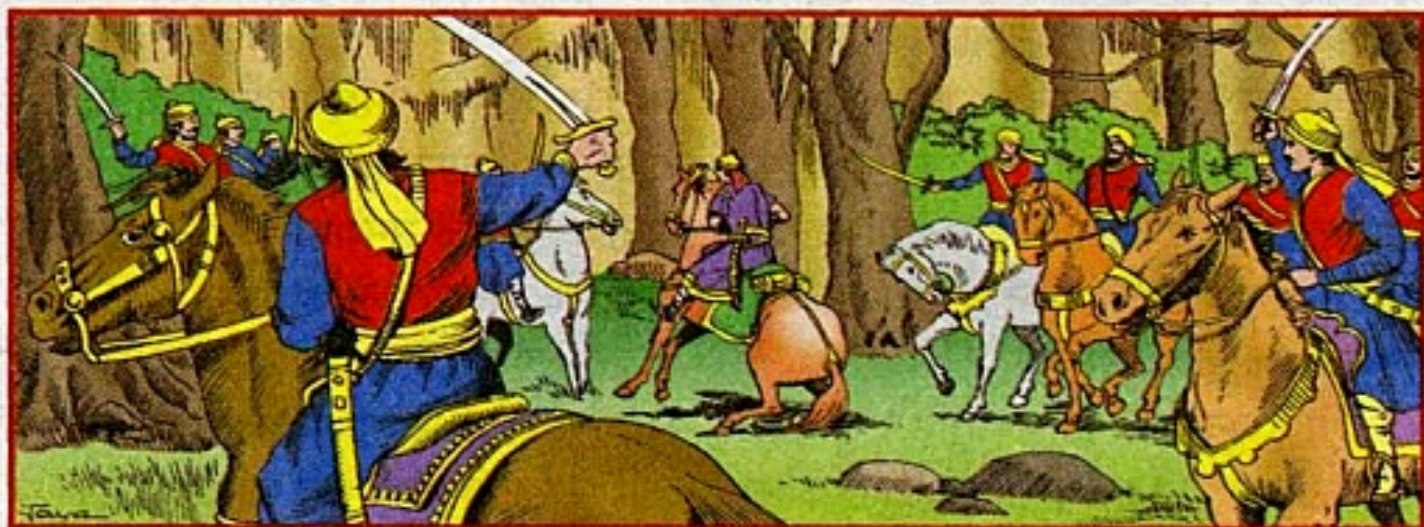
राजा विक्रम और वेताल की नई कथाएँ

वज्र कंकण

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और उसे अपने कंधे पर डाल लिया। फिर यथावत् श्मशान की ओर तीव्र गति से बढ़ने लगा।

तब शव के अंदर के वेताल ने कहा, ''राजन्, तुम तो थकते ही नहीं, परंतु तुम्हें समझाते-समझाते मैं थक गया हूँ। तुम राजा हो। प्रजा के प्रति तुम्हारी अनेक जिम्मेदारियाँ हैं। वह सब भुलाकर क्यों तुम इस भयंकर श्मशान में रातें गुजारते हो? कार्य सिद्धि के लिए तुम जो परिश्रम कर रहे हो, उसकी प्रशंसा किये बिना मैं नहीं रह सकता। पर संसार में कुछ ऐसे लोग हैं, जो अनायास ही कार्य साध लेते हैं। आदित्य भी एक

ऐसा ही युवक था, जिसने अनेक कष्टों का सामना किया, मानसिक व्यथाएँ सहीं। और यद्यपि वह अन्त में अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल रहा, परंतु ऐन मौक़े पर उसने फल को ठुकरा दिया। उसे अपने हाथ से फिसल जाने दिया। मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे विषय में भी ऐसा हो, ऐसी ग़लती तुम भी कर बैठो। तुम्हें सावधान करने के लिए मैं उसकी कहानी सुना रहा हूँ। अपनी थकावट दूर करते हुए उसकी कहानी ध्यान से सुनो।'' फिर वेताल आदित्य की कहानी यों सुनाने लगा :

रत्नपुर राज्य के बज्रपुर नामक एक ग्राम में आदित्य नामक एक युवक रहा करता था। वह बड़ा ही तेज़ और फुर्तीला था। अपने माँ-बाप का बड़ा ही आदर करता था। उसका खेत बहुत ही सीमित था, पर वह काफ़ी मेहनत करता था। इसके लिए जो फल मिलना चाहिए था, उसे मिलता नहीं था। उसके पुरखे भी इस फल से वंचित थे।

वज्रपुर में समय पर वर्षा होने पर ही फसल होती थी। परंतु वर्षा होने पर भी यह निश्चित नहीं था कि वह फसल घर ले जायी जा सकेगी। इसका कारण था, उस गाँव से होकर बहनेवाली बाष्पधारा नदी। वह हमेशा सूखी पड़ी रहती थी। फिर भी कहना कठिन था कि किस क्षण उसमें बाढ़ आ जायेगी। कहीं भारी वर्षा हो जाए तो अचानक ही बाढ़ का पानी गाँव को और खेतों को डुबो देती थी।

ग्रामाधिकारी के द्वारा गाँव की प्रजा ने कितनी ही बार राज्य से विनती की थी कि एक बांध बांधा जाए और गाँव को बाढ़ के पानी से बचाया जाए। राजा के प्रतिनिधियों के द्वारा भी उन्होंने राजा से विनती की। पर दुर्भाग्यवश राजा ने इस पर ध्यान नहीं दिया। बेचारे गाँव के लोग गाँव छोड़कर जा भी नहीं पाते थे, इसलिए अकाल में ही सही, कष्ट झेलते और भूखों मरते हुए वहीं रहते थे।

उस साल अच्छी बारिश हुई। आदित्य को पूरी आशा थी कि इस साल अच्छी फ़सल होगी और आराम से ज़िन्दगी कटेगी। और हुआ भी यही। फ़सल अच्छी हुई। उसने धान घर ले जाने के लिए सब तैयारियाँ कर लीं। परंतु दुर्भाग्यवश उसी रात को बाष्पधारा नदी उमड़ पड़ी और सारा धान बहाकर ले गयी। गायों और बकरियों

के साथ उस समय उसके माँ-बाप धान की रखवाली करने के लिए खेत पर ही थे। वे भी बाढ़ के पानी में बह गये।

इस दृश्य को देखकर आदित्य का दिल टूट गया। वह ज़ार-ज़ार रोने लगा। अब उस गाँव में रहने की उसकी इच्छा बिलकुल नहीं थी।

विरक्ति ने उसके दिल में घर कर लिया। जीवन उसे निस्सार लगने लगा। उसकी सारी आशाएँ और आकांक्षाएँ मानों माता-पिता के साथ ही बाढ़ में बह गईं। वह वहाँ से निकल पड़ा।

अन्यमनस्क होकर वह दो दिनों तक चलता रहा। उसे खुद मालूम नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है और उसे कहाँ जाना है। तीसरे दिन बरगद के एक पेड़ के नीचे थोड़ी देर तक विश्राम लेने के बाद जब वह निकलने ही वाला था कि उसने एक झाड़ी में चमकती हुई एक चीज़ देखी। उसने उसे झाड़ी से निकालकर देखा। वह एक वज्र कंकण था। उस पर राजमुद्रिका भी थी। उसने उसे कपड़ों में छिपा लिया और चलता बना।

उस दिन की शाम तक राजधानी की सीमा पर स्थित शशांकपुर नामक शहर में पहुँचा। जब वह ग़ली से गुज़र रहा था, तब एक राज प्रतिनिधि घोषणा कर रहा था, "लोगों को यह आख़िरी चेतावनी है। महाराज की राजमुद्रिका लौटायी न गई तो फांसी की सज़ा सुनायी जायेगी। कल तक राजमुद्रिका राजा को सौंपिये और पुरस्कार पाइये।" आदित्य ने वहाँ के लोगों से तत्संबंधी विवरण जानना चाहा।

उसे तब मालूम हुआ कि राजा का वज्रकंकण ग़ायब है। पीढ़ी दर पीढ़ी से उनके पूर्वज इस वज्रकंकण को डालते आ रहे हैं। इसलिए राजा की दृष्टि में उसका बहुत मूल्य है। इसीलिए उन्होंने घोषणा करायी कि पूर्णिमा के पहले इसे जो सौंपेगा, उसे इनाम दिया जायेगा। अगर समय पर यह सौंपा न गया तो बाद में जो आदमी पकड़ा जायेगा, उसे फांसी पर चढ़ाया जायेगा। वहाँ के लोगों ने उसे यह भी बताया कि एक महीने से राजा यह घोषणा करवा रहे हैं।

आदित्य दो दिन और वहीं रुक गया और तीसरे दिन राजधानी पहुँचा। वहाँ दरबार में पहुँचकर राजा के दर्शन किये और भरी सभा में
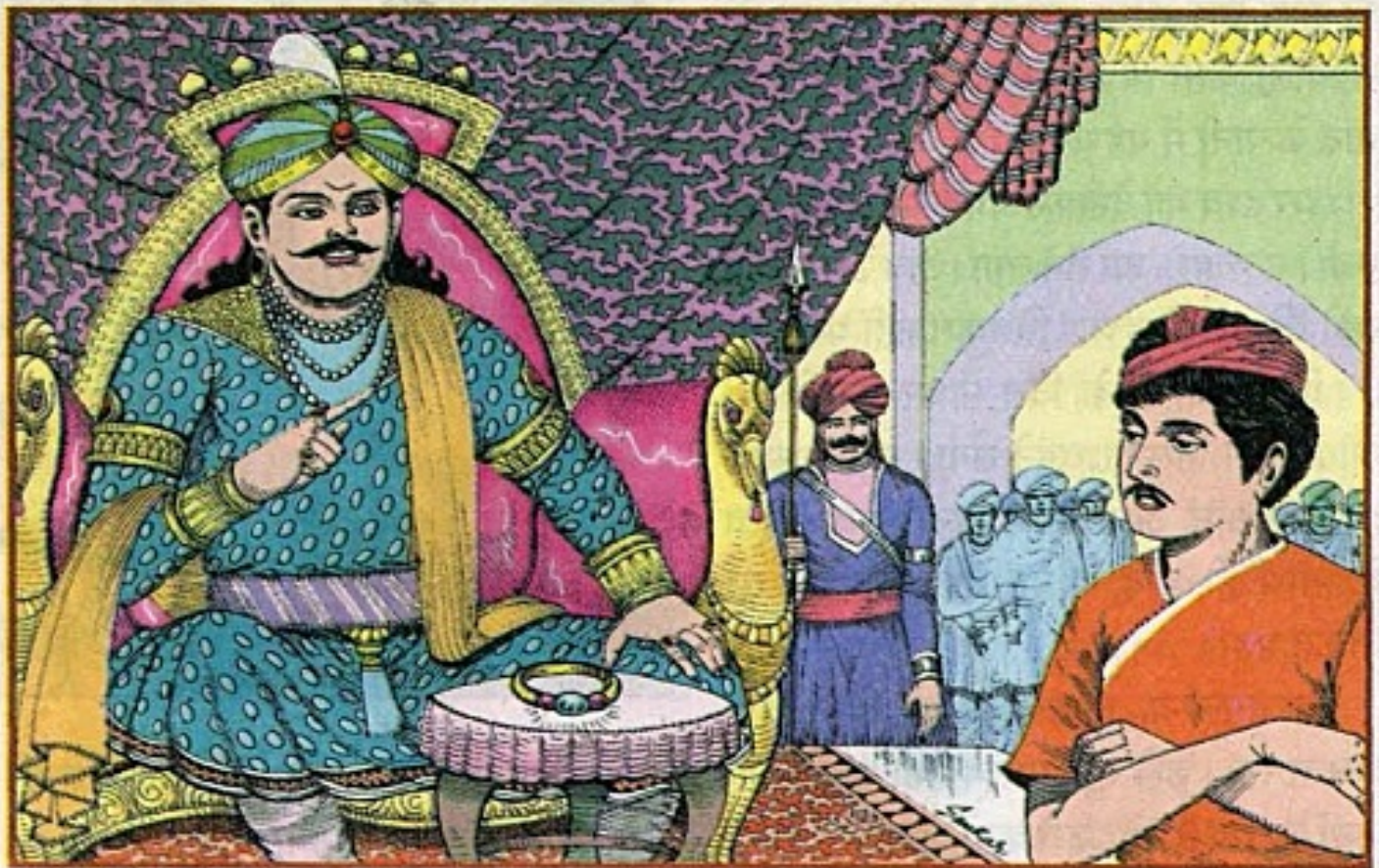
वज्रकंकण उनके सामने रखा। उसे देखते ही राजा बेहद खुश हुआ। उसकी आँखें चमक उठीं। आश्चर्य भरे नेत्रों से देखते हुए उसने आदित्य से पूछा, ''यह तुम्हें कब और कहाँ मिला?''

''तीन दिनों पहले शशांकपुर के निकट एक झाड़ी में मुझे यह मिला।'' आदित्य ने कहा।

''तो उसी दिन मेरे सुपुर्द क्यों नहीं किया? तुम्हें इनाम मिल जाता।'' राजा ने पूछा।

आदित्य कोई उत्तर दिये बिना चुपचाप खड़ा रहा।

''क्या जानते हो, पूर्णिमा के बाद जो कंकण लाकर देगा, उसे क्या सज़ा सुनायी जायेगी?'' कड़वे स्वर में राजा ने पूछा।

''मालूम है।'' सिर हिलाते हुए आदित्य ने कहा।

राजा थोड़ी देर तक आश्चर्य भरे नेत्रों से आदित्य को देखता रहा। फिर सिंहासन से उतरा और बड़े ही प्यार से उसे गले लगाया। फिर कहा, ''जो भी माँगना है, माँगो।''

आदित्य ने राजा को प्रणाम करते हुए कहा, ''महाराज, आपके राज्य के दक्षिणाग्र में स्थित वज्रपुर गाँव का निवासी हूँ मैं। उस गाँव की जनता बाष्पधारा नदी की वजह से दुखी है। उन सब ने कई बार नदी में बांध बंधवाने के लिए आपसे विनती की। लेकिन उनका दुःख दर्द आप तक पहुँचाया नहीं गया। ग्रामाधिकारी तथा राजा के प्रतिनिधियों के द्वारा भी वहाँ की

दुःस्थिति आप तक पहुँचाने का प्रयास किया गया। लेकिन सब व्यर्थ! आज तक उस अभागे गाँव के लिए आपकी ओर से कुछ भी नहीं किया जा सका।''

फिर उसने अपनी आपबीती सुनाते हुए कहा कि कैसे बाढ़ में सारे परिवार और अनाज के बह जाने से वह विक्षिप्त होकर लक्ष्यहीन-सा घर से निकट पड़ा और राजा के दरबार में आ पहुँचा।

''आपके राज्य का नागरिक होने के नाते अब मैंने अपना कर्तव्य निभाया है। राजा होने के नाते आपका फ़र्ज़ है, बांध बंधवाना। मुझे जाने की अनुमति दीजिए।'' कहता हुआ वह राजसभा से बाहर आ गया।

वेताल ने यह कहानी सुनाने के बाद राजा विक्रमार्क से कहा, ''राजा ने कंकण को लौटाने के लिए जो अवधि तय की थी, उसके बाद ही आदित्य ने कंकण राजा को सौंपा। यह उसके लिए सुअवसर था। वह कुछ भी माँग सकता था। लेकिन उसने बांध बंधवाने की ही बात की। गाँव के लोगों को सुविधाएँ प्रदान करने की ही अभ्यर्थना की। जान-बूझकर उसने यह अवसर अपने हाथ से फिसल जाने देने क्यों दिया? मेरे इन संदेहों के समाधान जानते हुए भी चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।''

विक्रमार्क ने कहा, ''आदित्य ईमानदार है। उसे अपने श्रम पर पूरा विश्वास है। कंकण सौंपकर कोई इनाम पाने की उसकी इच्छा नहीं थी। इसी कारण राजा की निर्णय अवधि के बाद ही कंकण सौंपने गया। उसकी दृष्टि में इनाम का कोई महत्व नहीं था। इसीलिए अपने लिए कुछ न माँगकर जनता की भलाई के लिए उसने राजा से बांध बंधवाने की विनती की। यह इस बात का गवाह है कि वह अपने गाँव को, अपने जन्म-स्थान को कितना चाहताहै, उसमें उपकार बुद्धि कितनी भरी पड़ी है। उसकी ईमानदारी व सच्चाई को देखते हुए राजा ने उसे प्यार से गले लगाया।''

राजा के मौन-भंग में सफल वेताल शव सहित ग़ायब हो गया और फिर से पेड़ पर जा बैठा।

- मंजु भार्गवी

प्रथम पाठ जिह्वा पर

क्या तुम्हें कालिदास की कहानी याद है? एक निरक्षर तरुण ने अपने को काली के मंदिर में बंद कर लिया और देवी ने अपने त्रिशूल से उसकी जीभ पर कुछ उत्कीर्ण कर दिया और वह एक महान साहित्यकार बन गया जिसने एक नवरत्न के रूप में विक्रमादित्य के दरबार की शोभा बढ़ाई। नवरात्रि के दूसरे दिन अधिकांश राज्यों में महिषासुर पर दुर्गा की विजय की स्मृति में विजयदशमी मनायी जाती है।

अन्य राज्यों में सरस्वती देवी की पूजा की जाती है। विद्या की देवी होने के कारण बच्चों को इस दिन शिक्षा के लिए दीक्षित किया जाता है। केरलमें इसे विद्यारम्भम कहा जाता है, जिसे आजकल बहुत महत्व दिया गया है। मंदिरों में, दीक्षित किये जाने बच्चों के नाम पंजीकृत किये जाते हैं और पुजारी अथवा कुछ प्रसिद्ध हस्तियाँ गुरु की भूमिका निभाते हैं और सोने की सूई से जीभ पर ओम या हरि श्री या वर्णमाला का प्रथम अक्षर लिखते हैं। अनेक आध्यात्मिक संस्थाएँ इस अनुष्ठान को संपन्न करने के लिए साहित्यिक क्षेत्र के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को आमंत्रित करते हैं। पिछले वर्ष कोडुंगैलूर की एक मस्जिद ने पड़ोसी बच्चों के लिए इस अनुष्ठान को संपन्न कराया। मुल्ला ने स्लेट पर वर्णमाला के प्रथम अक्षरों को लिखवाया।

पुराने जमाने में दादी या चाचा या परिवार के किसी वरिष्ठ सदस्य की गोद में बच्चे को बिठाया जाता था जो फर्श पर फैलाये गये चावल या रेत पर बच्चे की तर्जनी उंगली से प्रथम अक्षर लिखना सिखाता था।

भारत की पौराणिक कथाएँ - १९

आमने-सामने

हजारों वर्ष पहले वाराणसी में ब्रह्मदत्तकुमार नाम का एक युवा राजा राज्य करता था। उसका जीवन बहुत सरल था और वह अपना सारा समय इस प्रयास में लगाता था कि उसकी प्रजा कैसे हमेशा सुखी रहे। वह अपने दरबार के कुछ सच्चे और ईमानदार सामन्तों को यह पता लगाने के लिए राज्य भर में छद्म रूप से घूमने के लिए भेजता था कि अधिकारी गण प्रजा के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। यदि कोई अधिकारी या जमींदार बेईमान या प्रजा के प्रति निर्दय होता तो उसे राजा के पास चेतावनी या दण्ड के लिए भेज दिया जाता।

इतना ही नहीं, राजा प्रजा को आपसी समझदारी और सामंजस्य बनाये रखने के लिए प्रोत्साहन देता था और अपने मतभेदों व झगड़ों को पारस्परिक सद्‌भाव से सुलझा लेने की सलाह देता था। राजा के मंत्री उनकी समस्याओं पर विचार करने तथा उनका समाधान करने के लिए बैठकें आयोजित करते थे। बाराणसी शीघ्र ही शान्ति और समृद्धि का आश्रय-स्थल बन गया।

राजा अपने विश्वासपात्रों से पूछते थे, ''क्या बता सकते हो कि प्रजा को प्रशासन में कोई दोष दिखाई देता है।'' वे पूरी सत्यनिष्ठा से बताते कि प्रजा को राजा से कोई शिकायत नहीं है। लेकिन राजा को सन्तोष नहीं होता था। वे तीर्थयात्री के वेश में गाँवों-बाजारों में घूमते, आम लोगों के साथ घुलमिल कर बातें

करते और उनके विचार जानते-सुनते। लेकिन कभी भी उन्होंने अपने प्रशासन की आलोचना नहीं सुनी।

एक दिन उन्होंने सोचा, "अच्छा, प्रजा की हालत के बारे में मेरी जानकारी राजधानी और इसके निकटस्थ गाँवों तक ही सीमित है। राज्य के दूरस्थ गाँवों में रहनेवालों के बारे में मैं कुछ नहीं जानता। मुझे अपने राज्य के सीमान्त तक जाकर यह पता करना चाहिए।"

तदनुसार वह अपने सबसे अधिक विश्वास पात्र सारथी को लेकर रथ पर सवार हो नगर से बाहर निकल पड़े। बीरान स्थानों से वे तेजी से निकल जाते लेकिन गाँवों से गुजरते समय धीरे-धीरे जाते और लोगों के सम्वाद सुनने के लिए हमेशा कान खड़े रखते। उनकी बातों से उन्हें खुशी और सन्तोष मिलता।

जब शाम ढलने लगी तो उन्होंने महल में लौट जाने का निश्चय किया। वाराणसी और कोसल राज्यों के बीच भूमि का एक ऐसा टुकड़ा था जो दोनों में से किसी राज्य में नहीं पड़ता था। वह दोनों राज्यों के सीमान्त का चिह्न था। ब्रह्मदत्तकुमार के सारथी ने तेजी से चलने के ख्याल से आबादी वाले क्षेत्रों से न जाकर सीमान्त पथ का अनुगमन किया। वह एक ऐसे स्थान पर पहुँचा जहाँ पर मार्ग संकीर्ण था तथा दोनों तरफ खड़ी ढलान थी। जब सारथी उस जोखिम भरे संकीर्ण स्थान पर पहुँचा तो विपरीत दिशा से एक दूसरा रथ उसके सामने आ गया। आमने-सामने के दोनों रथ रुक गये।

यह एक ऐसी स्थिति थी जिसमें किसी एक द्वारा कुछ गज पीछे हटे बिना कोई उस संकीर्ण मार्ग से आगे बढ़ नहीं सकता था।

"मेरे मित्र, कृपया हमें मार्ग दे दीजिए, क्योंकि रथ में पीछे बैठे महानुभाव स्वयं कोसल-महाराज हैं," बाराणसी के राजा के रथ के सामने के सारथी ने कहा।

"आपके राजा को मेरा अभिवादन है मित्र, लेकिन आपको हमें मार्ग देना चाहिए, क्योंकि हमारे स्वामी और कोई नहीं बल्कि वाराणसी के महाराजा हैं।" पहले सारथी ने उत्तर दिया।

"वाराणसी के राजा को मेरा अभिवादन। लेकिन कोई कारण नहीं है कि हमारे राजा की अपेक्षा उन्हें प्राथमिकता दी जाये।" दूसरे सारथी ने बड़े शान्त भाव से कहा।

"आपका विचार सही है। लेकिन वरीयता निश्चित करने के लिए हमें यह देखना चाहिए कि दोनों में से कौन उम्र में बड़े हैं। छोटे को बड़े के प्रति आदर दिखाना चाहिए और उन्हें पहले मार्ग देना चाहिए।" वाराणसी के सारथी ने प्रस्ताव रखा।

कोसल का सारथी सहमत हो गया। लेकिन यह पता चला कि दोनों उम्र में समान हैं। तब दोनों के वंश के पूर्वजों पर विचार किया गया। लेकिन दोनों की वंश-परम्परा भी समान रूप से महान थी। तब दोनों राज्यों के विस्तार पर विचार किया गया। लेकिन दोनों राज्यों का सीमा-विस्तार भी एक जैसा ही था।

क्रमशः इस प्रकार दोनों राजाओं के अनेक क्षेत्रों और विभागों की तुलना की गई और यह पाया गया कि दोनों किसी भी क्षेत्र में एक दूसरे से कम नहीं हैं।

"मेरे मित्र, भौतिक समृद्धियों को छोड़ दें। हम उन दोनों उदार राजाओं के गुणों की तुलना करें। आपके राजा की प्रजा के प्रति नीति क्या है?" वाराणसी के सारथी ने पूछा।

"दुष्टों के प्रति कठोर और जनता के प्रति दयालु। यह हमारे राजा की नीति है — उदार और सरल। कुटिल के लिए संकट, ईमानदार के लिए कोमल। क्या इससे भी अधिक उदार कोई नीति है?" कोसलराज के सारथी ने उत्तर दिया।

"बस इतना ही? अब हमारे महाराज की नीति सुनो :

वे दुष्टों को शान्ति से जीत लेते हैं तथा
धूर्त और कुटिल लोगों को कोमलता से।
सारी प्रजा के प्रति अच्छे हैं तथा करुणा और
सत्य उनकी वृति के दो पहलू हैं।

जैसे ही वाराणसी के सारथी ने अपना कथन समाप्त किया, कोसल के राजा ने रथ से उतर कर वाराणसी के राजा का नतमस्तक होकर अभिवादन किया। वाराणसी के राजा ने भी रथ से नीचे आकर कोसलराज का आलिंगन किया।

ब्रह्मदत्त कुमार बोधिसत्व अर्थात् पूर्वजन्म में बुद्ध की आत्मा थे। कोसलराज के अनुरोध पर ब्रह्मदत्त कुमार ने उन्हें अनेक परामर्श दिये जो एक आदर्श शासक का जीवन जीने में सहायक हों। दोनों युवा राजा घनिष्ठ मित्र बन गये।

बौनी राक्षसी

जंगल के बग़ल में छोटे और बड़े पहाड़ों से भरा एक प्रदेश था। वहाँ गुफ़ाएँ भी थीं। इस प्रदेश से एक कोस दूर मातंग नामक एक गाँव था। मधुकर उसी गाँव की पाठशाला में अध्यापक था। हाल ही में उसकी शादी हुई थी। उसकी पत्नी कोमला अच्छे स्वभाव की थी।

एक दिन कोमला अपनी पड़ोसिन पल्लवी के साथ ग्रामाधिकारी के घर एक पारिवारिक उत्सव में भाग लेने निकली। तब पल्लवी ने कोमला से कहा, ''तुमने तो एक भी गहना पहन नहीं रखा। कानों में कम से कम कर्णफूल लगा लो।'' कहती हुई उसने पेटी में से अपने कर्णफूल निकाले और उसके कानों में लगा दिये।

उत्सव की समाप्ति के बाद जब कोमला घर लौटी तो उसने पाया कि एक कर्णफूल ग़ायब है। कील के निकल जाने की वजह से एक कर्णफूल रास्ते में कहीं गिर गया। कोमला ने पूरी बात अपने पति मधुकर से बतायी और कहा, ''मुझे पल्लवी से कर्णफूल लेना नहीं चाहिए था। पर क्या करूँ वह मानती ही नहीं थी। कुछ भी हो, नया कर्णफूल बनवाकर उसे देना ही पड़ेगा।''

पत्नी की बातें सुनते ही मधुकर एकदम घबरा गया। उसे लगा, मानों एक पल भर के लिए उसकी सांस रुक गयी हो। नई-नई ब्याही पत्नी है। उसे गाली देने या मारने से कोई फ़ायदा नहीं है। नया कर्णफूल बनवाने में कम से कम एक हज़ार रुपये लगेंगे। उसकी समझ में नहीं आया कि अब क्या किया जाए? किससे मदद माँगी जाए? दिन भर वह इसी को लेकर सोचता रहा। रात को जब नींद नहीं आयी, वह घर से निकल पड़ा। खुली चांदनी में वह चलता ही गया। वह खुद नहीं जानता था कि उसे कहाँ जाना है और वह कहाँ जा रहा है।

मधुकर को अचानक लगा कि वह पहाड़ी

- उमा भिंडे -

गुफाओं के पास चला आया। उसने सिर उठाकर देखा कि पहाड़ी गुफ़ा के सामने एक बौनी राक्षसी बैठी हुई है। मधुकर को देखते ही उसने पूछा, ''आधी रात को यहाँ क्यों आये?''

राक्षसी को देखते ही भयभीत मधुकर ने बड़बड़ाना शुरू कर दिया। उसके मुँह से निकल पड़ा, ''कर्णफूल, कर्णफूल''।

चकित होकर राक्षसी ने कहा, ''एक कर्णफूल क्या? मेरे पास तो कर्णफूलों का, तरह-तरह के गहनों का ढेर है। मेरी शादी के लिए मेरी माँ ने इकट्ठा कर रखा है। मेरी माँ उम्मीद लगाये बैठी है कि कोई न कोई सुंदर राक्षस मुझसे विवाह करेगा। राक्षस युवक मेरे गहनों को देखते हैं और मुझे देखने आते हैं। पर मेरे बौनेपन को देखकर लौट जाते हैं। लगता है, इस जन्म में मेरा विवाह होगा ही नहीं। मुझे ये गहने नहीं चाहिए। तुम्हें दे देती हूँ। ले जाओ।'' यह कहती हुई वह गुफ़ा के अंदर गयी और एक गठरी खींचती हुई बाहर आयी। गठरी भर के गहनों को देखकर मधुकर हक्का-बक्का रह गया। उसने पहले तो उन्हें ले जाने से इनकार किया, पर राक्षसी ने ज़ोर दिया तो वह गठरी अपने कंधे पर डाल ली और घर की ओर चलता बना।

जब वह पल्लवी के घर से होता हुआ जाने लगा, तब पशुओं को घास खिलाने बाहर आयी पल्लवी ने उसे देख लिया और आश्चर्य-भरे स्वर में बोली, ''इस आधी रात को कहाँ से आ रहे हो? तुम्हारे कंधे पर यह गठरी कैसी?''

मधुकर ने हाँफते हुए गठरी नीचे रख दी और गहनों में से कर्णफूल निकालकर उसे देते हुए कहा, ''मेरी पत्नी ने तुम्हारा एक कर्णफूल खो दिया। उसके बदले ये दोनों कर्णफूल ले लो।''

पल्लवी ने जब बार-बार पूछा कि इतने गहने तुम्हें कहाँ से मिल गये तो उसे लाचार होकर बौनी राक्षसी के बारे में बताना ही पड़ा। फिर वह घर चला गया।

पति की पूरी बातें सुनने के बाद कोमला गहनों को देखती ही रह गयी। फिर उसने अपने को संभालते हुए कहा, ''उस मायावी बौनी राक्षसी के गहनों की हमें क्या ज़रूरत है? अगर चोरों को इन गहनों के बारे में मालूम हो गया तो हमारी जान की ख़ैर नहीं। हम कहीं के नहीं रहेंगे।''

गहनों के होने से पति-पत्नी दोनों रात भर सो नहीं पाये। पड़ोसिन पल्लवी ने पति को जगाकर यह बात बता दी और कहा, ''तुरंत हमारी बैलगाड़ी तैयार करो। हमें उस बौनी राक्षसी के पास जाना है। जिस बौनी राक्षसी ने गठरी भर के गहने दान में दिये, उसके पास गाड़ी भर के गहने अवश्य होंगे। हमें उन्हें ले आना है।'' विश्वास-भरे स्वर में उसने कहा।

पति-पत्नी दोनों जब पहाड़ी गुफ़ा के पास पहुँचे तब बौनी राक्षसी गुफ़ा के बाहर ही चिंतित बैठी हुई थी। जब उसने जान लिया कि पल्लवी यहाँ क्यों आयी है तब उसने कहा, ''तुम्हारी अक्लमंदी की ऐसी-तैसी, कोई अपरिचित पूरे गहने ले गया। माँ को जब यह मालूम हुआ तो उसने मुझे खूब फटकारा। वह क्रोध से जली जा रही है। गुफ़ा के अंदर ही है। तुम दोनों को देख लेगी तो तुम्हें चीर देगी, टुकड़े-टुकड़े कर देगी। माँ ने कह दिया कि जब तक मैं वे गहने वापस नहीं ला दूँगी तब तक वह मुझे गुफ़ा के अंदर आने नहीं देगी।''

पल्लवी को जब साफ़-साफ़ मालूम हो गया कि राक्षसी के पास अब गहने नहीं हैं तो उसने कहा, ''सुनो, वे सब गहने सुरक्षित हैं। वे अब हमारे पड़ोसी मधुकर के पास हैं। मेरे साथ आओ और अपने गहने ले जाओ।'' उसने यों सलाह दी।

इस पर राक्षसी ने कहा, ''दिन में यात्रा करने से मैं डरती हूँ। मानवों के बीच में आने से मुझे बहुत भय लगता है।''

पल्लवी ने क्षण भर सोचने के बाद कहा, ''मैं अपने साथ एक बोरा ले आयी हूँ। उसमें मैं तुम्हें डाल देती हूँ और बंद कर देती हूँ। उसमें तुम आराम से सो जाना। गाड़ी में तुम्हें ले जाऊँगी और अपनी पशुशाला में सुरक्षित रखूँगी और बाहर से ताला भी लगा दूँगी। सबेरे-सबेरे तुम्हें बोरे से निकालूँगी। फिर तुम मधुकर के घर चले जाना और उसे व उसके पति को तरह-तरह से सताना। अपने नाखूनों से, दाँतों से उन दोनों को काटना। अपने गहनों को ले जाओगी तो तुम्हारी माँ बहुत खुश होगी।'' बौनी राक्षसी ने उसकी बात मान ली।

इधर भय के मारे मधुकर की हालत बहुत ही बुरी हो गयी। उसे बुखार भी हो गया। कोमला ने

उसे दिलासा देते हुए कहा, ''आप इतना डरते क्यों हो हैं? आपने तो राक्षसी को धोखा नहीं दिया, कोई छल-कपट नहीं किया। पर हाँ, मानती हूँ कि दूसरों का धन विषैले सर्प के समान है। मैं अकेली उस गठरी को ढोकर गुफ़ा के पास नहीं ले जा सकती। धूप कम हो जाने के बाद मैं खुद वहाँ चली जाऊँगी और उस राक्षसी से अपने गहने ले जाने के लिए कह दूँगी।''

मधुकर ने ''हाँ'' कह दिया। शामको कोमला निर्भय होकर गुफ़ा के पास गयी। उस समय भयंकर आकार की एक राक्षसी गुफ़ा के सामने की शिला पर बैठी हुई थी और अपने आप बड़बड़ा रही थी, ''मेरी प्यारी बेटी, मेरी नादान बेटी, तुम कहाँ चली गयी? मैं थोड़ा-सा नाराज़ क्या हो गयी कि तुम मुझसे रूठ कर कहीं चली गयी। तुम्हारे बिना ये पर्वत, ये गुफ़ाएँ रेगिस्तान लगती हैं।''

कोमला चुपचाप राक्षसी के पास गयी और ''माँ'' कहकर प्रणाम किया। फिर पूरा विषय सविस्तार सुनाया और बिनती की कि वह अपने गहने उसके घर आकर वापस ले जाए।

राक्षसी ने कोमला को नख से लेकर शिख तक एक बार ग़ौर से देखा और कहा, ''उन निगोड़े गहनों के कारण ही मैंने अपनी प्यारी बेटी को दुत्कारा। वह बेचारी नाराज़ होकर कहीं चली गयी। मालूम नहीं, वह कितने कष्ट झेलती होगी। मुझे उन गहनों की कोई ज़रूरत नहीं।'' वह रोती हुई बोलती जाने लगी।

राक्षसी की बातों से कोमला क्रोधित हो उठी। उसने तैश में आकर ऊँचे स्वर में कह दिया,

"मैं तुमसे एक बार और स्पष्ट कह देती हूँ, सुनो। हमें तुम्हारी बेटी के गहने नहीं चाहिए। हम मेहनत की कमाई ही पसंद करते हैं। चूँकि तुम्हारी बेटी बौनी है, इसलिए राक्षसों के बीच में रहना उसके लिए संभव नहीं है। मानवों के बीच में भी वह नहीं रह सकती। इसलिए वह किसी दिन तुम्हारे पास ज़रूर लौट आयेगी। पहले मेरे साथ आकर अपने गहने ले लो।"

राक्षसी नरम पड़ गयी। अनिच्छा से ही सही, वह कोमला के साथ निकल पड़ी। गाँव पहुँचते-पहुँचते आधी रात हो गयी। कोमला की सौंपी गहनों की गठरी अपने कंधे पर लादे जब राक्षसी जाने लगी तब बोरे में बंद बौनी राक्षसी चिल्लाने लगी, "प्यास, भूख के मारे मरी जा रही हूँ। मुझे बाहर निकालो। कमरे के दरवाज़े खोल दो।"

राक्षसी ने अपनी बेटी का कंठस्वर पहचान लिया। वह खुशी के मारे चिल्लाने लगी। "बेटी, मैं आ गयी," कहती हुई तेज़ी से वह पशुशाला के पास गयी। दरवाज़े को लात मारकर गिरा दिया और बोरे में बंद बेटी को बाहर निकाला। उसने बेटी से पूछा, "किसने तुम्हें इतना सताया? वे पापी कौन हैं?"

बौनी राक्षसी ने पास ही के पल्लवी का घर दिखाया। बस, राक्षसी हुँकार भरती हुई आगे बढ़ी और लात मारकर दरवाज़े को गिराकर घर के अंदर क़दम रखा। "अरे दुष्टो, तुम लोग मुझसे बच नहीं सकते।" यों गरजती हुई उसने चारों तरफ़ देखा। पहले उसने पूरे घर का ध्वंस किया, पल्लवी को अपने नाखूनों से चीरा, दाँतों से काटा और फिर बाहर आकर अपनी बेटी से कहने लगी, "इन दुष्ट मानवों को हमारे निवास का पता चल गया है। चलो, कहीं और रहेंगे।" यह कहती हुई और लंबे-लंबे डग भरती हुई आगे बढ़ने लगी। पीछे से कोमला गहनों की गठरी ले जाने के लिए चिल्लाती जा रही थी, पर राक्षसी पीछे मुड़े बिना तेज़ी से चली गयी।

पल्लवी इस घोर अपमान को सह नहीं पायी। लोग उसे देखें, इसके पहले ही उस रात ही को पति को लेकर गाँव छोड़कर चली गयी।

आस्तिक-नास्तिक

राम और भरत आमने-सामने के घरों में रहते थे। दोनों धनाढ्य थे। बचपन से ही वे जिगरी दोस्त थे। पर दोनों के सोचने की पद्धति अलग- अलग थी।

राम अगर कहता कि वर्षा होती है भगवान की कृपा से तो भरत कहता कि इसका यह मतलब है कि भगवान की कृपा से ही अनावृष्टि होती है।

''प्रशांत प्रवाहित होनेवाली नदियों, प्रपातों सबके पीछे भगवान की ही कृपा है।'' राम कहता।

''तो फिर भूकंपों व आँधियों के पीछे भी भगवान की ही कृपा होगी।'' भरत कहता था।

इस पर राम झल्ला उठता था और कहता, ''तुम नास्तिक हो।'' भरत हँसकर चुप रह जाता था।

वे दोनों दोस्त बूढ़े हो गये। उनकी मृत्यु के क्षण भी निकट आ गये। राम को स्वर्ग ले जाने के लिए देवदूत आये। राम ने उन्हें प्रणाम करते हुए कहा, ''देवदूतो, मेरा जिगरी दोस्त भरत सामनेवाले घर में है। वह नास्तिक है। वह भी आखिरी साँस ले रहा है। उसे भी मेरे साथ स्वर्ग ले चलिये। भगवान को वहाँ प्रत्यक्ष देखने पर ही उसमें विश्वास होगा।'' देवदूतों ने वैसा ही किया। रत्न सिंहासन पर भगवान को देखकर भरत आश्चर्य में डूब गया। इतने में एक गंभीर स्वर सुनायी पड़ा, ''ऐ नास्तिक, तुम्हारे संशय की निवृत्ति हो गयी?''

भरत ने कहा, ''हाँ, हाँ, परंतु मानवलोक केवल निर्गुण है, साक्षीभूत है।'' यों कहते हुए उसने हाथ जोड़कर प्रणाम किया।

- रमण शास्त्री

समाचार में बच्चे

उसने कोला के विरुद्ध चेतावनी दी

एस. सारिका ट्रिवेन्ड्रम में पंगोड़ स्थित केन्द्रीय विद्यालय में ११वीं कक्षा की छात्रा है। तीन वर्ष पूर्व उसने वार्षिक अन्तरविद्यालय विज्ञान प्रदर्शनी में भाग लिया और उसके प्रोजेक्ट का शीर्षक था - ''पेप्सी, स्वास्थ्य के लिए खतरा।'' इस विषय की ओर पिछले कुछ दिनों में बहुतों का ध्यान गया है। सारिका ने अपने प्रोजेक्ट में तथ्य और आंकड़ों के साथ यह रहस्योद्घाटन किया है कि कुछ लोकप्रिय बोतल-पेयों का मानव दाँतों पर बहुत खराब असर पड़ता है। उसके कुछ अन्य निष्कर्ष इस प्रकार हैं : कोका कोला का एक गिलास आंतों को झुलसा देने के लिए काफी है; पाँच सौ एम.एल. कोला की बोतल में ३८ एम.जी. कैफिन होती है; स्त्री यदि ३०० एम.जी. कैफिन ले ले तो वह बांझ हो सकती है; पेप्सी की एक बोतल में टॉफी के पूरे पैकेट के बराबर चीनी की मात्रा होती है। वह रहस्योद्घाटन करती है कि हॉलीवुड स्टार माइकेल जे. फॉक्स, जो डाइट पेप्सी का ब्रैण्ड अम्बैसेडर था, पार्किन्सन रोग का शिकार हो गया। सारिका के प्रोजेक्ट को चेन्नई में इस वर्ष आयोजित दक्षिण क्षेत्रीय विज्ञान प्रदर्शनी में प्रथम स्थान दिया गया।

तरुण पृष्ठ गायक

सुभिक्षा रंगाराजन ने केवल ११ वर्ष की आयु में ही पहली बार फिल्म के लिए गाया। यह तीन साल पहले की बात है। जिन लोगों ने लगान, पुकार, तथा डम, डम, डम फिल्में देखी हैं, वे उसकी आवाज तथा गीतों से परिचित होंगे। उसने इस वर्ष के आरम्भ में अमेरिका के कोलोराडो में आयोजित यंग म्यूजिक ऐम्बैसेडर्स कार्यक्रम में भारत का प्रतिनिधित्व किया। उसके तुरंत बाद उसने अपना पहला अलबम निकाला। हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटक दोनों संगीतों में समान रूप से प्रवीण सुभिक्षा इलयाराजा, कार्तिक राजा तथा युवनशंकर राजा जैसे संगीतकारों के साथ काम कर चुकी है। वह अभी ग्यारहवीं कक्षा में कॉमर्स का अध्ययन कर रही है।

पत्थर पिघल गया

बबिता कुमारी
हरयाणा

के.वी. नन्दन
चेन्नई

गरमी के दिन थे। ज्येष्ठ की तपती दोपहरी का समय था। आकाश से सूरज मानो क्रोध में अग्नि की वर्षा कर रहा हो। धरती गर्म तवे की तरह तप रही थी। साँय-साँय करती लूएँ आग की लपटों की भाँति तन-बदन को झुलसा रही थीं। सर्वत्र सन्नाटा था। सड़क, गली और मैदान में कहीं एक आदमी भी दिखाई नहीं पड़ रहा था। सब लोग दरवाजे बंद करके अपने-अपने घरों में दुबके बैठे थे।

एक बुढ़िया का खपरैल का घर मोहल्ले के कोने में था। वह दरवाजा बंद कर अपने घर में बैठी चरखा कात रही थी और गुनगुना रही थी - ''घूम-घूमेरु चरखा मेरा काते लंबा सूत।''

बुढ़िया के पास उसका दस वर्षीय पोता भी बैठा था। वह तरह-तरह की बातें करके अपनी दादी को प्रसन्न कर रहा था और दादी माँ भी चरखे के गीत के धुन से उसका दिल बहला रही थी। सहसा किसी ने दरवाजा खटखटाया। बालक ने जल्दी से उठकर दरवाजा खोला। दरवाजा खुलते ही बुढ़िया की दृष्टि चार युवकों पर पड़ी। उनमें से एक बोला, ''दादी माँ, बाहर बड़ी गरमी है। सब कुछ तप रहा है। आसपास कोई पेड़ भी नहीं, जहाँ विश्राम किया जा सके। सख्त गरमी के कारण प्यास से ओंठ भी सूख गए हैं। आज्ञा हो तो थोड़ी देर यहाँ बैठकर सुस्ता लें। फिर चले जाएँगे।''

उस सुंदर तथा स्वस्थ युवक को देखकर बुढ़िया को अपने बेटे की याद आ गई। उसे लगा जैसे यही उसका भोलू (भोला नाथ) बेटा है। उसके साथ खड़े तीन युवक मानो भोलू के मित्र हैं। बुढ़िया के बेटे की मृत्यु गरमी में पिछले साल ही लू लगने से हुई थी। भोलू सुबह ही घर से निकल कर दूर के हाट में अनाज बेचने गया था। जब शाम को लौटा तो उसका शरीर मानो जलने लगा। और जब तक वह दवा दारू करती कि देखते देखते उसके प्राण-पखेरु उड़ गये। इसलिए उसके मन में माँ की ममता जाग उठी। बुढ़िया बोली, ''बेटा इसे अपना ही घर समझो। जब तक चाहो विश्राम करो।''

उन्हें बैठाकर बुढ़िया उनके लिए शरबत बनाने लगी। शरबत बनाते हुए मन-ही-मन सोच रही थी - ''बेचारे प्यासे हैं। ठंढा शरबत पिलाकर इनकी प्यास बुझाऊँगी।''

इधर बुढ़िया के मन में आगन्तुकों के लिए स्नेह उमड़ रहा था। उसे लग रहा था कि ये अपरिचित अतिथि नहीं, बल्कि भोलू ही अपने मित्रों के साथ
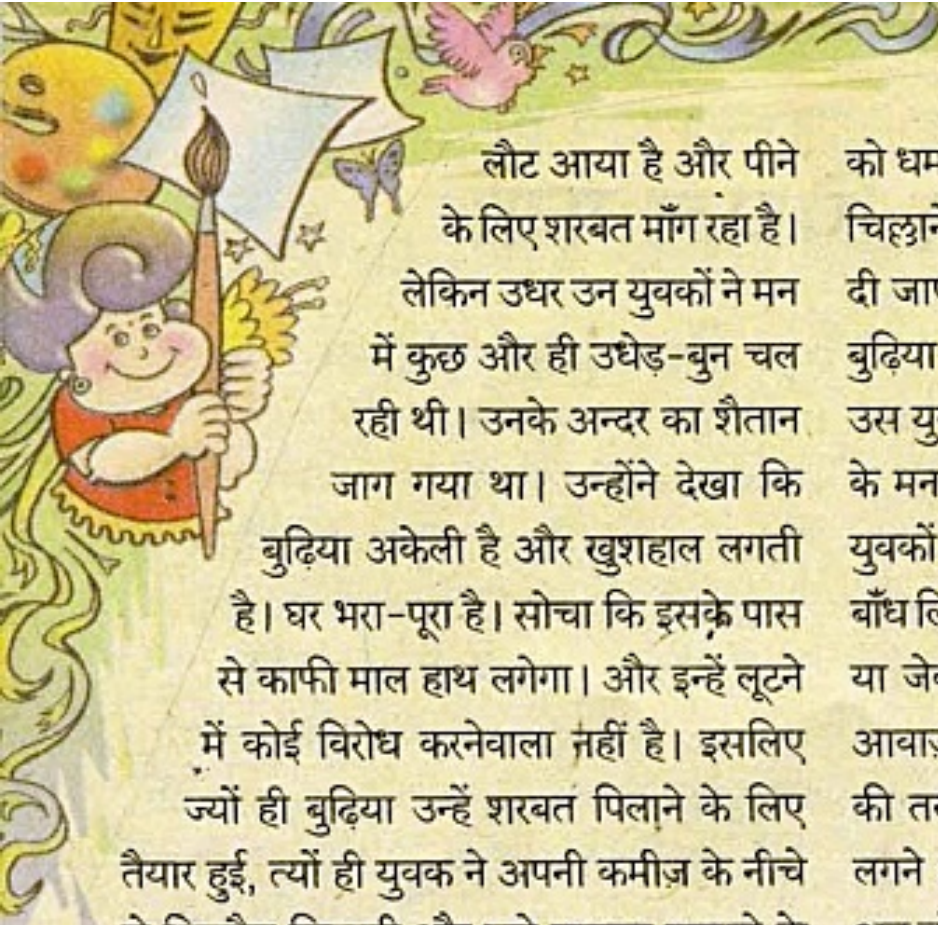
लौट आया है और पीने के लिए शरबत माँग रहा है। लेकिन उधर उन युवकों ने मन में कुछ और ही उधेड़-बुन चल रही थी। उनके अन्दर का शैतान जाग गया था। उन्होंने देखा कि बुढ़िया अकेली है और खुशहाल लगती है। घर भरा-पूरा है। सोचा कि इसके पास से काफी माल हाथ लगेगा। और इन्हें लूटने में कोई विरोध करनेवाला नहीं है। इसलिए ज्यों ही बुढ़िया उन्हें शरबत पिलाने के लिए तैयार हुई, त्यों ही युवक ने अपनी कमीज़ के नीचे से पिस्तौल निकाली और उसे तानकर दरवाजे के बीच खड़ा हो गया। उसने बुढ़िया और उसके पोते को धमकाते हुए कहा, ''देखो, यदि तुमने चीखने-चिल्लाने या भागने का प्रयत्न किया तो, गोली मार दी जाएगी। जान प्यारी है, तो यहीं बैठ जाओ।'' बुढ़िया और उसका पोता चुपचाप बैठ गए। बालक उस युवक की धमकी से सहम सा गया पर बुढ़िया के मन में लेश मात्र भी भय नहीं था। शेष तीनों युवकों ने जल्दी-जल्दी घर का सारा कीमती सामान बाँध लिया और संदूक इत्यादि खोलकर जो भी नकदी या जेवर मिला उसे बटोरने लगे। तभी बुढ़िया ने आवाज़ दी, ''मेरे बेटे! मेरा एक बेटा था तुम्हीं लोगों की तरह सुन्दर और जवान। वह पिछले साल लू लगने से इन्हीं दिनों भगवान का प्यारा हो गया। अब छोटे बच्चे के अलावा मेरा कोई नहीं है। इसलिए मैं तुम्हें पहले ही कह चुकी हूँ कि यह तुम्हारा ही घर

है। इसमें जो कुछ भी है वह तुम्हारा ही है, जो चाहो ले जाना। मैं कुछ नहीं कहूँगी। पर मैंने तुम्हारे लिए बड़े प्यार से जो शरबत बनाया है, उसे कौन पीएगा।"

बुढ़िया माँ की करुणा और ममता भरी बात सुनते ही उन चारों युवकों की आँखें नम हो गईं। लगता है, उनकी आत्मा अभी पूरी तरह मरी नहीं थी और अन्दर के शैतान से संघर्ष कर रही थी। बुढ़िया का ममत्व पाकर आत्मा उनकी बलिष्ठ हो गई और मन का शैतान हार गया। उनके अन्दर के देवत्व की जीत हो गई। युवक के हाथ से पिस्तौल गिर गई और उसकी आँखों के आगे अपनी बूढ़ी माँ का चित्र घूम गया।

अगले ही क्षण चारों युवक बुढ़िया के चरणों में नतमस्तक थे। वे चारों बुढ़िया के चरणों में रोने लगे। उन सबने कहा, "माँ, आज से हम सब तुम्हारे चार बेटे हैं।

अपने बेटों की गलती माफ कर दो। बुढ़िया ने सबको अपनी बाँहों में भर लिया। उसकी आँखों में खुशी के आँसू छलक आये।

बेटा : डैडी, आप मिस्र कब गये?

डैडी : नहीं बेटे, मैं उस देश में कभी नहीं गया।

बेटा : तब, आप मम्मी को कहाँ से लाये?

- सी. श्रीजा (१३), तूतीकोरिन

सीख

बी. स्वामीनाथन
चेन्नई

"अरे, उठो उठो, स्कूल का समय हो गया... मैं कहती हूँ जल्दी उठो।"

माँ के उपदेश से ज्यादा कड़वी कोई और चीज़ मनी के लिए नहीं हो सकती थी। उसे स्कूल जाना कभी पसन्द नहीं था। खास कर उस दिन जिस दिन गणित के अध्यापक नलशिवम का घंटा होता।

"मुझे पढ़ने के लिए लोग क्यों तंग करते रहते हैं? जैसे ही मैं खेलने के लिए जाना चाहता हूँ, माँ मुझे भला-बुरा कहने लगती है। यह पिताजी के रोने-धोने से कहीं अच्छा है। वे चाहते हैं कि मैं खूब पढ़ूँ, खूब पढ़ूँ और एक बड़ा अफसर बनूँ। मैं इन सबसे परेशान हूँ।" मनी की यह विचारधारा थी।

उसके पिता कुप्पूस्वामी धोबी थे। उन्हें शिक्षा का महत्व मालूम था। उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य अपने बेटे को अफसर बनाना था। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखकर वे रात-दिन मेहनत करते थे। लेकिन मनी को पढ़ने-लिखने से नफरत थी। उसके पिता कुप्पूस्वामी हर रोज अपने बेटे का रंग-ढंग देखकर पछताते।

स्कूल के प्रति मनी का विकर्षण बढ़ता गया। अध्यापकों द्वारा दी गई सजा और साथियों के उपहास से उसका रवैया और बदतर होता चला गया। स्कूल के प्रति उसकी घृणा का भाव पराकाष्ठा पर तब पहुँच गया जब उसने एक दिन अंतिम निश्चय के रूप में यह कह दिया, "पिताजी, मैं कल से स्कूल नहीं जाऊँगा। मैं आपके साथ काम करूँगा।"

कुप्पूस्वामी कुछ क्षणों के लिए खामोश हो गया। फिर बोला, "ठीक है। कल मेरे साथ काम पर चल चलना।" मनी को इस बात आश्चर्य हुआ कि उसके पिता इतनी आसानी से मान गये। उसे डर था कि उसकी जम कर पिटाई होगी या कम

नेहा अडिगा
बंगलोर

से कम उसे बुरी तरह डाँटा-फटकारा जायेगा।

मनी पूरी आजादी के इतमीनान से अपने पिता का गधा खींचता हुआ आगे बढ़ रहा था। ''आखिर आजादी मिल गई, स्कूल के नीरस जीवन से।'' उसने सोचा।

काम करना ज्यादा मुश्किल नहीं होगा। आखिर काम ही क्या है - पानी में कपड़ों को खंगाल दो, सुखा दो, तह लगा दो और गधे की पीठ पर लाद दो। चुटकी में सारा काम हो जायेगा।

यथार्थ, आह ! कुछ और था ! कपड़ों से मैल निकालने में कमर तोड़नी पड़ती है। उन्हें सुखाना अपने आप में एक कमाल है। उस पर गधे की सनक ! मनी को जिन्दगी के लिए कठिन परिश्रम का भारी मूल्य चुकाना पड़ रहा था। और उसके पिता तो वर्षों से इसे कर रहे थे ! मनी ने अनुभव किया कि स्कूल की दिनचर्या आसान और सरल थी।

''पिताजी, मैं स्कूल वापस जाऊँगा। मैं ठीक से पढ़ूँगा और जैसी कि आपकी इच्छा है, मैं अफसर बनूँगा।'' मनी ने पिता से कहा। अपने बेटे के मुख से यह सुनकर कुप्पूस्वामी की आँखों में खुशी के आँसू छलक पड़े। उसने अपने बेटे को छाती से लगा लिया और कहा, ''तुम कर सकते हो, आखिर तुम मेरे बेटे हो !''

''लेकिन पिताजी, जब मैंने स्कूल जाने से इनकार कर दिया था, तब आपको मेरी पिटाई करनी चाहिए थी और स्कूल भेज देना चाहिए था। आपने ऐसा क्यों नहीं किया?'' मनी ने जानना चाहा।

''मैं वह कर सकता था। लेकिन तब स्कूल के प्रति तुम्हारी घृणा और बढ़ जाती। पढ़ाई तुम्हारे लिए और मुश्किल हो जाती। लेकिन अब तुमने स्वयं यह निर्णय लिया है, उस सीख से जो तुमने अपने अनुभव से सीखा है। तुम्हारा यह संकल्प स्थायी होगा। मुझे पूरा विश्वास है कि तुम एक अफसर बनोगे।'' कुप्पूस्वामी ने कहा।

मनी का संकल्प बहुत स्पष्ट था।

राजकुमारी और उसकी सुनहली चिड़िया

कृतिका सुगवनम
चेन्नई

बहुत पहले सुखवर्मा नाम का एक राजा था। उसकी बेटी का नाम था राजकुमारी सुहासिनी। राज्य में सभी सुखी थे। सुहासिनी को देखकर सभी प्रसन्न हो जाते। वह प्रसन्न होकर झीलों, सरोवरों और नदी तटों पर घूमती रहती और प्राकृतिक सौंदर्य का आनन्द लेती। वह हमेशा प्रसन्न रहती थी, इसलिए उसे कभी मित्र की आवश्यकता नहीं होती थी।

राजा सुखवर्मा प्रतिदिन दरबार में बैठकर प्रजा की समस्याओं का समाधान करते। बहुत लोग उन्हें उपहार भेजते या दूतों के द्वारा उन्हें सन्देश भेजते। एक दिन पड़ोसी राज्य के राजा प्रताप ने भी एक सन्देश भेजा।

राजा प्रताप उदार हृदय का था और सुखवर्मा को खुश करना चाहता था। वह उसे ऐसा उपहार देना चाहता था जैसा उसे कभी नहीं मिला हो। इसलिए उसने सुखवर्मा को लिखा कि वे उपहार में क्या लेना पसन्द करेंगे। राजा ने उत्तर में तुरंत प्रताप को लिखा कि जो उपहार उनकी राजकुमारी को प्रसन्न करे वही वे लेना चाहेंगे।

राजा प्रताप को यह जानकर खुशी हुई। उसने तुरंत अनेक लोगों को गुप्त रूप से यह जानने के लिए भेजा कि सुहासिनी को किस चीज से प्रसन्नता मिलेगी। उसे शीघ्र मालूम हो गया कि राजकुमारी को पशु-पक्षी बहुत प्रिय हैं। राजा प्रताप ने बड़ी मुश्किल से राजकुमारी के लिए एक ऐसा उपहार भेजा जैसा उसे पहले कभी नहीं मिला था। उस

पुनीत जे. हीरेमत
बंगलोर

उपहार को देखने के लिए बहुत लोगों की भीड़ लग गई। एक सुनहले पिंजड़े में एक सुन्दर सुनहली चिड़िया को देखकर सभी चकित थे। राजकुमारी आश्चर्य से उस चिड़िया को देख रही थी।

दासी चिड़िया को राजकुमारी के क्रीड़ांगण में ले गई और पिंजड़े को एक कोने में टांग दिया। जब सुहासिनी चिड़िया के साथ खेलना चाहती तो चिड़िया को पिंजड़े से निकाल दिया जाता और खेलने के बाद उसे पिंजड़े में पुनः वापस बन्द कर दिया जाता। शीघ्र ही दोनों अच्छे मित्र बन गये। राजकुमारी के हाथ के संकेत से चिड़िया पिंजड़े में चली जाती और दूसरे दिन पुनः उसके साथ खेलने बाहर आ जाती।

लेकिन जल्दी ही चिड़िया की खेल में रुचि खत्म हो गई। सुहासिनी ने चिड़िया में इस परिवर्तन के बारे में दासी को बताया। दासी ने कहा कि सब लोगों की तरह चिड़िया भी बाहर जाना पसन्द करती है। सभी चिड़ियाँ उड़ना चाहती हैं, पिंजड़ें में बन्द रहना नहीं चाहतीं।

इसलिए सुहासिनी चिड़िया को बाहर खुले मैदान में ले गई। चिड़िया बाहरी जगत को देखकर बहुत उत्साहित हो गई और राजकुमारी के साथ फिर पूर्ववत खेलने लगी। सुहासिनी पुनः प्रसन्न रहने लगी। लेकिन शीघ्र ही चिड़िया फिर उदास हो गई। दासी ने राजकुमारी को बताया कि चिड़िया उड़ना चाहती है न कि हमेशा पिंजड़े में बन्द रहना। लेकिन सुहासिनी को डर था कि चिड़िया उड़कर कहीं और चली जायेगी और लौटकर नहीं आयेगी। इसलिए उसने दासी की बात पर ध्यान नहीं दिया।

एक दिन जब सुहासिनी अपने क्रीड़ांगण

में खेलने गई तब वहाँ चिड़िया मरी पड़ी थी। उस दिन से सुहासिनी की प्रसन्नता खत्म हो गई। शीघ्र ही सारे राज्य की मुस्कुराहट चली गई। राजा ने वैद्य को बुला भेजा और उससे पूछा कि क्या चिड़िया में पुनः जीवन आ सकता है। वैद्य ने कहा कि यह सम्भव नहीं है, लेकिन ऐसी ही कोई अन्य चिड़िया राजकुमारी की मुस्कान पुनः वापस ला सकती है।

राजा ने ऐसे पक्षी की दूर-दूर के राज्यों में खोज की, लेकिन कहीं नहीं मिला। इसलिए उसने राजा प्रताप को यह सन्देश भेजा। शीघ्र ही राजा सुखवर्मा को एक और सुनहले पिंजड़े में एक सुनहली चिड़िया भेज दी गई।

> ***अध्यापिका :*** राजू, हिमालय कहाँ है?
>
> ***राजू :*** मुझे नहीं मालूम, मैम।
>
> ***अध्यापिका :*** बेंच पर खड़े हो जाओ।
>
> ***राजू :*** मैं अभी भी नहीं देख सकता, मैम।
>
> ***- कौशल्या एस. (११), बंगलोर***

जब राजकुमारी ने चिड़िया को देखा तो उसके आनन्द का ठिकाना न रहा। उसकी सुनहली चिड़िया जीवित थी और अपने पंखों को फड़फड़ा रही थी। राजा ने उससे कहा कि दरबार के जादूगर ने राजकुमारी के लिए चिड़िया को नयी जिन्दगी दी है।

लेकिन राजकुमारी सुहासिनी ने अब समझ लिया कि चिड़िया के लिए आजादी जरूरी है और वह पिंजड़ा लेकर सबसे निकट के जंगल में गई और पक्षी को मुक्त कर दिया। उसने सुनहले पिंजड़े को जंगल में एक वृक्ष पर लटका दिया और सदा के लिए वहीं छोड़ दिया।

चन्दामामा प्रस्तुत करता है

- मनोज दास

Sponsored by ORISSA TOURISM

Orissa
The Soul of India

Orissa : miles & miles of creativity

The first Creator was God. Man comes next. Creativity is not just the bridesmaid of the elite and the well-read. It is a religion for the masses, in one coastal corner of India called Orissa. Truly does Orissa revel in the glory of her exquisite handicrafts. The artistry of the eye and the deftness of fingers culminate in exquisite filigree work, which is undoubtedly, the pride of Utkal, now Orissa.

The legacy of creativity, handed down from generation to generation is not only seen in the colourful canopies and beach umbrellas, but also in Orissa's folk Painting. Hornwork reaches it's crowning climax in the long-legged stork. Brass and bell metal-works are the be-all and end-all of creative imagination. That is not the end of it all. In short, Orissa is a poem which one and all must read time after time.

For more information contact: Director, Tourism; Paryatan Bhavan; Bhubaneswar-751014, Orissa, India Tel: (0674) 2432177, Fax: (0674) 2430887, e.mail:ortour@sancharnet.in, website:www.orissa-tourism.com Tourist Offices at; **Chennai:** Tamilnadu Tourism Complex, Ground Floor, Near Kalaivanar Arangam Wallajah Road, Chennai - 600002, Ph: (044) 25360891, **Kolkata:** Utkal Bhawan 55, Lenin Sarani, Pin-700013 Tel: (033) 22443653, **New Delhi:** Utkalika, B/4 Baba Kharak Singh Marg, Pin - 110001, Telefax (011) 23364580

चिलिका झील

कुछ ऐसे क्षण आते हैं जब आकाश में रंग-बिरंगे बिन्दु बिखरे होते हैं और नीचे बहती जलराशि उसे प्रतिबिंबित करती है। कुछ क्षण के लिए आप यह निश्चित नहीं कर पाते कि यह दृश्य आप यथार्थ में देख रहे हैं अथवा यह स्वप्न है। धीरे-धीरे आप इस दृश्य के साथ एकात्म हो जाते हैं, और यदि आप ऐसा कर सकें, तो आप स्वतंत्रता के आनन्द का अनुभव कर सकते हैं। आनन्द अनन्तता का, आनन्द जोखिम का और आस्था का, क्योंकि आप इन गुणों के प्रतीकों के स्वागतार्थ वहाँ विद्यमान हैं। यहाँ आनेवाले पक्षी हमारे पड़ोसी बांग्लादेश और नेपाल से ही नहीं बल्कि सुदूर और बहुत दूर के स्थानों जैसे ऑस्ट्रेलिया, साइबेरिया और अन्य कई देशों से आते हैं। साल दर साल वे इस झील की सैर को आते हैं, यह झील उन्हें इतनी प्रिय है। सर्दियाँ शुरू होने के कुछ पहले ही वे अपनी

हजारों मील की रोमांचक उड़ान आरंभ करते हुए गाँवों, कस्बों, जंगलों और पर्वतों को पार करते हैं। अपनी उन्मुक्त उड़ान का प्रयोग वे अनन्तता में करते हैं। निःसंदेह वे यहाँ अपनी आस्था के साथ आते हैं, आस्था जो उनमें इस प्राचीन झील के प्रति है। झील जो उनका पूरी गर्मजोशी से स्वागत करती है।

यदि बीच में उनका यह विश्वास कभी टूट भी जाता है तो वे पुनः अपनी इस आस्था को संजो लेते हैं और मनुष्यों से भी यह आशा करते हैं कि वे उनकी इस आशावादिता से सीख लें।

यह होता है भारत की विशालतम झील चिलिका के गिर्द। यह झील उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर से लगभग सौ कि.मी. की दूरी पर स्थित है। लगभग बारह सौ कि.मी. के आयताकार क्षेत्र को घेरे इस प्राकृतिक चमत्कार के और भी कई रूप हैं। हमने अभी उसके एक ही पहलू का जिक्र किया है, किन्तु

तूफानी मौसम में झील के पानी का विस्तृत फैलाव एक भयप्रद दृश्य प्रस्तुत कर सकता है। इसकी उग्र लहरें इतनी ऊँची उछालें भरती हैं कि पहाड़ और इसके असंख्य द्वीपों की बस्तियाँ उन लहरों में मृग-मरीचिका की भांति कभी दिखाई देती हैं और कभी अदृश्य हो जाती हैं। चाँदनी रात में यह परी-कथाओं के लोक जैसा प्रतीत होता है। एक अलौकिक रंग से सुशोभित इसकी नीली सतह पर लघु उर्मियाँ सुनहरी अग्नि-लौ के समान दिखाई देती हैं।

सामान्यतः ऐसा कहा जाता है कि इसका पानी खारा है। लेकिन इस पर सहसा विश्वास नहीं होता। वस्तुतः कुछ ऐसी ऋतुएँ हैं जब दया, भार्गवी, लूना एवं गंधवती आदि नदियाँ अपनी अगाध जलराशि इसमें प्रवाहित करती हैं और उनका यह शक्तिशाली प्रवाह और तेज गति झील के खारे पानी को पीछे की ओर धकेल देती है। यद्यपि वह पूरी तरह समुद्र में नहीं पहुँच पाता तथापि किसी भी

नीला चमत्कार

एक हजार एक सौ वर्ग कि.मी. में विस्तृत चिलिका भारत की सबसे बड़ी खारे पानी की अन्तःस्थलीय झील है। छितराये हुए द्वीपों के साथ यह झील जलीय जीवजन्तु से भरपूर है तथा पक्षी अवलोकियों के लिए आनन्द का सागर है। इसकी मेहराबदार आकृति के चारों ओर पहाड़ियाँ हैं तथा ऊपर मंडराते बादलों तथा खिसकते सूरज के साथ इसके जल का रंग बदलता रहता है। चिलिका पुरी, खुरदा तथा गंजाम तक फैले हुए तटीय जिला के हृदय-स्थल में बसा हुआ है। बंगाल की खाड़ी एक संकीर्ण मुहानेसे इसके अन्दर बहती है जिसके फलस्वरूप एक खारे जल का विशाल समुद्र ताल बन गया है।

झील के शान्त जल में विविध प्रकार के उद्भिज और जीवजन्तु हैं जिनमें संकटापन्न और असुरक्षित उपजातियाँ भी शामिल हैं। चिलिका को पक्षियों की १५० जातियाँ रखने का श्रेय प्राप्त है जिनमें एशिया का एक अल्पज्ञात समुद्रतटीय पक्षी डोविचँ तथा एक दुर्लभतम पक्षी स्पूनबिल सैण्डपाइपँ भी शामिल है। परिणाम स्वरूप सन् १९८७ में चिलिका को एक राष्ट्रीय पक्षी अभयारण्य घोषित किया गया। ➔

सूरत में चिलिका का हृदय स्थल खारा नहीं कहा जा सकता है, क्योंकि इसके कुएँ और मुख्य द्वीप काली जय में मीठा पानी उपलब्ध है।

किन्तु इस खारे पानी का भी झील पर अपना पूरा अधिकार बनता है। आखिर यह है तो समुद्र की देन ही। यह झील निरंतर समुद्र से जुड़ी रहती है और उसके द्वारा अपने चतुर्दिक बसे ग्रामवासियों को मछलियाँ, केकड़े आदि उनकी जीविका के लिए उपलब्ध कराती है। संभवतः किसी प्राकृतिक उथल-पुथल ने इस झील को समुद्र से काट कर अलग कर दिया होगा। पहाड़ियों की दो उपशृंखलाओं ने इसके और समुद्र के मोहक संगम को दोनों तरफ से घेर रखा है।

लोक-साहित्य में अवश्य ही इसकी उत्पत्ति का अपना विवरण मिलता है। कहते हैं : एक बार कुछ समुद्री दस्यु या लुटेरे अपने जहाजों से समुद्र पर पहुँचे। वे यहाँ पुरी में स्थित भगवान जगन्नाथ के मंदिर को लूटने आए थे। मंदिर का पुजारी मंदिर की मूर्तियाँ (भगवान) और अमूल्य सम्पदा लेकर किसी गुप्त स्थान को पलायन कर गया, और तो क्या कहें, मंदिर के नगर वासी भी उस जगह को

वीरान कर गए। बड़ी आशाएँ लेकर आए लुटेरों के हाथ कुछ न लगा।

किन्तु लोगों को लुटेरों से आगाह किसने किया? दस्यु-दल तो रात्रि के समय चोरी-छिपे आया था। किसी ने दस्यु नेता को बताया कि वह और कोई नहीं बल्कि स्वयं समुद्र था, जिसने अपनी गर्जना द्वारा पुजारी को आसन्न आक्रमण की सूचना दी। पुजारियों में से एक ऐसा व्यक्ति था जो गर्जन की भाषा का अर्थ निकालने में समर्थ था। दस्यु-दल ने अपने जहाजों की तरफ जाने से पूर्व समुद्र के किनारे खड़े होकर उसे भला-बुरा कहते हुए कोसा। तत्काल ही समुद्र ने एक ऊँची उछाल भरी और उसकी पर्वताकार लहरें एक विस्फोट के समान इस धृष्ट-दल पर टूट पड़ीं और उन्हें खत्म कर दिया। उनके जहाज टुकड़े-टुकड़े होकर डूब गए।

उसके बाद समुद्र पीछे हट गया, लेकिन वहाँ के लोगों के लिए एक स्थायी वरदान स्वरूप अपना चिह्न छोड़ गया।

चिलिका के लिए सर्वोत्तम समय शरद ऋतु है जब हजारों पक्षी सुदूर साइबेरिया से जाड़े के ठण्ढे महीनों के लिए यहाँ आते हैं। चतुर्दिक फैली पहाड़ियों तथा तट के रेतीले प्रसारों में अत्यधिक मात्रा में चीतल, ब्लैक बक, बन्दर, फिशिंग कैट, नेवला, साही आदि पाये जाते हैं। चारों ओर फैले समुद्रतट के झाड़-झंखाड़ों में साँप, कछुए, छिपकलियाँ तथा नाग पाये जाते हैं। समुद्र और झील के संगम पर स्थित सतपाड़ा से कोई भी डॉलफिन का अवलोकन कर सकता है।

सबसे बड़े द्वीपों में से एक नलबाना, जो १० कि.मी. में फैला दलदल है, मौनसून के चार-पाँच महीनों में पानी के अन्दर डूबा रहता है। कुछ मुहानेवाले कछुए और साँप यहाँ पाये जाते हैं, साथ ही डॉलफिन्स, ओटर्स, चमगादड़ों तथा रीछों की जातियाँ भी पाई जाती हैं।

लिखित जानकारी के अनुसार मछलियों और झींगों की लगभग १५० जातियाँ यहाँ पाई जाती हैं। सन् १९१७ में, एक दुर्लभ रेंगनेवाला प्राणी, अंगहीन कोतरी (एक प्रकार की छिपकली) पहली बार बाराकुडिया द्वीप के दलदल में पाया गया।

नौकाविहार तथा समुद्री पर्यटन की सुविधाएँ यहाँ उपलब्ध हैं। उड़ीसा पर्यटन विभाग बार्कुल में जल क्रीड़ाओं का भी आयोजन करता है।

ऐसा अनुमान है कि कुछ शताब्दियों पूर्व यह झील उससे ज्यादा बड़ी थी, जितनी आज है। तब यहाँ एक विकसित बन्दरगाह था। दूर-दूर के स्थानों से यहाँ जहाज आया करते थे। जैसा कि ग्रीक पर्यटक पोलेनी के विवरण से पता लगता है, जो चौथी शताब्दी बी.सी. में भारत आया था। कई सौ वर्षों बाद इस बन्दरगाह पर ह्वेनसांग नामक एक विशिष्ट चीनी यात्री का आगमन हुआ। उसने बन्दरगाह का परिचय चेली टेटो कह कर दिया है, जिसका संबंध चिलिका से जोड़ा जा सकता है। कुछ विद्वानों का कहना है कि बन्दरगाह का पुराना नाम दन्तपुरा था, जिसके बारे में हमने बुद्ध-साहित्य में पढ़ा है। इन सिद्धान्तों के पक्ष में सशक्त प्रमाण उपलब्ध हैं। लगभग सौ के करीब ऐसे छोटे-बड़े द्वीपों में से अधिकांश निर्जन पर्वत हैं, जिनमें एक 'दीप-पर्वत' या 'लैम्प हिल' के नाम से जाना जाता है। रात्रि के समय इस पर जलनेवाली आग आनेवाले जहाजों के लिए संकेत (सिगनल) देने का काम करती थी।
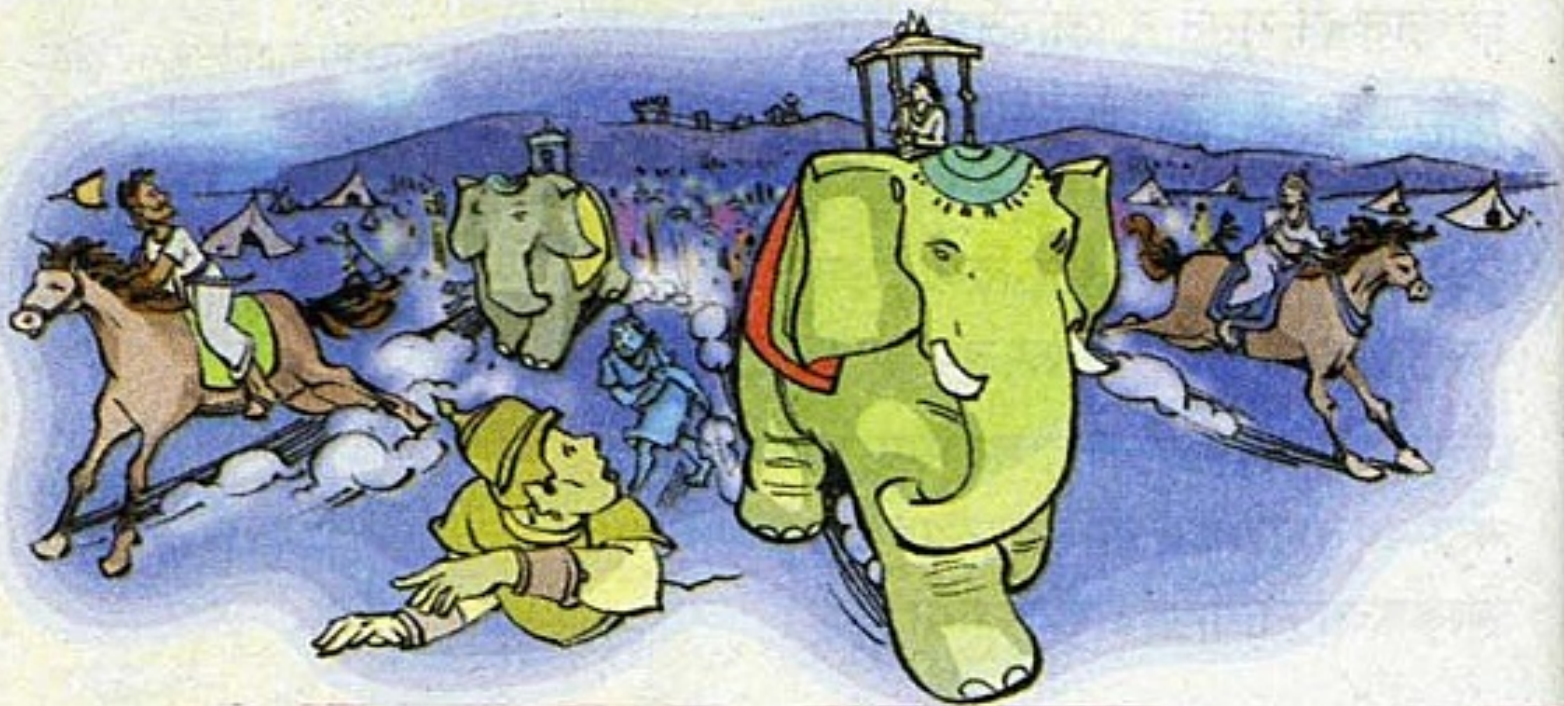
पारीकुड सभी द्वीपों में सबसे बड़ा है। वस्तुतः यह एक द्वीप-राज्य था, जो एक सामन्ती राजा द्वारा शासित था। जो भी हो, द्वीप में जो तीर्थ-केन्द्र प्रसिद्ध है वह 'कालीजय' के नाम से जाना जाता है। इस झील पर बालू गाँव से लगभग सोलह कि.मी. की दूरी पर यह सुन्दर पर्यटन-स्थल है। इसका एकमात्र आकर्षण देवी काली को समर्पित 'कालीजय' का मंदिर है। जैसा कि हम जानते हैं कि काली 'देवी माँ' का एक विशेष रूप है जो व्यापक रूप से पूजा जाता है। किन्तु उस नाम से जय कैसे जुड़ गया? इस संबंध में दो प्रकार के मत मिलते हैं। 'देवी माँ' पारीकुड़ की मुख्य देवी थीं। पारीकुड के पास अपनी रक्षा के लिए एक छोटी सी सेना थी। एक बार एक अधिक शक्तिशाली राजा ने धमकी दी कि वह पारीकुड को लूटकर उस पर अपना कब्जा कर लेगा। पारीकुड के राजा ने देवी से प्रार्थना की कि वह उसके राज्य की दुश्मन से रक्षा करें।

झील के अन्तर्गत आकर्षण

पक्षियों का द्वीप :

यह द्वीप निवासी तथा प्रवासी पक्षियों का आश्रय-स्थल है और पक्षी-अवलोकन करनेवालों के लिए स्वर्ग है।

कालीजय द्वीप :

कालीजय द्वीप कालीजय देवी का घर है। मंदिर प्रत्येक वर्ष मकर संक्रांति पर एक विशाल मेले का आयोजन करता है। यह एक प्रसिद्ध पिकनिक स्थल भी है।

सतपारा :

समुद्र और झील के संगम के निकट सतपारा चिलिका पर एक एकान्त स्थल है। चिलिका का आनन्द लेने के लिए यह एक आदर्श स्थान है। सालो भर डॉलफिन का नजारा तथा आवासी व प्रवासी पक्षियों का शरद ऋतु में प्राचुर्य - इन दो कारणों से लंबे अवकाश में प्रकृति का आनन्द लेने के लिए इसे प्राथमिकता देने योग्य स्थान माना जाता है।

रात्रि का समय था। आक्रामक की सेना झील के तट पर पहुँच चुकी थी। वे अपने लक्ष्य की ओर सुबह तक कूच करने की तैयारी में थे, किन्तु जब उजाला हुआ तो शत्रु यह देखकर घबरा उठे कि लाखों सैनिक द्वीप की रक्षा हेतु उसे घेरे तैनात हैं। शत्रुओं ने स्वप्न में भी न सोचा था कि इस छोटे से राज्य में ऐसी तैयारी होगी। शत्रुओं ने सोचा, यदि पारीकुड के सैनिकों की ही संख्या इतनी अधिक है तो इसके सेनाधिकारियों ने झील के बीच में भी शत्रुओं का सामना करने का कोई न कोई उपाय अवश्य सोच रखा होगा। शत्रुओं को अब इसी में भलाई लगी कि वे चुपचाप लौट जाएँ, बजाय इसके कि झील में एक साथ फँसकर, दुश्मनों से घिर कर डूब मरें।

शत्रुओं को वापस जाता देख ताज्जुब में पड़े पारीकुड के राजा ने पता किया कि आखिर हुआ क्या? लाखों हंसावर वहाँ एकत्र थे जिन्हें दुश्मनों ने मानव-सेना समझ लिया था। निःसंदेह यह मति भ्रम 'देवी' द्वारा रचित लीला ही थी, अतः यह विजय राजा की नहीं बल्कि 'देवी' की थी। राजा ने देवी का अभिनंदन 'कालीजय' के घोष द्वारा किया और इस प्रकार देवी ने एक नया नाम ग्रहण किया।

जो भी हो, दूसरी किंवदन्ती और अधिक लोकप्रिय है। 'कालीजय' नामक एक लड़की थी। संभवतः यह नाम उसे उसके मुख पर जन्मगत लगे काले चिह्न के फलस्वरूप दिया गया था। वह चिलिका के निकट एक छोटे से गाँव की रहनेवाली थी। उसे दो ही शौक थे। एक ईश्वर से सबके भले की प्रार्थना करना और दूसरा वृद्ध और बीमारों की सेवा करना। उसे सब प्यार करते थे। किन्तु इतना काफी न था उस जैसी गाँव की एक निरक्षर कन्या के परम्परागत
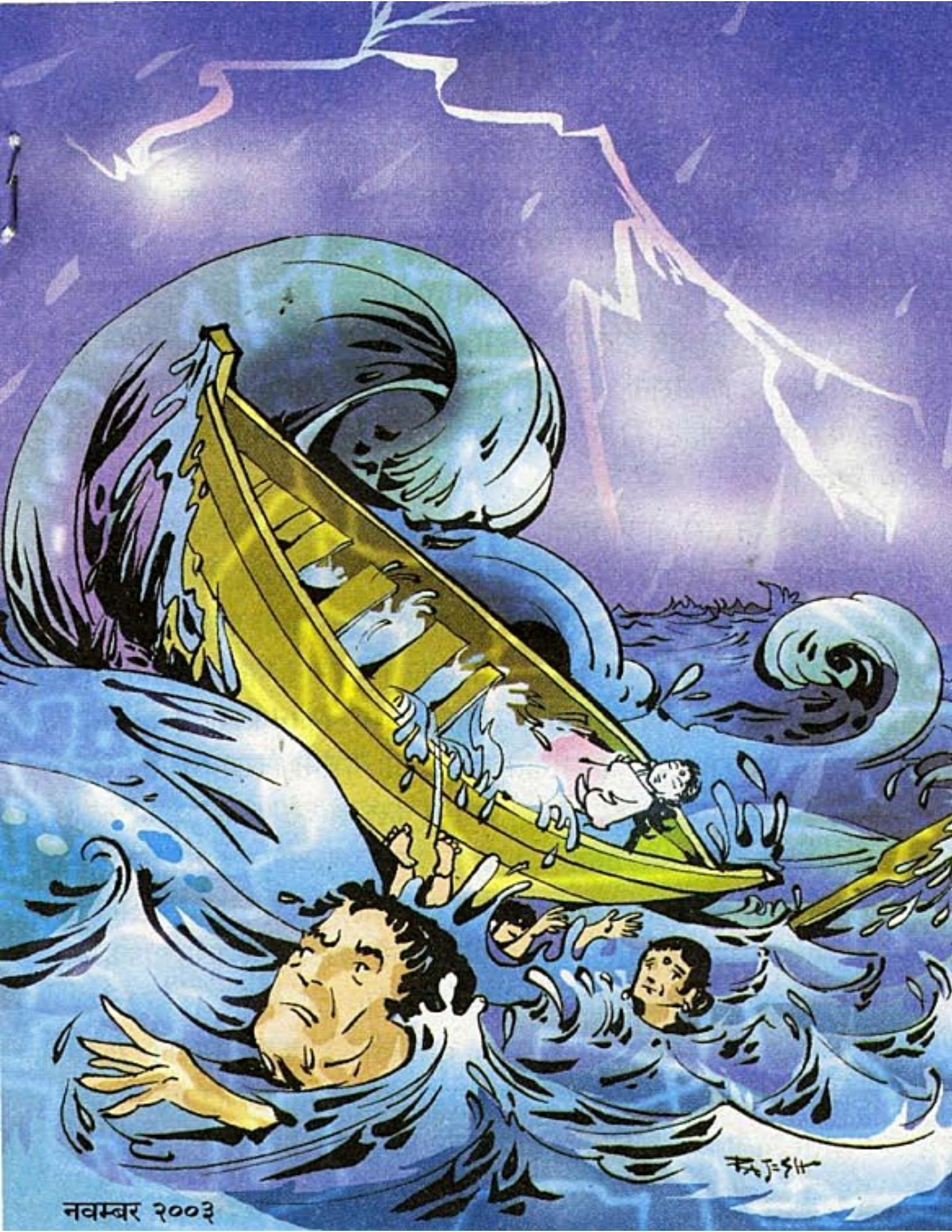
जीवन में परिवर्तन लाने के लिए। जब उसकी किशोरावस्था आरंभ हुई तो उसके माता-पिता भी उसके लिए उपयुक्त वर की खोज में लग गए, और वह उन्हें एक दूसरे द्वीप के निकटवर्ती गाँव में मिल गया। लड़की को वर के गाँव ले जाने का प्रबंध किया गया, जहाँ उसका विवाह होना था।

कालीजय ने रोते हुए प्रतिवाद किया, "मेरा जन्म इस तरह के जीवन के लिए नहीं हुआ है।" उसने आँसू भरी आँखों से सबसे प्रार्थना की, पर बेचारी लड़की की गिड़गिड़ाहट की परवाह कौन करता। कुछ ने तो उसे पागल ही करार दिया।

निर्धारित दिन उसे अपने पिता, चाचा और कुछ अन्य संबंधियों के साथ नाव पर सवार करा दिया गया। राह में कभी-कभी वह स्वच्छ नीले आसमान को निहारती तो कभी उसी आसमान को प्रतिबिंबित करती शांत झील को। उसके अभिभावक बड़े प्रसन्न थे। यह सोचकर कि उसने परिस्थिति के साथ समझौता कर लिया है। किन्तु ज्यों ही उनका गंतव्य-स्थान निकट आने लगा, वह बार-बार आकाश की ओर देखते हुए अपनी बेचैनी दिखाने लगी। तभी अचानक वहाँ भयानक बवंडर आया। नाव से कुछ ही दूरी पर समुद्र की ऊँची लहरें झील में टूट पड़ीं। अरे, देखो ! आकाश जिसमें एक क्षण पूर्व एक रेखा तक न थी, इस वक्त भयानक काले बादलों से घिर उठा और कुछ ही देर में सनसनाती हवा के साथ मूसलधार बारिश होने लगी। कानों को फाड़नेवाली कड़क के साथ, आँखों को चौंधियाती विद्युत चमकने लगी।

नाव उद्वेलित जल में खिलौने के समान डोल रही थी। कालीजय को खोजते हुए उसका पिता चीखा, "मेरी बच्ची, तुम कहाँ हो?" और इसके पहले कि वह कुछ प्रत्युत्तर पाता, हाय विधाता ! नाव उलट गई।

आश्चर्य ! वर्षा थम गई और बादल भी उसी तेजी से बिखरने लगे, जैसे प्रकट हुए थे। हवा भी ऐसा लगा मानों नींद में सो गई हो। जब यह समूह द्वीप के काफी निकट था, वहाँ पानी छाती तक गहरा था। उन्होंने एक दूसरे को देखा। सब वहाँ थे, सब ! सिवाय कालीजय के। "मेरी बच्ची, मेरी बेटी !" पिता चीख उठा। झील के किनारे कुछ गाँववाले इकट्ठे हो गए थे। उनमें से कुछ वधूपक्ष के साथ मिलकर लड़की को ढूँढ़ने लगे। किन्तु वह नहीं मिली।

शीघ्र ही कुछ मछुआरों और अन्य लोगों को, जिन्होंने झील में तूफान का सामना किया था, एक अद्भुत अनुभव हुआ। उन्हें लगा कि एक अदृश्य शक्ति हवा एवं जल के विपरीत प्रवाह के बाद भी उनकी नाव को किनारे की तरफ धकेल रही है। यदि यह रात्रि का समय होता तो संभवतः वे एक धुंधली नारी आकृति को अपनी सहायता करते देख सकते थे। जो भी हो, यह उनका विश्वास

भ्रमण के लिए सर्वोत्तम समय

चिलिका झील का भ्रमण करने के लिए सर्वोत्तम समय है शरद ऋतु, जब झील पक्षियों की चहचहाहट से गूंजने लगती है। झील पर पर्यटन करने के लिए बालू गाँव, बार्कुल और रम्भा से नाव ले सकते हैं। कोई मछुआरे से अपनी लकड़ी की देसी नाव में ले जाने के लिए भी अनुरोध कर सकता है।

सैर

निर्मला झाड़ :

रम्भा से केवल ११ कि.मी. तथा बार्कुल से २१ कि.मी. दूर निर्मला झाड़ धार्मिक उपासना का स्थान तथा बहुत बड़ा पिकनिक-स्थल है।

नारायणी :

बार्कुल से १० कि.मी. दूर एक सदा बहार नदी के निकट नारायणी देवी का मंदिर है। मंदिर तथा इसके आस-पास का परिवेश एक आदर्श पिकनिक स्थल है।

बानपुर :

भगवती देवी तथा दक्ष प्रजापति के मंदिरों के चारों ओर परिक्रमा करता हुआ बानपुर एक धार्मिक उपासना केन्द्र है। यह बार्कुल से १३ कि.मी. तथा बालू गाँव से ८ कि.मी. दूर है।

था कि यह शक्ति काली जय की आत्मा है जो मृत्यु के बाद भी दूसरों की मदद करने में लगी थी। ऐसी मृत्यु जिसे उसने आदेश देकर अपने उद्धार के लिए बुलाया था। ऐसी मृत्यु जो उससे आदेश पाकर उसके उद्धार के लिए आई थी।

यह भी संभव है कि दैविक-शक्ति इस घटना के पहले से ही वहाँ उपस्थित हो। धीरे-धीरे कालीजय की आत्मा ही देवी के रूप में पहचानी जाने लगी हो। भारतीय तिथियों के अनुसार माघ मास में (लगभग जनवरी महीने के मध्य में) मकर-संक्रान्ति के अवसर पर वहाँ मंदिर के चतुर्दिक एक महोत्सव का आयोजन होता है। लोग वहाँ मुरगे या बकरों की भेंट चढ़ाने आते हैं। किन्तु उनकी बलि नहीं दी जाती। कुछ धार्मिक अनुष्ठानों के पश्चात उन्हें द्वीप की मुख्य तीन पहाड़ियों के जंगलों में खुला छोड़ दिया जाता है। किसी भी समय आप उन्हें मंदिर के आस-पास घूमते देख सकते हैं।

ऐसा लगता है कि कालीजय की आत्मा अथक रूप से लोगों को निरंतर

मदद पहुँचाती रहती है, किन्तु यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है कि क्या लोग स्वयं कोई मदद करते हैं, जिससे झील की पवित्रता और शुद्धता को बनाए रखा जा सके? समुचित योजना और देखभाल द्वारा चिलिका झील को बड़ी सरलता से विश्व का सबसे सुन्दर आकर्षण बनाया जा सकता है।

'सतपाड़ा' एक ऐसा स्थान है जहाँ झील समुद्र से मिलती है। यह सूर्योदय के समय तो एक विलक्षण दृश्य प्रस्तुत करता ही है, किन्तु वैसे भी दिन का कोई भी पल एक अनोखा अनुभव देता है, जहाँ एक तरफ उमड़ता हुआ विशाल समुद्र है तो दूसरी तरफ शांत झील, पहाड़ियाँ और हरियाली, जो अपना रूप बादलों और रोशनी के मिजाज के अनुकूल प्रतिपल बदलती रहती हैं। यह स्थान डॉलफिनों का प्रिय बसेरा भी है।

ऐतिहासिक परम्परा की दृष्टि से झील का परिवेश समृद्ध है। ऐसा माना जाता है कि निकटवर्ती गाँव बानपुर प्राचीन राज्य

वहाँ कैसे पहुँचें

चिलिका हवाई मार्ग, रेल, सड़क से सभी स्थानों के साथ जुड़ा हुआ है! भुवनेश्वर निकटतम हवाई अड्डा है जो बार्कुल से १०५ कि.मी., रम्भा से १३० कि.मी. और सतपारा से ११० कि.मी. पर स्थित है। इंडियन एयरलायन्स की उड़ानें दिल्ली, कोलकाता, विसाखापतनम, रायपुर, हैदराबाद, मुम्बई तथा चेन्नई से जाती हैं।

कोलकाता-चेन्नई रेल (दक्षिण-पूर्वी रेलवे) मार्ग द्वारा चिलिका जाने के लिए बालू गाँव, चिलिका, खल्लीकोटे तथा रम्भा उतर सकते हैं। बार्कुल के लिए निकटतम रेलवे स्टेशन बालू गाँव है (५ कि.मी.) तथा सतपारा के लिए पुरी (५० कि.मी.) है।

कोलकाता-कटक-भुवनेश्वर-बालूगाँव-बार्कुल-रम्भा-बरहमपुर तथा विसाखापतनम को मिलाते हुए नेशनल हाई वे न.५ झील के किनारे से जाता है। उड़ीसा पर्यटन विकास निगम तथा निजी टूर ऑपरेटर्स पुरी तथा भुवनेश्वर से आरामदेह बसों एवं कारों की सुविधा प्रदान करते हैं।

'कनगौड' की राजधानी था। कनगौड राजवंश ने बहुत से मंदिरों का निर्माण करवाया था जिनमें से कुछ पूजन और धार्मिक अनुष्ठानों द्वारा आज भी सजीव हैं। मीलों की दूरी तक इस निर्जन रमणीक स्थान को कोई भी देखे तो यही लगेगा मानों प्रकृति ने इसकी रचना महज अपने विश्राम के उद्देश्य से की है।

उड़ीसा के कई महान कवि झील से प्रेरित होकर अमर कृतियाँ छोड़ गए हैं। उनमें से राधानाथ रॉय का नाम आधुनिक कविता के रचनाकारों में से एक है। झील की सुन्दरता पर लिखी उनकी लम्बी कविता एक अमर गौरव-ग्रन्थ है। यह बिम्ब-प्रतिबिम्ब का संयोजन है। झील की प्राकृतिक भव्यता ने कवि के विचारों को मनोहारी ढंग से प्रेरित किया है।

दूसरे महान कवि जो आधुनिक उड़ीसा के निर्माता के रूप में सम्मानित हैं, ने भी इस पर एक हृदय स्पर्शी कविता लिखी है, जिस समय वे रेल द्वारा चिलिका के सम्मोहक तट से गुजर रहे थे। ये और कोई नहीं 'गोप बन्धु दास' थे। वे हमें प्रकृति की इस महान वास्तु कला के रहस्यमय पहलुओं के प्रति सचेतन करते हैं।

तीसरे स्थान पर 'गोदाबरीश मिश्रा' हैं। जिन्होंने अपनी अत्यन्त संवेदनशील

कविता द्वारा 'काली जय' की कविता को अमर कर दिया है।

उन लोगों की निर्दयता के बावज़ूद जो इस झील की सैर के लिए आते हैं, यह एक भिन्न प्रकार के जीवन से प्रकम्पित है, जिसे कोई तभी अनुभव कर सकता है, जब उसमें केवल इसका आनन्द उठाने की बजाय इस स्थान के लिए सम्मान तथा इसके सूक्ष्म प्रभाव से स्वयं को समृद्ध करने की संवेदनशीलता हो।

झील का परिवेश बेहद आकर्षक है। बहुत समय पहले एक बार कुछ बर्बर लोग भगवान जगन्नाथ के मंदिर को ध्वंस करने के लिए आगे बढ़े। कहते हैं उस समय मंदिर के भगवान की मूर्ति को झील में लाकर परीकुड द्वीप में छिपाया गया। यदि झील भगवान को शरण देने का सौभाग्य पा सकती है तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि यह तनाव और क्लान्ति भरे हमारे हृदय को राहत प्रदान कर सकती है। इसकी प्रशान्त विशालता हमें अपनी चेतना के विस्तार में भी मदद कर सकती है।

कहाँ ठहरें

झील के चारों ओर अनेक स्थानों पर आवास-सुविधा उपलब्ध है। कुछ होटलों का प्रबन्ध उड़ीसा पर्यटन विकास निगम द्वारा किया जाता है जबकि अनेक निजी होटल भी हैं।

पर्यटन-सहायता

रम्भा टूरिस्ट आफिस,
बार्कुल

पुरी टूरिस्ट आफिस,
वी.आई.पी. चक

प्रकृति-व्याख्या-केन्द्र

चिलिका के पर्यटकों के लिए एक अनिवार्य रूप से भ्रमण करने योग्य स्थल है सतपारा का आगन्तुक केन्द्र — विजिटर सेन्टर जो चिलिका झील का प्रवेश द्वार है। यह केन्द्र एक लघु अजायब घर है जो चिलिका झील की सम्पूर्ण पर्याबरण-प्रणाली को प्रदर्शित करता है। चिलिका झील के प्रत्येक भ्रमणार्थी को अनेक प्रदर्शों, गैलरियों, जलजीवशालाओं, श्रवण-दृश्य सहायक वस्तुओं, डायोरामाज़, तथा टच-स्क्रीन सूचना पट्टों के माध्यम से झील की जैव विविधता के बारे में शिक्षित किया जाता है। यहाँ बच्चों के लिए एक अनुसंधान कक्ष भी है। इसका उद्देश्य यह है कि पर्यटकों को इस लैगून की नम भूमि-पर्याबरण प्रणाली के प्रकृति-व्याख्या-कार्यक्षेत्र से अवगत कराया जाये तथा उन्हें यहाँ के निवासियों के लिए खतरों व पर्याबरण प्रणाली को सुरक्षित रखने की आवश्यकता के प्रति सचेतन किया जाये।

आगन्तुकों के अनुकूल बनाने के लिए यह केन्द्र कम्प्यूटरकृत टच-स्क्रीन, बनस्पति तथा जीव-जन्तुओं के पैनल-प्रदर्श, अनेक प्रवासी पशु-पक्षियों की नस्लों के फोटोज़ तथा तरह-तरह की सूचना देने के लिए डिजिटाइज्ड साउण्ड प्लेयर्स की सुविधा प्रदान करता है। केन्द्र के पास एक परस्पर-क्रियात्मक कोना है जिसमें मनोरंजन के साथ सीखने के लिए पहेलियों तथा बोर्ड गेम्स की सुविधा है।

CHILIKA - the hopping , Singing and flying nursery for children. This lazy and dreamy Chilika lake dwells in the East Coast of Orissa. When in Chilika, you are in nature's class-room, being taught the alphabets of nature. "This is a dolphin" and "That is a heron" - a live picture book for kids. Parents take note: Open the eyes of your children to this special page of ever-gathering beauty. Chilika is the wintering ground for migratory birds. Colours and varied shapes shall tickle the imagination of young minds. In boats one can go exploring little fairylands - the exciting islands. Water sports adds to the existing excitement for kids and men with young hearts. In the middle of this clear, dark blue lake stands the famous 'Kalijai temple'. The story of Kalijai will chase tender hearts like a dream. Capture the talkative beauty and bounty of the gorgeous Chilka in your dead film reels and immotalise the moments of fleeting beauty in the hearts of your young ones.

अन्धकार से प्रकाश की ओर

अनुभा मोहन्ती
कटक

ऐ[illegible]र्या गणेशन
[illegible]भोपाल

काली रात थी, चन्द्रमा विहीन आकाश और घोर अंधेरा था। कहीं कोई रोशनी न थी। रात बहुत घनी हो चुकी थी और मैं सो रही थी। तभी सहसा एक आवाज ने मुझे चौंका दिया। यह घड़ी के घण्टे की आवाज थी जो रात के बारह बजने की सूचना दे रही थी, मानो अर्धरात्रि का स्वागत कर रही हो। ठीक तभी मैंने दो आकृतियों को अपने कमरे में आते देखा। मैं बुरी तरह डर गयी। मेरा मन भूत-प्रेतों और चोरों की कहानियों को याद कर भय से स्तब्ध हो उठा। मेरे विचार तरह-तरह की काल्पनिक आकृतियों में उलझने लगे, क्योंकि अर्धरात्रि में ही भूतप्रेत और चोर आदि अन्दर बाहर घूमते रहते हैं। निश्चय ही ये उन्हीं में से कोई है और अब मेरा अंत समीप है। मैं भय से इतना जड़बत हो गयी कि आँखें खोल कर देखने का भी साहस न कर सकी। मैंने सोने की बार-बार कोशिश की किन्तु नींद मुझसे दूर ही दूर भागती गई।

तभी मैंने संगीत सुना। धुन निश्चय ही टेप-रिकॉर्डर से आ रही थी। लेकिन टेप रिकॉर्डर बजेगा कैसे यदि बिजली ही नहीं है। तभी कई धुंधली रोशनियाँ दो आकृतियों के [illegible] वहाँ प्रकट हुईं जो मेरे कमरे में प्रवेश कर रही थीं। एक ओर बिजली का गुल होना, दूसरी ओर दो आ[illegible]तियों का कमरे में आना, इस स्थिति ने वातावरण को भय के कारण कंपित कर दिया, मेरे हृदय की [illegible]नें तेजी से बढ़ने लगीं।

[illegible] मैं चौंक उठी, पर कुछ ही देर को। वह आवाज जो कुछ देर पहले से आ रही थी, बहुत मधुर थी और [illegible]कार्डर जोकि बैटरी से चल रहा था, कह रहा था, ''तुम्हारा जन्म दिन शुभ हो''- 'हैप्पी बर्थडे टू यू'। जो प्रकाश कमरे में आ रहा था वह तेरह जलती हुई मोमबत्तियाँ थीं, और वे दो आकृतियाँ और कोई नहीं मेरे मम्मी-पापा थे। उन्हीं के साथ टेप रिकॉर्डर और एक ट्रे में जलती हुई मोमबत्तिया थीं। साथ में एक केक, जो मेरे जन्म-दिन मनाने के लिए था। यह मेरा तेरहवाँ जन्म दिन था। मध्य रात्रि मेरे जन्म की सुबह मना रही थी। मृत्यु के भय के मन को पालने के आनन्द का रास्ता दिखाया।
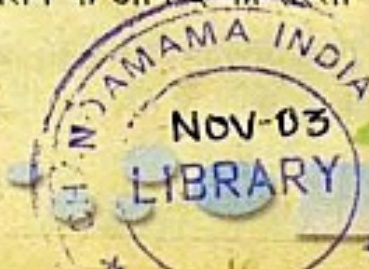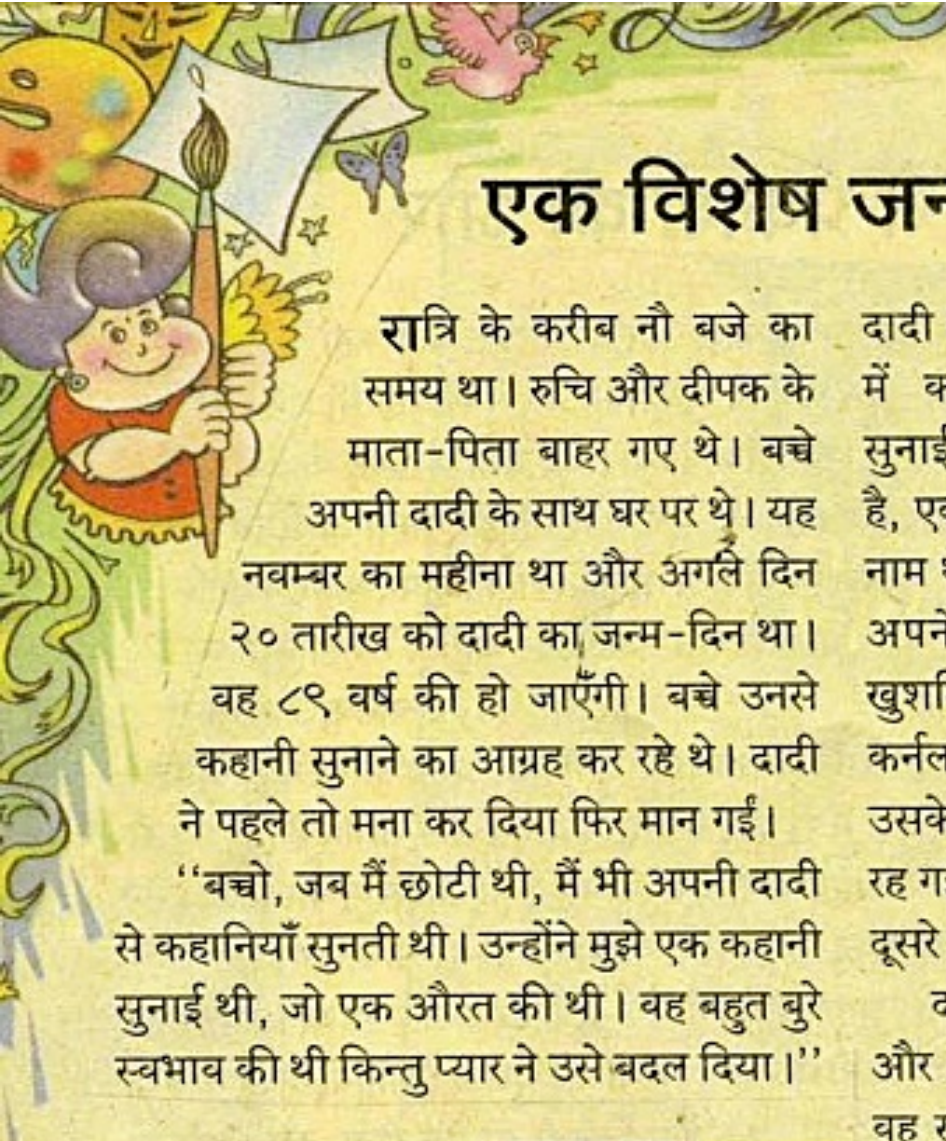
एक विशेष जन्म-दिन

प्रियम पराशर
जबलपुर

रात्रि के करीब नौ बजे का समय था। रुचि और दीपक के माता-पिता बाहर गए थे। बच्चे अपनी दादी के साथ घर पर थे। यह नवम्बर का महीना था और अगले दिन २० तारीख को दादी का जन्म-दिन था। वह ८९ वर्ष की हो जाएँगी। बच्चे उनसे कहानी सुनाने का आग्रह कर रहे थे। दादी ने पहले तो मना कर दिया फिर मान गईं।

''बच्चो, जब मैं छोटी थी, मैं भी अपनी दादी से कहानियाँ सुनती थी। उन्होंने मुझे एक कहानी सुनाई थी, जो एक औरत की थी। वह बहुत बुरे स्वभाव की थी किन्तु प्यार ने उसे बदल दिया।''

दादी माँ ने मधुर आवाज में कहा और कहानी सुनाई। ''एक बार की बात है, एक औरत थी जिसका नाम था मेरी कारमेल। वह अपने पति के साथ रहती थी। वह एक खुशमिजाज औरत थी। उसका पति सेना में कर्नल था। दुर्भाग्य से वह लड़ाई में मारा गया। उसके कोई संतान न थी, अतः वह घर में अकेली रह गई। वह सबको नापसंद करने लगी, जबकि दूसरे उसे बहुत प्यार करते थे।''

दादी माँ ने खाँस कर अपना गला साफ किया और आगे कहा, ''किसी के भी जन्म-दिन पर वह स्वयं को घर में बन्द कर लेती और बुलाए जाने पर अजीब से बहाने बनाती। फिर एक दिन उसने बाहर जाने का निर्णय लिया। क्या तुम जानते हो, कब? स्वयं अपने जन्म-दिन पर। सब ने उसका हार्दिक अभिवादन किया, किन्तु यह किसी को पता नहीं था कि आज उसका जन्म-दिन है। अतः उन्होंने सिर्फ यही कहा, 'शुभ प्रभात, श्रीमती कारमेल !' इससे वह उदास हो गई। अब उसे महसूस हो रहा था कि दूसरों को कैसा लगता होगा जब वह उनकी उपेक्षा करती थी। वह चर्च गई, बगीचों में गई। हर जगह पर उसे लगा कि प्रत्येक उससे कितना प्यार करता है।

''वह सड़क के एक तरफ बनी बेंच पर बैठी रो रही थी। उसने अपनेआपसे कहा, 'हे भगवान, मैं

के.वी. नन्दन
चेन्नई

कितनी मूर्ख थी जो उनके प्यार को नहीं समझ पाई। अब आज जब मेरा जन्म दिन है कोई मेरे साथ मेरी भावनाओं में शामिल नहीं हो पा रहा।' वह वहाँ आठ बजे तक बैठी रही।'' दादी ने कहा।

दादी ने फिर से पानी का एक घूंट पीकर अपना गला तर किया और आगे कहा। ''उसने घड़ी देखी, जो ८ बजा रही थी, और घर की ओर चल पड़ी। घर में घुसते ही वह आश्चर्य चकित रह गई, यह देखकर कि हर कोई हाथ में उपहार लिए खड़ा है। वे उसे उपहारों से भरी मेज के पास ले गए जहाँ सामने 'केक' सजा था। वह फूट-फूट कर रोने लगी। उसने सबसे क्षमा माँगी और सहृदय बनने का वचन दिया। सब ने जन्म-दिन की बधाई का गीत गाया और उसने केक काटा। उस दिन के बाद से वह हर आयोजन और दावत में नज़र आने लगी। क्या तुम्हें कहानी अच्छी लगी, बच्चो?'' दादी माँ ने पूछा।

''हाँ, दादी माँ, बहुत-बहुत ही अच्छी!'' बच्चों ने कहा। बच्चों के माता-पिता अन्दर आ चुके थे। अतः बच्चों ने दादी माँ को 'शुभ-रात्रि' कहा और सोने चले गए।

अगले दिन रात्रि के ९ बजे तक सब कुछ वैसा ही रहा। बच्चे मेहमानखाने में आए करीब ९ बजे, वहाँ कुछ प्रबन्ध किया और बत्ती बुझा दी। दादी माँ, जो कि टी.वी. देखना चाहती थीं, मेहमान खाने में आईं। ज्यों ही उन्होंने बत्ती जलाई, हर कोई निकल आया, कोई अलमारी के पीछे से तो कोई टी.वी. के पीछे से।

वे उनके लिए केक लाए थे, सबने उनके लिए जन्म दिन का बधाई-गीत गाया। रात्रि को सबने स्वादिष्ट भोजन किया; फिर बारी आई उपहारों की। बच्चों के माता-पिता ने उन्हें एक सुन्दर सा स्कार्फ दिया। बच्चों ने उन्हें सुन्दर आवरण में लिपटा लिफाफा दिया। दादी माँ ने उसे खोला और देखा वह एक गुड़िया थी, जिस पर लिखा हुआ था : ''हमारी ८९ वर्षीय कहानी सुनानेवाली प्रिय मित्र को।''

'रुचि और दीपक'

दादी की आँखों में खुशी के आँसू थे।

आजादी की कीमत

पी. कार्तिक
रामास्वामी
चेन्नई

"पिताजी, कृपया मुझे तोता ला दीजिए।" यह पहली बार नहीं था जब मैं अपने पिताजी से प्रार्थना कर रहा था। वस्तुतः मैं पिछले दो महीनों से उनसे तोता लाने की जिद कर रहा था।

जब भी मैं गली में चिड़िया के विक्रेता को भिन्न-भिन्न प्रकार की पालतू चिड़ियाँ बेचते देखता तो मेरी निगाहें सुन्दर तोतों पर टिक जातीं, यह मेरा अभ्यास सा बन गया। दो सुन्दर तोतों का जोड़ा पिंजरे में है, मैं यही सपना देखने लगा। कैसे मैं सुबह उठकर तोतों से 'शुभ प्रभात' कहूँगा, किस प्रकार मैं उन्हें और उनके पिंजरे को साफ-सुथरा रखूँगा, कैसे मैं उन्हें खिलाऊँगा, और कैसे मैं उन्हें बोलना सिखाऊँगा।

मेरे माता-पिता मुझे तोता लाकर नहीं देना चाहते थे। उन्हें डर था कि मैं अपनी पढ़ाई पर ध्यान नहीं दूँगा। यह भी कि चिड़ियों को रखना परेशानी का कारण बनेगा, वे तर्क देते, किन्तु मैं जिद पर अड़ा रहा। अन्ततः मेरे पिता हार गए। दूसरे ही दिन वे मुझे विक्रेता के पास ले गए। खूब सावधानीपूर्वक देखने और अपने पिता के साथ विचार-विमर्श के बाद मैं सबसे सुन्दर तोतों का जोड़ा चुना-चमकदार हरा रंग, मूंगिया लाल चोंच और पैर, नाचती आँखें, बजती साफ आवाज, इतना प्यारा और सुन्दर !

जल्दी ही मैं पिंजरा उठाए घर जा रहा था। जब मेरे पड़ोस के मित्रों ने मुझे देखा तो मेरा चेहरा चमक रहा था। मुझे सबसे सुन्दर तोतों का मालिक होने का गर्व था। अपनी माँ से काफी विचार-विमर्श करके मैंने पिंजरा पीछे की बालकनी में टांग दिया, जहाँ हम कई पौधों के गमले रखते थे, जिससे कि चिड़ियों को प्राकृतिक परिवेश मिल सके। शरारती मुस्कान के साथ मैंने अपनी माँ से फुसफुसा कर कहा, "मेरा एक और स्वप्न है, मेरे पास एक मछली घर (एक्वैरियम) होगा जिसमें एक जोड़ा सुनहरी मछली, एक जोड़ा सफेद मौली और लाल मौली, एक जोड़ा पर भक्षी और एक जोड़ा सुनहरी काली मछली का होगा। आप मुझे कब ले देंगी यह?" माँ एक शब्द बोले बिना वहाँ से चली गई।

दूसरे दिन मैं सबसे पहले जाग उठा। माँ ने कहा कि उसने मुझे इतना जल्दी उठते कभी नहीं देखा। मैं सीधा तोतों के पास गया। मैंने उनका नाम रखा था 'टीनू' और 'मीनू' और उनसे 'शुभ प्रभात' कहा। उन्हें एक कटोरे में फल और मेवे खिलाए, फिर मैं स्कूल जाने के लिए तैयार हो गया।

सायन चन्दा
कोलकाता

शाम को मैंने कुछ समय टीनू और मीनू के साथ बिताया, फिर अपना गृह-कार्य और पढ़ाई की। मैं बेहद खुश और उत्साहित था।

तीन दिन बीत गए। चिड़ियाँ नये परिवेश की अभ्यस्त हो चली थीं। यद्यपि वे मेरी हर पुकार का अच्छी प्रकार उत्तर देतीं, फिर भी मुझे लगता, मैंने उनकी आँखों में एक प्रार्थना देखी है, या यह मेरी कल्पना थी?

अगली रात्रि कुछ अद्भुत घटा। मुझे कुछ आवश्यक कार्य पूरा करना था यद्यपि रात काफी हो चुकी थी, मैं फिर भी नींद भगाने का प्रयास कर रहा था, ताकि हाथ का काम खत्म कर सकूँ। अचानक मैंने कुछ सुना, टीनू और मीनू दोनों पिंजरे को खड़का रही थीं, कृपया हमें आज़ाद कर दो। कृपया हमें आज़ाद करो। वे गंभीरता से प्रार्थना कर रहे थे। मैं और सहन न कर सका, ''मुझे क्षमा करो, मेरे प्रिय टीनू मीनू, कृपया मुझे क्षमा कर दो,'' मैं जोर से सुबक उठा।

''क्या समस्या है?'' माँ ने मुझे हिलाया। मैं चौंक कर उठ बैठा। यद्यपि यह एक सपना था, पर मैंने सबक सीख लिया था। दूसरे ही दिन मैं टीनू और मीनू को लेकर पास के पार्क में गया और पिंजरा खोल उन्हें आज़ाद कर दिया। उनकी आँखों की वह कृतज्ञ दृष्टि मुझे अब भी याद है।

'प्यारे बच्चे', मेरी माँ ने मुझे चिढ़ाते हुए पूछा, ''क्या तुम्हें मछली-घर चाहिए?''

''नहीं, माँ और कोई पालतू जीव मैं नहीं चाहता, जीवन भर। मछलियों को स्वतंत्र रूप में नदी और तालाब में ही तैरने दें, जहाँ भी वे हैं, लेकिन शीशे के पिंजरे में नहीं। और माँ, क्या आपको पता है कि अब से मैं अपनी जेब खर्च से क्या करनेवाला हूँ? जब मैं काफी जमा कर लूँगा तो पिंजरे में बन्द पक्षी या कैद पशुओं को खरीद कर उन्हें आज़ाद कर दूँगा।''

पता है मेरी माँ को कितना गर्व महसूस हुआ!

जीवधारी वस्तुएँ

प्रथा उमेश मेहता,
गोवा

एक समय था जब पौधों को निर्जीव माना जाता था। बाद में वैज्ञानिकों द्वारा दर्शाया गया कि पौधों में भी जीवन है। अब इस सचाई से किसी को इनकार नहीं। जब दादाजी ने जीनल को इस संबंध में बताया तो उसने सोचा - इसका मतलब है जिन वस्तुओं को हम आज निर्जीव समझते हैं, वे भी कभी सजीव प्रमाणित हो सकती हैं। हमारा उन्हें निर्जीव समझना निरा अज्ञान है।

इस कारण जीनल ने कुछ वस्तुओं में रुचि लेना शुरू किया और उनके साथ जीवित वस्तुओं की भांति व्यवहार करने का प्रयास करने लगी। शुरू में उसे कोई सफलता नहीं मिली। पत्थर में वही कठोर मौन बना रहा, चाहे जीनल कितना भी प्रयास करती उससे बात करने का। जब जीनल लकड़ी की भावनाओं को समझने का प्रयास करती तो वह मूक लकड़ी ही बनी रही। जितना ज्यादा वह प्रयास करती उतनी ही अड़ियल प्रतिक्रिया होती।

नेहा अडिगा
बंगलूर

अंततः जीनल ने अपनी भूल को महसूस किया और सिसकने लगी। उसके गुलाबी गालों पर आँसू बहने लगे। अचानक उसने एक आवाज़ सुनी : "प्यारी बच्ची, रो मत।" जीनल ने चारों तरफ देखा, वहाँ केवल लकड़ी की अलमारी थी, ट्यूबलाइट, पंखा, दीवार घड़ी, कपड़े, सूटकेस और अन्य इसी प्रकार की छोटी-बड़ी चीजें आसपास थीं। जीनल विस्मित थी कि आखिर आवाज़ आई कहाँ से ! जब उसे आवाज का स्रोत समझ नहीं आया तो उसने खिड़की की ओर देखा। जीनल ने सोचा, शायद किसी ने उसके साथ मज़ाक किया हो, अतः उसने सारे कमरों में जाकर देखा। घर में केवल दादाजी थे और वे गहरी नींद में खर्राटें भर रहे थे। अब जीनल ने सोचा, शायद यह उसकी कल्पना हो कि कोई व्यक्ति या वस्तु बोल रही है। या फिर वहाँ कोई भूत था, जो कुछ फुसफुसा रहा था। जीनल को भूतों में विश्वास नहीं था, फिर भी वह भय से काँपने लगी। फिर से उसकी आँखों में आँसू आ गए। "मत रो मेरी प्यारी बच्ची।" फिर से आवाज आई। आसपास देखती जीनल ने पूछा, "तुम कौन हो? तुम कहाँ हो?"

"मैं यहाँ हूँ, मेरी प्यारी बच्ची, तुम्हारे सामने।"

"कौन? कहाँ?"

"मैं वह हूँ जिसे तुम लोग पवन कहते हो।"

जीनल खुशी से उछल पड़ी। उसने हवा को बाहों में भरना चाहा। "ओह, पवनदादा तुम्हारी आवाज कितनी मीठी है, क्या तुम सचमुच बोल सकते हो?"

"अवश्य मेरी बच्ची।"

"तो फिर लोग तुम्हें निर्जीव क्यों समझते हैं, तुम्हारी भावनाएँ नहीं हैं, तुम बोल नहीं सकते, ऐसा क्यों सोचते हैं?"

"ऐसा इसलिए है क्योंकि वे लोग अपने आप में इतने व्यस्त हैं कि यह नहीं समझ पाते कि हम क्या बोलते हैं।"

"ओह, ऐसा है।"

"तो मैं कैसे तुमको सुन पा रही हूँ?"

"क्योंकि तुम एक प्यारी, स्नेही, ध्यान रखनेवाली और संवेदनशील बच्ची हो। अभी के लिए विदा, मुझे चलते रहना है।"

"ठीक है, ठीक है, किन्तु मुझसे बातें करने आते रहना।"

अब जीनल बेहद खुश थी। उसने आश्चर्य से सोचा कि कहीं यह स्वप्न तो नहीं है। इस

वास्तविकता का विश्वास करने के लिए उसने पुकार कर कहा, ''क्या कोई मुझसे बातें करना चाहता है?''

''हाँ, मैं चाहती हूँ।'' बिस्तर पर पड़ी नन्ही गुड़िया बोल उठी।

''अरे, डौली ! तुम भी बोल सकती हो? हे भगवान ! मुझे बिलकुल पता नहीं था । जब मैं गुस्सा होती, तुम्हें कहीं भी फेंक देती थी, क्या तुम्हें दर्द नहीं होता था?''

''हाँ, मुझे बहुत दर्द होता था।''

''ओह, मुझे बहुत अफसोस है, आइन्दा मैं कभी ऐसा नहीं करूँगी। कृपया मुझे क्षमा कर दो।''

जीनल ने गुड़िया के शरीर पर मलहम लगाया। दोनों ने हँसते-खेलते, बातें करते, एक साथ अच्छा समय बिताया, किन्तु तभी दरवाजे की घण्टी बज उठी। जीनल दरवाजा खोलने बाहर गई। उसके माता-पिता आ गए थे। जब जीनल वापस अपने कमरे में गई, गुडिया फिर से प्राणहीन हो चुकी थी। जीनल ने सोचा और जोर से कहा : ''शायद हम मनुष्य लोग अपने चतुर्दिक परिवेश के प्रति इतने कठोर-हृदय और लापरवाह होते हैं कि हम प्राणधारी सत्ताओं को निर्जीव बस्तुओं में बदल देते हैं।''

दुर्वास की हँसी

सीतापुर का निवासी दुर्वास उस गाँव के संपन्न लोगों में से एक था। उसके पुरखों ने उसके लिए काफ़ी जायदाद बचा रखी थी। उसका अपना एक महल था। पचीस एकड़ का उपजाऊ खेत और पचास एकड़ की खुश्क भूमि का वह मालिक था। एक बहुत बड़े आम के बगीचे का भी वह मालिक था। इस वजह से गाँव के लोग उसका आदर करते थे। उसका असली नाम रामचंद्र था, पर उसकी तुनकमिजाजी की वजह से लोग उसे दुर्वास कहकर पुकारते थे। किसी पर वह नाराज़ हो जाए तो जो मुँह में आये, आगे-पीछे सोचे बिना बक देता था। उसे दुर्वास कहने से किसी को भी वह रोकता नहीं था, क्योंकि वह उसे ख़िताब मानता था।

दुर्वास के तीन बच्चे थे। दो बेटियाँ और एक बेटा। बेटियों की शादी कराकर उन्हें ससुराल भी भेज दिया। उसके संबंधी भी उसके स्वभाव से अच्छी तरह परिचित थे। अब रही पत्नी की बात। सुबह से लेकर पति के मुँह से गालियाँ सुनने की उसकी आदत-सी पड़ गयी थी।

पर बेटे किरीट को अपने पिता का यह स्वभाव बिलकुल पसंद नहीं आता था। उसकी शादी के रिश्ते भी आने लगे, पर मन ही मन वह डरता रहता था। वह हमेशा सोचा करता था कि इस तुनकमिजाज व्यक्ति से उसकी होनेवाली पत्नी निभ पायेगी? दोनों में कहीं कोई बखेड़ा खड़ा तो नहीं हो जायेगा? पता नहीं, भविष्य के गर्भ में क्या-क्या छिपा है। आख़िर पिता के कहे अनुसार ही उसकी शादी तय हुई।

दुलहिन अरविंदा एक संपन्न किसान की इकलौती बेटी थी। चूँकि वह इकलौती बेटी थी, इसलिए माँ-बाप ने उसे बड़े लाड़-प्यार से पाला-पोसा। उससे कोई भी काम करवाते नहीं थे।

कात्यायिनी
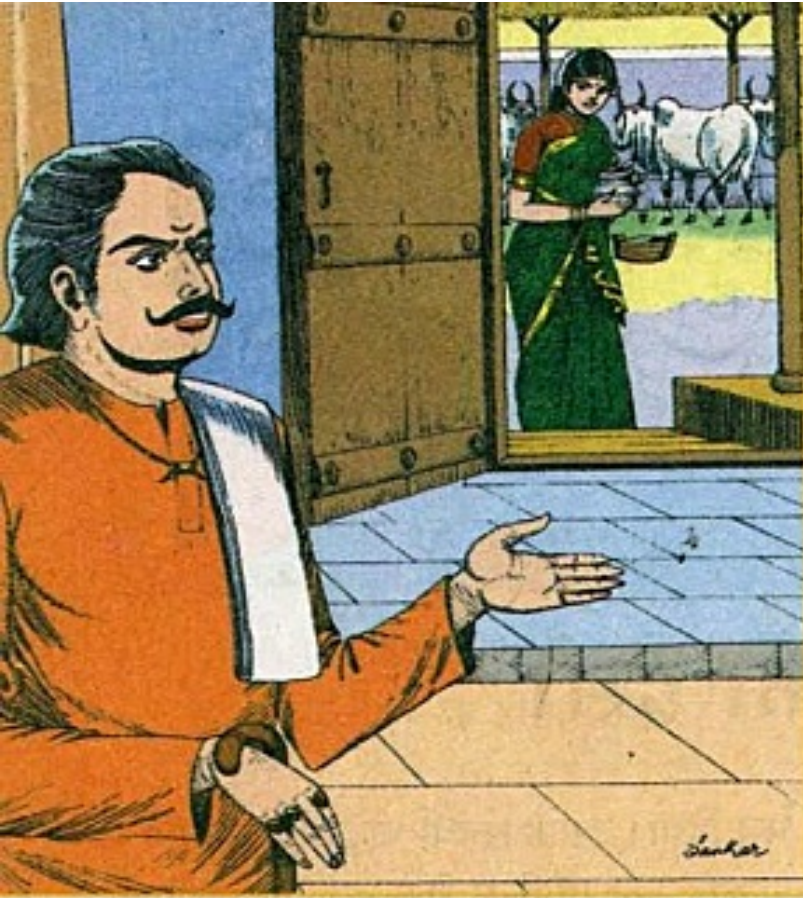
शादी के दूसरे दिन किरीट ने पत्नी अरविंदा को पिता के कडुवे स्वभाव के बारे में सब कुछ बता दिया। उसे यह कहकर सावधान भी किया कि वह चुपचाप सब कुछ झेल ले और कभी भी विरोध न करे। नयी-नयी बहू घर में आयी हुई है, इसलिए दुर्वास ने दो-तीन दिनों तक अपनी नाराजी को काबू में रखा। फिर बाद अपने नौकरों को खुलेआम गालियाँ देने लगा और जो मुँह में आया, कहने लगा।

एक दिन अरविंदा सास का दिया दूध से भरा कलसा पिछवाड़े से ले आ रही थी। यह देखते ही दुर्वास चिल्लाने लगा। तुम्हारी सास को क्या हो गया? वह खुद दूध का कलसा ले आती तो क्या उसकी कमर टूट जाती?

सच तो यह है कि वह नहीं चाहता था कि नयी बहू कोई काम करे। पर उसके रूखे-सूखे स्वर ने और शैली ने अरविंदा को भयकंपित कर दिया। उसके हाथ से कलसा गिर गया और पूरा दूध बह गया। भय के मारे अरविंदा रोने लगी और भागती हुई घर के अंदर चली गयी। इस आकस्मिक घटना पर दुर्वास क्षण-भर के लिए स्तंभित रह गया।

दूसरे दिन दुपहर को दुर्वास बरामदे में बैठा किसी से बातें कर रहा था। तब उसने देखा कि अरविंदा एक चीनी बरतन को कपड़े से साफ़ कर रही है। यह देखते ही क्रोध-भरे स्वर में वह कहने लगा, ''सबके सब नौकर कहाँ मर गये? पेट भर खाकर डकार लेते हैं, पर काम बिलकुल नहीं करते। इनकी खाल उधेड़कर ही रहूँगा। सुनते हो, क्या कोई है वहाँ।''

ससुर की नाराजगी देखकर और उसकी चिल्लाहटें सुनकर अरविंदा भयभीत हो गयी। उसके हाथ का वह बरतन नीचे गिर गया और टूट गया। यों, देश-विदेशों से मंगाये गये बरतन एक-एक करके ज़मीन पर गिरते रहे और टूटते गये। पहली-पहली बार दुर्वास को अपनी तुनक मिजाजी पर शर्म आयी। वह अपने आप पर नाराज़ होने लगा।

एक और दिन जब अरविंदा अपनी सास और ससुर को खाना परोस रही थी तब दुर्वास ने एक तरकारी का स्वाद चखा। बस, वह बौखला उठा, ''क्या नमक का अकाल पड़ गया? मायके में रसोई बनाना जानती तो नहीं

हो, पर परोसना भी नहीं आता?'' ससुर की कड़ुवी बातें सुनकर वह डर गयी और लौटने ही वाली थी कि उसके हाथों से बरतन नीचे गिर गये। वह अपने कमरे में आकर चादर ओढ़कर लेट गयी। दुर्वास को लगा कि मैंने ज्यादती कर दी। धीरे से कह देता कि तरकारी में नमक कम है, तो काफ़ी था। इसके लिए मैंने चिल्लाकर बहू के दिल को ठेस पहुँचायी। उसे अपने किये पर थोड़ा पछतावा हुआ।

उस क्षण से ससुर की कंठध्वनि सुनने मात्र से अरविंदा भय के मारे काँप उठती थी। हाथ में जो भी है, नीचे गिरा देती थी। बहू की इस आदत पर दुर्वास को चिंता हुई और उसने वैद्य को बुलवाया।

वैद्य ने अरविंदा से थोड़ी देर तक बातें कर चुकने के बाद दुर्वास से एकांत में बताया ''देखिये, आपकी बहू आपकी बात-बात पर डरती है। उसका स्वभाव ही कुछ ऐसा है। आप थोड़ा धीरे से बोलेंगे तो अच्छा होगा। वह ठीक हो जायेगी।''

दुर्वास को लगा कि वैद्य की बातों में सच्चाई है। जैसे-जैसे वह अपनी बहू के बारे में और अपने कड़ुवे स्वभाव के बारे में सोचने लगा, क्रमशः उसमें परिवर्तन होने लगा।

दीपावली त्योहार के अवसर पर उसकी बेटियों के परिवारों से सब लोग आये हुए थे। वे सबके सब घर के बीचों-बीच बैठकर ठठाकर हँसते हुए बातें कर रहे थे। वहाँ बेटियाँ, उनके पति, पोते-पोतियाँ और दुर्वास की पत्नी भी बैठे हुए थे। उस समय दुर्वास घर के अंदर आया। बस, एकदम चुप्पी छा गयी। लगता था, सबके मुँह सी दिये गये। वे सबके सब उठकर अंदर जाने ही वाले थे कि दुर्वास ने हँसते हुए कहा, ''आज से मैं भी तुम लोगों के साथ-साथ हँसूँगा और धीमे स्वर में मीठी-मीठी बातें करूँगा। मैं नाराज़ हो भी जाऊँ तो तुम डरो मत। भाग मत जाना। मेरा विरोध करना। आओ, सब लोग बैठ जाओ, आराम से बातें करेंगे।''

दुर्वास की बातों से सब खुश हुए। सबके सब एकसाथ हँस पड़े। घर के वातावरण में कायापलट हो गयी।

कश्मीर की एक लोक कथा

जम्मू और कश्मीर उत्तरी भारत का अंतिम छोर है। कश्मीर की घाटी हिमालय के मध्य में १८००० फुट की ऊँचाई पर स्थित है। यहाँ भूमि को चीरती ऊँचे-नीचे रास्ते बनाती झेलम नदी जीविका कमाने का मुख्य स्रोत है।

यह सब चीजें विभिन्न प्रकार की वन-सम्पदा और जीव-जन्तुओं के साथ मिलकर प्रदेश को 'धरती का स्वर्ग' बना देती हैं।

कश्मीर में सबसे शानदार वृक्ष चिनार का है। यह घाटी में सब जगह पाया जाता है। यह विशाल आकार में उगता है और इसकी पत्तियों का रंग मौसम के अनुसार बदलता रहता है।

इसके जंगल बहुत से पशुओं के घर हैं जैसे पहाडी बकरियाँ, साह, कस्तूरी मृग, भेड़िया, लाल भालू, काला-भालू, सुरागाय और जंगली गधे आदि।

प्रदेश में बहनेवाली मुख्य नदियाँ इनडस, चिनाब, झेलम और रावी हैं। इनके अतिरिक्त कई झरने और झीलें भी यहाँ पाई जाती हैं।

जम्मू इसके मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। जम्मू के विशेष प्रसिद्ध मंदिरों में बहुमाता और रघुनाथ मंदिर है।

अनमोल-उपहार

हिमालय के ऊँचे पहाड़ों के बीच बसा है एक छोटा सा गाँव। यह गाँव तीन तरफ से दुर्गम भू क्षेत्र से घिरा है तथा इसके चौथी ओर एक विशाल झील है। इस गाँव तक पहुँचने का एकमात्र रास्ता झील को पार करके होता है और वह भी अधिकतर संभव नहीं होता जब झील में बर्फ जमी होती है। जो भी हो, गाँव अपने आप में पर्याप्त आत्म निर्भर तथा परिपूर्ण था। उनके पास अपनी आवश्यकता का सब कुछ था, और जो कुछ न होता उसे वे अदला-

बदली के द्वारा (परस्पर-विनिमय-पद्धति के अनुसार) प्राप्त कर लेते।

साल में आठ महीने तक झील के जमे रहने से यह गाँव बाकी पूरे देश से बिलकुल कट सा जाता था। चूंकि वे आपसी व्यापार या लेन-देन केवल वस्तुओं में करते थे अतः गाँववालों ने कभी पैसों का लेन-देन नहीं किया था, न ही उनके पास पैसा होता था। और तो और १९वीं शताब्दी में इन गाँववालों ने एक सिक्का तक नहीं देखा था, यहाँ तक कि उन्होंने इसके बारे में सुना भी नहीं था। ऐसे में कल्पना कीजिए गाँव के उस हो-हुल्लड़ की, जब एक उजली सुबह एक ग्रामवासी ने चाँदी का एक सिक्का पड़ा देखा। दरअसल ऊपर उड़कर जाती हुई किसी चिड़िया ने गलती से वह सिक्का गिरा दिया होगा। सिक्के पर एक तरफ उनके राजा का चेहरा था तथा दूसरी तरफ शाही मुहर। गाँववालों को समझ नहीं आ रहा था कि उसका क्या किया जाए।

''इसे नम्बरदार के पास ले जाओ, उसे पता होगा कि इसका क्या करना चाहिए।'' कुम्हार ने कहा।

''हाँ, उसे कुछ नया तरीका मालूम होगा कि इससे क्या किया जाए।'' दूसरा मछुआरा बोला।

अतः गाँववाले उसे नम्बरदार (गाँव का मुखिया) के पास ले गए, जो गाँव का सबसे

बुद्धिमान व्यक्ति समझा जाता था। वह सिक्का देखकर अचंभित रह गया। इस चमकदार गोल धातु के आकस्मिक आगमन ने सारे गाँव में उत्तेजना और व्याकुलता फैला दी थी। वे सब गाँव के चौबारे में एकत्र हुए और इसके बारे में विस्तार से विवेचना करने लगे। अंत में उन्होंने ने तय किया कि अगले दिन नम्बरदार इसका समाधान प्रस्तुत करेगा।

नम्बरदार ने इस समस्या पर विचार किया। उसने पूरा दिन बेचैनी और रात्रि निद्राविहीन बिताई। अन्ततः नम्बरदार अपने निश्चय के साथ उपस्थित हुआ।

वह एकत्र भीड़ के सामने आकर विस्तार से बोला। ''मित्रो, उसने कहा, ''यह पहला

शाही केसर

केसर सभी मसालों में सबसे अधिक शाही और कीमती है। यह मुख्यतः कश्मीर में श्रीनगर के निकट पैम्पोर नामक स्थान में उगाया जाता है। सदियों से केसर इन प्राचीन खेतों में उगाया गया है।

कश्मीर में केसर की खेती के लिए मिट्टी और जलवायु बहुत अनुकूल है। नीलपुष्प एक-एक कर उगता है जिसमें पीली कंटिकाएँ होती हैं जो तीन नारंगी-लाल वर्तिकाग्रों में बँट जाती हैं। इन वर्तिकाग्रों को सुखाकर दुनिया का सबसे महँगा मसाला बनाया जाता है। एक किलो केसर बनाने के लिए एक लाख पचास हजार वर्तिकाग्रों की आवश्यकता होती है।

सिक्का है जो हम देख रहे हैं। इस पर हमारे राजा की तस्वीर भी है।'' फिर उसने राजा की सिक्के पर छपी तस्वीर को सलामी दी। ''ईश्वर हमारे राजा को समस्त प्रकार की समृद्धि और सफलता प्रदान करे।''

गाँववाले सर्वसम्मति से नम्बरदार के निर्णय से सहमत थे। अब वे इस बात पर विचार करने लगे कि महराज को भेंट प्रदान करने का सबसे अच्छा तरीका क्या होगा।

नम्बरदार ने फिर आगे बढ़कर अपनी राय दी। उसने कहा कि इस प्रकार की भेंट को एक सजी हुई पालकी में रखकर छः बड़े लोगों के द्वारा ले जाया जाना चाहिए, जिन्हें नम्बरदार के द्वारा चुना जाएगा।

अतः गाँववाले पालकी बनाने में एक साथ जुट गए। लकड़हारे ने सर्वोत्तम लकड़ी काटी। बढ़ई ने इन लकड़ी पर काम शुरू किया और एक सुन्दर पालकी तैयार की। कालीन बनानेवालों ने एक ऊनी कम्बल बुना और जुलाहों ने सिल्क का आवरण बनाया जिस पर औरतों ने कढ़ाई की और उसे पालकी के ऊपर डाल दिया गया। ऊनी कम्बल को पालकी के अन्दर सावधानी से बिछाया गया। सिक्के को इस प्रकार रखा जा रहा था मानो वह कोई नवविवाहिता दुलहन हो जिसे उसके पति के यहाँ ले जाया जा रहा हो।

पालकी को झील के पार उतारने के लिए एक नाव तैयार रखी गई थी। औरतों के द्वारा अपने राजा की सफलता के गीत गाते हुए पालकी को नाव तक लाया गया। पालकी को फूलों से सजाया गया था और आवश्यकता की हर वस्तु रखी गई जो लम्बी यात्रा के लिए होनी चाहिए। पालकी को बहुत सावधानीपूर्वक

नाव में रखा गया। गाँववालों ने हाथ हिलाकर विदा किया। बदले में नाव में खड़े नम्बरदार ने भी हाथ हिलाया।

पालकी को सम्मानपूर्ण जगह दी गई और उसका ध्यान भी श्रद्धापूर्वक रखा गया। कोई उसकी तरफ पीठकर नहीं बैठा या खड़ा हुआ। उन्होंने शामको एक लैम्प जलाया और रात भर उसे सुबह होने तक उसे जलाए रखा। उनमें कोई एक रात भर रखवाली के लिए जागता रहा। जब वे दूसरी नावों के पास से गुजरते तो देखनेवाले उत्सुकता से पालकी के बारे में पूछते। किन्तु गाँववाले उन्हें सिर्फ इतना बताते कि वे एक अनमोल उपहार राजा के लिए ले जा रहे हैं। उन्होंने उपहार के स्वरूप को प्रकट नहीं किया।

तीसरे दिन की सुबह वे राजधानी पहुँच गए। नदी के तट पर गाँव के गुरुजनों ने पालकी को कन्धे पर उठाया। अपनी श्रद्धा के प्रतीक रूप में उन्होंने चप्पलें भी उतार दीं। उन्होंने एक स्कार्फ का हिस्सा अपनी पीठ पर बाँध लिया जैसे पुराने सभासद बाँधते थे। उनमें से चार ने पालकी उठाई और एक राजकीय झण्डा उठाए उनके आगे आगे चला। नम्बरदार पालकी के पीछे विनम्र भाव से हाथ जोड़े चला।

वे सभी बहुत प्रसन्न थे, मानों वे एक बहुत मूल्यवान उपहार अपने राजा के लिए ले जा रहे हैं। आने जानेवाले उनके आगमन और आनन्द भाव से बहुत प्रभावित हो रहे थे। नगर के मुख्य द्वार पर कर-अधिकारी देखना चाहता था कि पालकी में क्या है। किन्तु नम्बरदार ने विरोध करके दिखाने से मना कर दिया और कहा, "सर्व प्रथम इसे राजा ही देखेंगे, और किसी को झांकने भी नहीं देंगे।" जब अधिकारी को लगा कि गाँववाले उन्हें हरगिज नहीं देखने देंगे तो उसने छोड़ दिया, और उन्हें नगर के अन्दर जाने दिया।

महल तक पहुँचने के पहले मुख्य रास्ते पर एक छोटा सा जुलूस जा रहा था। चारों तरफ यह खबर जंगली आग की तरह फैल गई कि कुछ सीधे-सादे ग्रामवासी पालकी में राजा के लिए उपहार लेकर आ रहे हैं। रास्ते में देखनेवालों की भीड़ लग गई, वे पालकी और उसके गुप्त उपहार को देखने के लिए उत्सुक थे।

जब गाँववाले महल पहुँच गए तो उन्होंने पहरेदारों से अपने आने का उद्देश्य बताया।

राजा ने पहरेदारों से कहा कि उन्हें अन्दर प्रवेश करने दें और उनसे अपने निजी मेहमानों सा बर्ताव किया। उनके अतिथि-सत्कार ने गाँववालों को भावविभोर कर दिया। उन्होंने राजा की भरपूर प्रशंसा की। जब वे महल के अन्दर गए, उन्होंने पालकी को पूरा सम्मान दिखा दिया। महल के सदस्य उत्सुक थे किन्तु उपहार के बारे में पूछने का साहस न कर सके, कहीं गाँववाले स्वयं अपमानित न महसूस करें।

इस बीच गाँववाले गर्व में डूबे थे, ऐसा आतिथ्य उन्हें मिल रहा था। "राजा पर हमारा उपहार देखकर कैसी प्रतिक्रिया होगी? उन्हें हमारे लिए क्या पारितोषिक ठीक लगेगा?" नम्बरदार ने जानना चाहा। गाँव के बड़े अपने-अपने विचार के साथ आगे आए। राजा ने अपने मध्याह्न के आराम के पश्चात गाँववालों के लिए आदेश भेजा।

सभा में प्रधानमंत्री तथा अन्य सम्मानित लोग उपस्थित थे। नम्बरदार ने अन्दर प्रवेश किया और सम्मानपूर्वक अभिवादन किया। दूसरों ने पालकी को फर्श पर रखा और सम्मान में खड़े हो गए। तब नम्बरदार ने राजा को संबोधित किया, "माननीय राजन् हम लोग आपके राज्य की झील के सुदूर गाँव से आए हैं। मैं और मेरे साथ हमारे गाँव के ये गुरुजन आपको एक अनोखा उपहार भेंट करना चाहते हैं। हमने इस सारी दूरी को केवल अपने कर्त्तव्य भाव से प्रसन्नतापूर्वक तय किया है। मेरा आपसे निवेदन है कि आप हमें हमारी विनम्र भेंट को आपके सम्मानीय चरणों में रखने की आज्ञा दें।

"अच्छे लोग हैं। मैं तुम्हारी राजभक्ति से प्रभावित हूँ। जो कष्ट उठाकर तुम लोग यह भेंट इतनी दूर से लाए हो, अब वह मुझे दे सकते हो।"

तब नम्बरदार ने पालकी से परदा उठाया और अपना हाथ पालकी के अन्दर डाला। उसने आसपास टटोला और एकदम से हैरान हो गया। फिर उसने चारों परदे उठाए और अन्दर खोजा। उसने अपने बड़े लोगों को बुलाया और उनके कान में कुछ कहा। बड़े लोग भी पालकी के

चारों तरफ जमा हो गए पर कुछ न मिला। उन्होंने पूरी तरह से पालकी छान मारी पर कहीं भी कीमती उपहार न मिला!

प्रधानमंत्री अधीरता से बोला, ''तुम लोगों को और कितना समय लगेगा, गँवारो? राजा को अन्य कई महत्वपूर्ण काम भी देखने हैं।''

गाँववाले इस बारे में कुछ न कर सके। अपनी उत्सुकता में वे पालकी को इस प्रकार उठाते रहे कि सिक्का कहीं गिर गया।

प्रधानमंत्री गाँववालों को राजा के अपमान हेतु दण्ड देना चाहता था। उसने राजा से कहा कि उन्हें जेल में फेंक दिया जाए।

''महाराज, हम आपका अपमान करने की बात सोच भी कैसे सकते हैं। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि मुझे आपको सब घटना चक्र बताने की अनुमति दी जाए।'' नम्बरदार ने कहा।

राजा को लगा कि ये गाँव के लोग सरल और निष्ठावान हैं जो उसे कुछ भेंट करना चाहते थे, न कि उसका अपमान, किन्तु वह उनकी सरलता की परीक्षा भी करना चाहता था।

उसने आदेश दिया कि उन्हें एक कमरे में रखा जाए और उन्हें सारी सामग्री देकर अपना भोजन बनाने की आज्ञा दी। उन्हें जलते कोयले की जगह माचिस दी गई। बेचारे गाँववासी जानते ही नहीं थे कि उसे कैसे जलायी जाये, और उन्होंने जो कुछ खा सकते थे कच्चा ही खा लिया। जब राजा ने यह सुना तो उसे उनके भोलेपन पर विश्वास हो गया।

उसने उनकी पूरी कथा सुनी। वह उनकी सरलनिष्ठा पर दिल खोल कर हँसा। उसने नम्बरदार को चाँदी का एक सिक्का दिया और उससे पुनः ग्रहण किया। ''अब तुम लोगों की भेंट मेरे द्वारा स्वीकार कर गई है।'' राजा ने कहा।

राजा ने उन्हें उचित उपहार भेंट किए और उनके गाँव की भूमि का 'कर' और किराया भी कम दिया। महल से जाते समय गाँववालों ने राजा का खुले हृदय से धन्यवाद किया।

जब ये ग्रामवासी अपने गाँव पहुँच गए, उन्होंने ल७६यह कथा सुनाई कि किस प्रकार वे कैदखाने में बन्द होने से बच गए।

अपने भारत को जानो

१. रेलवे इंजिन का निर्माण प. बंगाल के चित्तरंजन कार्यशाला में किया जाता है। पहला इंजिन कब निर्मित किया गया?
   a) १९५०-५१ b) १९५५-५६
   c) १९५९-६० d) १९६१-६२

२. अशोक के फ़रमान किस भाषा में लिखे गये?
   a) मगधी b) ब्राह्मी
   c) सौरसेनी d) पाली

३. ऑल इंडिया हरिजन संघ की स्थापना किसने की?
   a) बी.आर. अम्बेडकर b) गाँधीजी
   c) जगजीवन राम d) डी.के. कर्वे

४. कौन संत जाति से चर्मकार थे?
   a) कबीर b) साधना
   c) रविदास d) नामदेव

५. केन्द्र-शासित राज्यों में सबसे बड़ा कौन राज्य है?
   a) दिल्ली
   b) पांडिचेरी
   c) अंडमान एण्ड निकोबार द्वीप समूह
   d) चण्डीगढ़

६. चित्र में राष्ट्रीय नेता कौन हैं?

७. एक धर्मपरायण मुस्लिम को दिन में कितनी बार नमाज पढ़नी चाहिए?
   a) दो बार b) तीन बार
   c) चार बार d) पाँच बार

८. किस राज्य में कारखानों की संख्या सबसे अधिक है?
   a) तमिलनाडु b) महाराष्ट्र
   c) गुजरात d) आन्ध्र प्रदेश

(उत्तर अगले महीने)

अक्तूबर प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. छत्तीसगढ़, रायपुर
२. राजस्थान
३. लॉर्ड हार्डिंग
४. सुन्दरलाल बहुगुना
५. करनूल
६. १९१९

विघ्नेश्वर

उधर यह सारी गड़बड़ हो रही थी, फिर भी नौकर गहरी नींद सो रहा था। उसके बाजू में ही पत्तों व फूलों से भरी गणेशजी की मूर्ति थी। सारी जमीन गन्ने के रस से भीगकर कीचड़ जैसी हो गई थी। पहरा देनेवालों को बुलवाकर पूछा गया, तो उन लोगों ने जवाब दिया-"बड़ी रात बीतने तक हम जागते रहें। हमें बिलकुल पता नहीं कि कब हमारी आँख लग गई। इस बीच हाथी के चिंघाड़ने की आवाज़ सुनकर हमारी आँखें खुल गईं। उस अंधेरे में एक बहुत ही बड़ा सफेद हाथी हमें दिखाई दिया। वह सारी ईख चर रहा था। हमें डर लगा, इसलिए हम वहाँ से भाग खड़े हुए।"

जमीन्दार के भीतर बड़ा परिवर्तन हुआ। वह नौकर के सामने गिरकर साष्टांग दण्डवत करने लगा। जमीन्दार की पत्नी विघ्नेश्वर की मूर्ति को प्रणाम करके बोली-"भगवान, इतने साल बाद आपने हम पर अनुग्रह किया, हम लोग धन्य हो गये।"

इस अद्भुत घटना का समाचार सुनने पर वहाँ लोगों की भीड़ लग गई। हाथी के पैरों के पड़ने से जमीन में जो गड्ढे हो गये थे, उनमें गन्ने का रस भर गया था। लोग उस रस को तीर्थ के रूप में सेवन करते हुए गन्ने के थोथे को विघ्नेश्वर का महा प्रसाद मानकर अपने साथ ले जाने लगे।

नौकर की पत्नी अपने बच्चे के साथ विघ्नेश्वर की प्रतिमा को प्रणाम करके बोली-"भगवान, मैंने आज तक कभी एक पूजा-पत्र देकर आपकी अर्चना नहीं की है। आपके वास्ते मैंने जो गन्ना भेजा, वह आपको प्राप्त नहीं हुआ। हाथी के रूप में ही सही, आप सबको दिखाई दिये; पर मुझे दिखाई नहीं दिये। मैं तो मूर्खा हूँ, गहरी नींद
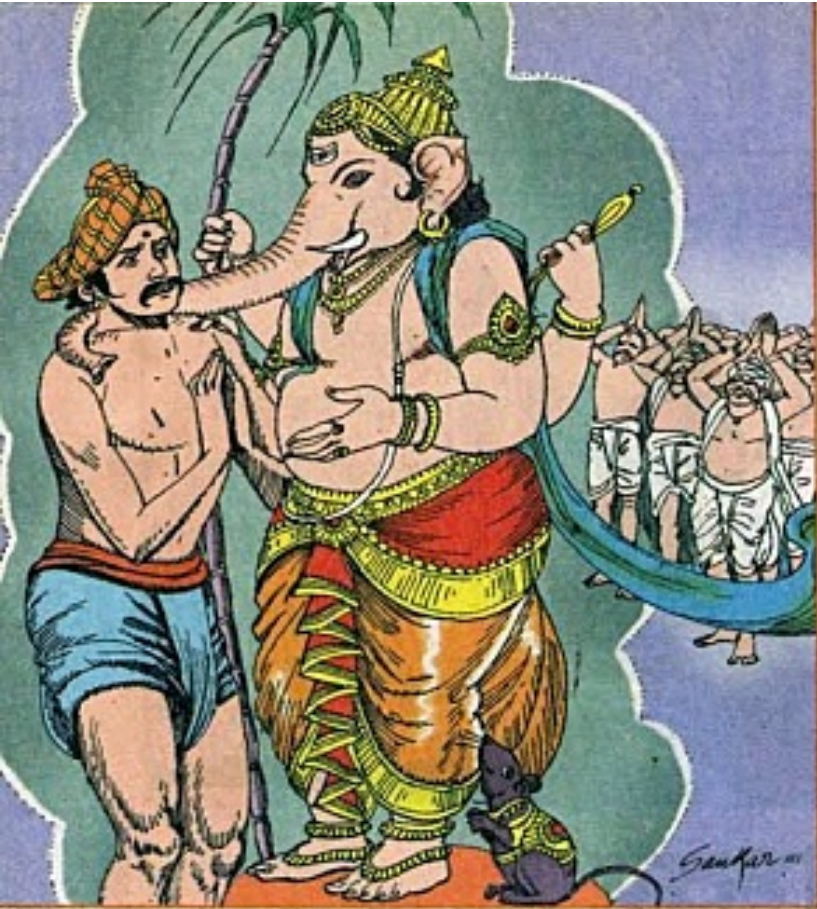
सो रही थी।'' यों कहकर वह बच्चे की तरह फूट-फूटकर रोने लगी।

उस समय विघ्नेश्वर की प्रतिमा की जगह गन्ना लेकर सामने विघ्नेश्वर का साक्षात्कार हुआ। नौकर का लड़का जो गन्ना ले गया था, वही उनके हाथ में था।

विघ्नेश्वर ने नौकर को अपनी सूँड़ से निकट खींच लिया, अभय हस्त की मुद्रा में उसका सिर निहारते हुए बोले, ''बेटा, जाति, वर्ण, आचार, रीति-रिवाज आदि मैंने कभी पैदा नहीं किये, इन सबकी कल्पना मनुष्य ने ही की है! मेरे सामने छोटे-बड़े का कोई भेद-भाव नहीं है। इसीलिए मैंने तुम्हें दर्शन दिये हैं!'' यों कहकर वे अंतर्धान हो गये। सब लोग हाथ जोड़कर प्रणाम करते हुए नौकर से बोले, ''तुम्हारी वजह से हमें गणेशजी के दर्शन हुए हैं!''

पावन मिश्र ने इन शब्दों के साथ अपनी कहानी समाप्त की, ''इक्षु का मतलब ईख है। सहस्र इक्षु का मतलब एक हज़ार ईखों वाला गणपति! इसलिए वे सहस्रेक्षु गणपति के रूप में पूजे गये। इसके बाद वहाँ पर ईख हाथ में लिये हुए विनायक की प्रतिमा प्रतिष्ठापित हुई और वहाँ पर एक विशाल मंदिर बनाया गया।''

वैसे पावन मिश्र ने मंदिर के मण्डप में चित्रित सभी चित्रों की कहानियाँ सुनाईं, लेकिन मंदिर के मुख द्वार पर चित्रित चित्र की कहानी रह गई थी। प्रति दिन उस चित्र को निर्निमेष देखनेवाला एक युवक पावन मिश्र के निकट पहुँचा तथा उसके चरणों में प्रणाम करके बोला, ''महाशय, इस मंदिर के मण्डप के चित्रों को किसने चित्रित किया है? उस महा शिल्पी की कहानी सुनने की मेरी बड़ी कामना है! मुख द्वार पर अंकित चित्र की भी कहानी सुनाने की कृपा करें!''

इस पर पावन मिश्र उस युवक की ओर स्नेह पूर्ण दृष्टि प्रसारित कर बोला, ''बेटा, तुम्हारी इन बातों से ऐसा मालूम होता है कि तुम एक चित्रकार हो। मुख द्वार पर अंकित चित्र मेरे लिए भी बहुत प्यारा है। तुमने जिस महा शिल्पी की बात उठाई, उसकी अपनी एक अनोखी कहानी है। सुनो!'' पावन मिश्र ने बोलना शुरू किया, ''साधुओं की जमात में एक बार चौदह साल का एक किशोर वातापि नगर में आया और वह हमेशा के लिए गणपति के मंदिर में रह गया।

वह खुद अपने नाम-धाम का पता नहीं

जानता था। उसके भाल पर किसी बड़े घाव का निशान था जिससे ऐसा मालूम हो रहा था कि चोट के लगने से वह अपनी स्मृति खो बैठा है। वह बोलता न था, हमेशा दीवारों पर चित्र अंकित किया करता था। मण्डप की फ़र्श की चट्टानों पर चित्र खींचते वक़्त उसका चेहरा पूर्ण चन्द्रमा जैसा दमकता रहता। इसलिए उसे लोग चित्रानंद पुकारते थे। सदा बिघ्नेश्वर के चित्र बनाते रहने के कारण उसे विघ्नेश्वर चित्रकार कहते थे। उसका एक नाम 'विचित्र' भी था। अंत में 'विचित्र' नाम ही उसके लिए शाश्वत हो गया।

उस समय तक गजानन पंडित काफी वृद्ध हो चुका था। वह रोज शाम को अपने घर पर ही बच्चों को बिघ्नेश्वर की कहानियाँ सुनाया करता था। चबूतरे पर बैठे 'बिचित्र' उन कहानियों को बड़े ही ध्यान से सुना करता था। दूसरे दिन उस कहानी-संबंधी चित्र किसी दीवार पर प्रत्यक्ष हो जाया करता था।

गजानन पंडित 'विचित्र' के प्रति अत्यंत वात्सल्य भाव रखता था। घर के भीतर बुलाने पर भी वह ड्योढी के बाहर बैठे कहानियाँ सुनता और यही जवाब देता- ''पंडितजी, यहीं पर बैठे सुनने पर मुझे ऐसा प्रतीत होता है, मानो आप मुझ अकेले को ही ये कहानियाँ सुना रहे हैं !'' 'बिचित्र' के चित्रों को देख गजानन पंडित खुशी से फूला न समाता और विशेष रूप से उसे विघ्नेश्वर से संबंधित कई कहानियाँ सुनाया करता था।

'विचित्र' के पीछे सदा बच्चों की भीड़ लगी रहती। उसके चित्रों को चुपचाप देखते हुए बच्चे प्रसन्न हो जाते और मौक़ा पाकर वे लोग भी छोटे-छोटे चित्र बनाते। इस तरह गाँव के कई बच्चे चित्रकला में प्रवीण हो गये।

दिन-भर विचित्र गली की दीवारों पर कोयले या किसी चीज़ से चित्र बनाता, वातापि गणपति के मंदिर में बँटनेवाला प्रसाद खाकर अपना पेट भर लेता, रात को मंदिर के मण्डप की सीढ़ियों पर या गाँव के चबूतरों पर सो जाता।

वह जिस बस्ती में सोता, वे मकान ज्यादातर चर्मकारों, कुम्हारों या निम्न जाति के लोगों के होते। वहाँ के सब लोग विचित्र को अपनी जान से ज्यादा प्यार करते थे। वह रात के किसी भी वक़्त पहुँच जाता, तब वे लोग उसको खाना खिलाते और उसके सोने का उचित इंतजाम करके ही स्वयं सोते थे।
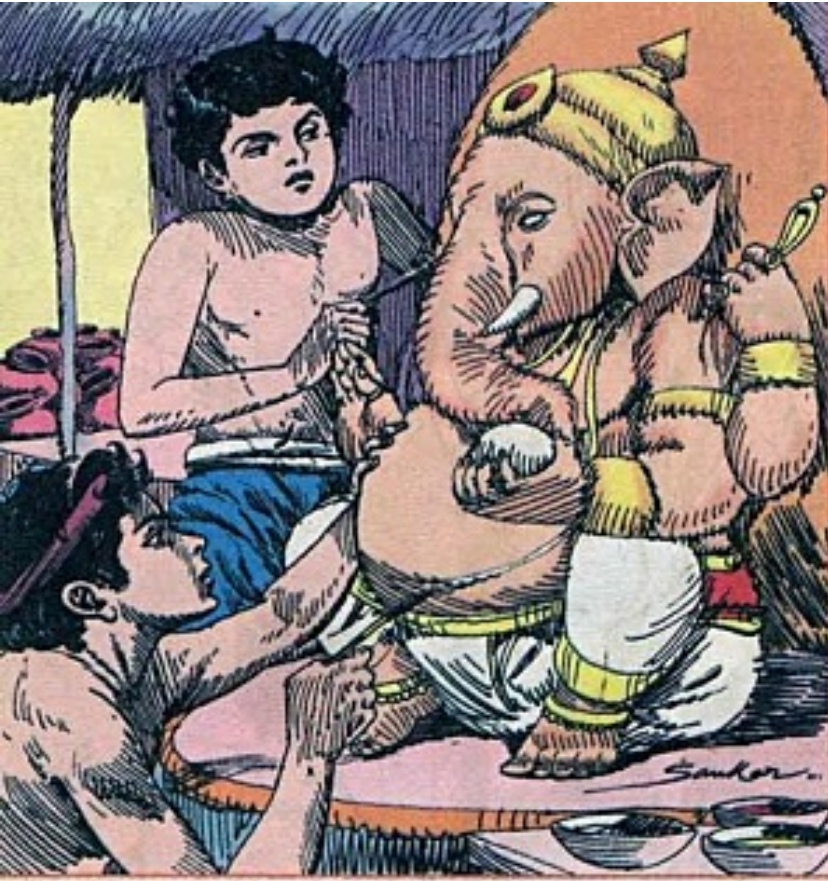
इस तरह विचित्र पल कर बड़ा हो गया। वैसे विचित्र अपने संबंध में थोड़ी सी भी जानकारी नहीं रखता था, मगर उसके माँ-बाप, भाई वगैरह सब लोग जीवित थे।

दर असल वातापि नगर से थोड़ी दूर पर बसे एक गाँव में मध्य वित्त परिवार में विचित्र का जन्म हुआ था। अपने पिता की प्रेरणा से उसने बचपन में ही चित्र बनाना सीख लिया। आखिर भाई व भाभियों ने खीझ कर उसे घर से निकाल दिया। बालक विचित्र बचपन से ही विघ्नेश्वर के प्रति भक्ति रखता था। वह वातापि नगर के लिए चल पड़ा। रास्ते में उसे कहीं खाना नहीं मिला। इस वजह से वह इतना कमज़ोर हो गया कि एक जगह वह एक चट्टान पर गिर पड़ा। चोट के लगने से वह बेहोश हो गया। ऐसी हालत में साधुओं की एक जमात ने उसे बचाया और वे लोग विचित्र को वातापि नगर में ले आये। यही उसके बचपन की कहानी है।

एक वर्ष बाद वातापि नगर में विनायक चतुर्थी के दिन एक प्रदर्शनी हुई।

उस उत्सव के दिन आदम कद की गणेश की मूर्तियाँ निर्मित करनी थीं। वे मूर्तियाँ चित्रकला की रमणीयता से पूर्ण हों और विविध प्रकार के वर्णों से सुशोभित हों, ऐसी मूर्तियों की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। उनमें से श्रेष्ठ मूर्ति का चुनाव करके नव रात्रि के उत्सव मनानेवाले प्रबंधक द्वारा उस मूर्ति के निर्माता को एक हज़ार स्वर्ण मुद्राएँ भेंट स्वरूप देने की परिपाटी थी। साथ ही नगरपालिका के अधिकारी उस शिल्पी को रत्न खचित स्वर्ण कंगन पुरस्कार के रूप में दिया करते थे।

उस अवसर पर मूर्तियों की प्रतियोगिता की जो प्रदर्शनी हुई, उसमें दरबारी शिल्पी और देश-भर के कलाकारों ने बहुमूल्य वर्ण व रंग, सोने के मुलम्मे तथा रंगीन पत्थर मंगवा कर प्रतिमाएँ बनाईं और उस प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया।

शिल्पी विचित्र के एक कुंभकार मित्र था। विचित्र के आदेशानुसार उसने मिट्टी से विघ्नेश्वर की प्रतिमा बनाई। विचित्र ने चूना, हरी मिट्टी, लाख तथा पत्तों के रसों का प्रयोग करके मूर्ति को विविध प्रकार के वर्णों से सजाया।

मगर विचित्र के द्वारा निर्मित उस रंगीन प्रतिमा को प्रमुख शिल्पियों ने प्रदर्शनी में रखने से मना कर दिया। पर विचित्र ने प्रदर्शनी के

प्रबंधकों से निवेदन किया, ''महाशयो, कृपा करके मेरी प्रतिमा को भी सभी प्रतिमाओं के अंत में प्रदर्शित करवाने का इंतजाम कीजिए। मैंने भी अपनी थोड़ी सी श्रद्धा व भक्ति से प्रेरित होकर अपनी शक्ति भर विघ्नेश्वर की प्रतिमा में रंग भर दिये हैं। इसलिए विघ्नेश्वर की उन महान प्रतिमाओं की पंक्ति के छोर पर अपनी प्रतिमा को भी देखने की कामना करता हूँ! इससे बढ़कर मेरे मन में और कोई कामना नहीं है !''

मगर प्रमुख शिल्पियों ने यह कहकर विचित्र को दुत्कार दिया, ''तुम्हारे नाम-धाम, जाति-वर्ण और गोत्रों का कुछ पता नहीं है। तुम हमेशा नीच जाति के लोगों के बीच उठते-बैठते रहे हो! ऐसे निम्न वर्णवाले तुम्हारे हाथों की प्रतिमा को ् व वंश के प्रतिष्ठित महान शिल्पियों के द्वारा निर्मित प्रतिमाओं के बीच प्रदर्शित करने की योग्यता तुम नहीं रखते!'' ये बातें सुन विचित्र का दिल बैठ गया। वह बड़ा निराश हो रोने लगा।

इसपर शिल्पी विचित्र को उसके कुंभकार मित्र ने समझाया, ''प्रदर्शनी के मण्डप में तुम्हारी प्रतिमा को नहीं रखा तो कोई बात नहीं; चलो, हम इस मूर्ति को किसी और जगह रखेंगे।'' इसके बाद प्रदर्शनीशाला के निकट एक केले के पौधे के तने के पास उसने विघ्नेश्वर की प्रतिमा को रखा और विचित्र को अपने साथ बैठा लिया।

उधर प्रदर्शनीशाला में बड़े लोग भारी संख्या

में जमा होकर वहाँ की प्रतिमाओं को देखते, उनके निर्माता शिल्पियों के द्वारा प्रयोग किये गये वर्णों की कीमत का मूल्यांकन करते,उन शिल्पियों के पद, उनके उच्च वर्ण और उनकी कला की प्रशंसा करते थकते न थे, मगर सारे बच्चे विचित्र के द्वारा निर्मित विनायक की प्रतिमा के पास पहुँचकर कोलाहल करते हुए'बड़ी उत्सुकता के साथ उस प्रतिमा का अवलोकन करने लगे। उस समय आसमान से टपकी जुड़वीं विद्युत लताओं जैसी दो युवतियाँ प्रदर्शनी शाला में आ पहुँचीं। उनके शरीरों पर शोभित अपूर्व रत्नाभूषण आँखों को चौंधियाने लगे।

लोग उन तरुणियों को देख विस्मय में आ गये। तब उन रमणियों में से बड़ी युवती बोली, ''हम कलानंद नगर की निवासिनी हैं ! हमें जो प्रतिमा पसंद आयेगी, उसे दस हज़ार स्वर्ण मुद्राएँ पुरस्कार के रूप में समर्पित करेंगी। इसी वास्ते हम यहाँ पर आई हैं।'' इन शब्दों के साथ अपने हाथमें सुशोभित सोने की जरीदार थैली को हिलाने लगी। इस पर सभी शिल्पी अपनी प्रतिमाओं के पास जा खड़े हुए। ''मेरी दीदी प्रसन्नवदना बड़ी गायकी हैं। यही नहीं, पेटू भी हैं ! 'नैवेद्य पुष्टि, प्रतिमा पुष्टि के बाद ही गात्र पुष्टि है' अपनी तोंद बढ़ाकर गाकर देखो। इन सिद्धांतों के लिए सच्चा उदाहरण मेरी दीदी प्रसन्न वदना है !'' यों कहते छोटी युवती ने अपने पैरों में बंधी घुंघुरुओं की मधुर ध्वनि की।

''मेरी छोटी बहन मोहना बड़ी बातूनी है। इससे बढ़कर वह एक कुशल नर्तकी है ! देखने में वह छोटी मुन्नी जरूर लगती है, मगर वह मुझको ही उठाकर चक्र की तरह घुमा सकती है ! ऐसी सामर्थ्य रखती है वह !'' प्रसन्नवदना ने कहा।

''हमारे द्वारा गवाना और नृत्य कराना इंद्र और कुबेर के लिए भी संभव नहीं है ! हमने मनौती की है कि ऐसे गीत व नृत्य हम उसी प्रतिमा के सामने प्रदर्शित करेंगी जो हमें अच्छी लगती है !'' मोहना ने कहा।

उनकी बातों को मंत्र-मुग्ध हो सुनने वाली भीड़ अनायास ही हट गई। इस पर दोनों युवतियाँ आगे बढ़ीं। *(अगले अंक में समाप्य)*
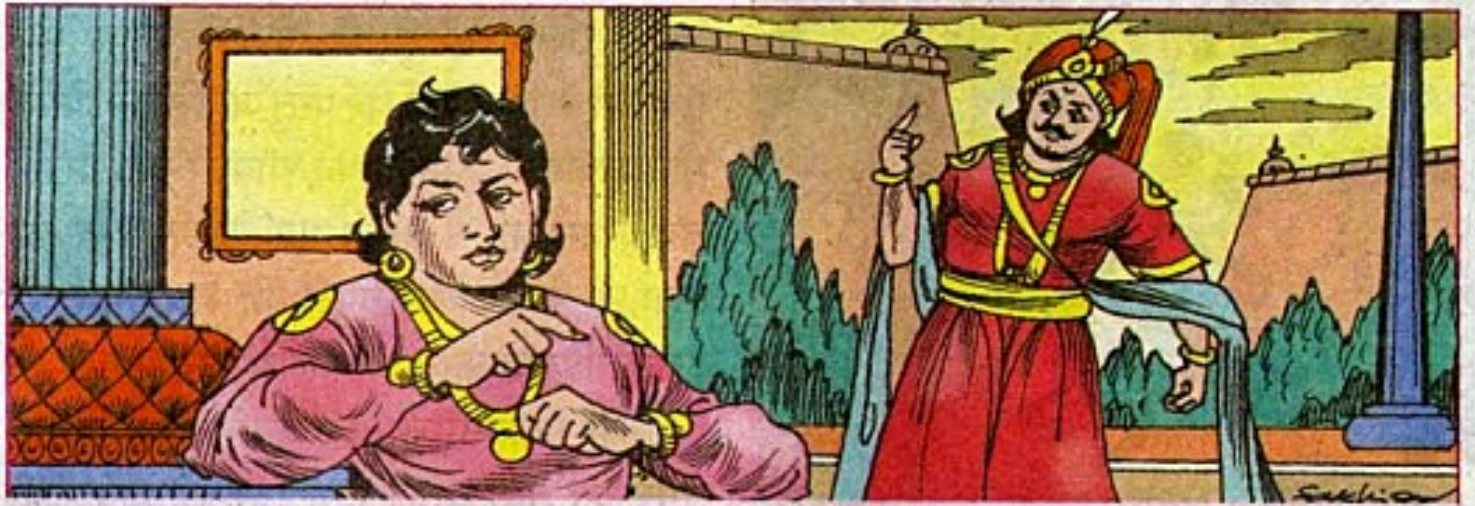
जयसिंह

श्यामसिंह विजयपुरी का शासक था। उसका एकमात्र पुत्र जयसिंह उसका वारिस था। अगल-बगल के छोटे-छोटे राज्यों को श्यामसिंह ने अपने अधीन कर लिया और विजयपुरी को विशाल और दृढ़ बनाया।

उसके पुत्र जयसिंह ने शस्त्रों व राजनीति में विद्या पायी और उनमें वह निष्णात बना। श्यामसिंह की हार्दिक आकांक्षा थी कि उसका पुत्र जयसिंह भी उसी के समान दक्ष राजा बने। पर जयसिंह को इसमें कोई अभिरुचि नहीं थी। वह सदा सोच में मग्न रहता था, चित्रकारी करता रहता और राजभवन में ही अधिक समय बिताता था।

अपने पुत्र को संतुष्ट और उत्साहपूरित देखने के लिए श्यामसिंह ने अद्‌भुत नर्तकियों के नृत्यों की व्यवस्था की। संगीत विद्वानों को बुलाकर संगीत सभाओं की योजना की। पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। जयसिंह में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।

जयसिंह कभी-कभी राज्य के दक्षिण में स्थित पहाड़ी क्षेत्रों के रमणीय प्राकृतिक दृश्यों व उनकी सुंदरता देखने जाया करता था और कुछ दिनों तक वहीं रह जाता था। जयसिंह का यह विचित्र व्यवहार राजा को बखूबी मालूम था।

एक दिन श्यामसिंह ने अपने बेटे से कहा, ''पुत्र, तुम्हारी इस उदासीनता का, जीवन के प्रति तुम्हारी इस अनासक्ति का कारण मैं नहीं जानता। उमड़ते हुए समुद्र में उठते-गिरते लहरों की तरह की इस उम्र में तुमने चुप्पी साध रखी। किसी के भी प्रति अपनी आसक्ति प्रकट नहीं करते हो। जब देखो, खोये रहते हो। क्या मैं इसका कारण जान सकता हूँ?''

जयसिंह ने धीमे स्वर में कहा, ''पिताश्री,

कोई विशेष कारण नहीं है। मुझे अंतःपुर के इन आडंबरों में, विलासपूर्ण जीवन में विश्वास नहीं है। मैं तो इनसे तंग आ गया हूँ। मेरा मन किसी नयेपन की खोज में है। राजभवन से दूर प्रांतों में जाना चाहता हूँ। कृपया अनुमति दीजिए।''

श्यामसिंह ने इसका तुरंत कोई उत्तर नहीं दिया। थोड़ी देर तक सोचने के बाद कहा, ''पुत्र, तुम विजयपुरी के होनेवाले राजा हो। मेरी बात मानो। कुछ कन्याओं के चित्र देखो और उनमें से किसी कन्या को चुनकर विवाह कर लो। वैवाहिक जीवन अवश्य ही तुममें उत्साह भरेगा और राज्य के प्रति तुममें आसक्ति जगायेगा। यह मेरा विश्वास है और आज्ञा भी।''

यह कह चुकने के बाद श्यामसिंह अपने पुत्र को कलामंदिर में ले गया, जहाँ राजकुमारियों के चित्र सुरक्षित रखे हुए थे। एक से बढ़कर एक सुंदरियों के चित्र वहाँ थे। परंतु जयसिंह ने किसी भी राजकुमारी के चित्र को चाव से नहीं देखा। जब श्यामसिंह ने अपने पुत्र के इस रुख को देखा तो उसने साकेतपुरी की राजकुमारी से उसका विवाह करने का निर्णय लिया।

कुछ ही दिनों के बाद जयसिंह का विवाह संपन्न हो गया। उस दिन रात को जब नयी दुलहिन अपने पति की प्रतीक्षा कर रही थी, तब जयसिंह ग़ायब हो गया। किसी को भी मालूम नहीं हुआ कि वह कहाँ चला गया। इस घटना ने उसकी पत्नी मरुद्वती देवी को दुख में डुबो दिया। उसने केवल जयसिंह का चित्र मात्र देखा था। उसके मुख पर प्रस्फुटित कांति व वीरता देखकर वह मन ही मन जयसिंह की आराधना करने लगी।

उस दिन रात को, किसी को बताये बिना जयसिंह घोड़े पर सवार होकर दिशाहीन होकर चला गया। वह बहुत थक गया, उसे भूख लगने लगी, पानी पिये बिना उससे रहा नहीं गया। वह पानी की खोज में लग गया। आख़िर जंगल में उसने एक सरोवर देखा।

जयसिंह घोड़े से उतरा और सरोवर की ओर बढ़ते हुए अकस्मात् रुक गया। उसने उस सरोवर में देखा, स्वच्छ सरोवर के जल में कली की तरह तैरती हुई एक सुंदरी को। उस युवती को देखते वह अपने आपको भूल गया। थोड़ी देर बाद वह युवती सरोवर से बाहर आ गयी। एक पुरुष को

देखकर वह ज़ोर से चिल्लानेवाली ही थी कि जयसिंह ने इशारे से उसे ऐसा करने से मना किया। उसने इशारों के द्वारा बताया कि वह उसे हानि पहुँचानेवालों में से नहीं है।

फिर उसके नज़दीक आकर बड़े ही मृदु स्वर में उसने उस युवती से कहा, "सुंदरी, डरो मत। मैं परदेशी हूँ। प्यासा हूँ। क्या मैं जान सकता हूँ, तुम कौन हो? गंधर्व कन्या हो या किन्नर कन्या? तुम्हारे बारे में जानने की मेरी तीव्र इच्छा है।"

उस युवती ने अपने आपको संभालते हुए कहा, "मेरा नाम चांदनी है। पास ही रहती हूँ। एक छोटे सामंत राजा की पुत्री हूँ। अच्छा इसी में है कि आप तुरंत यहाँ से चले जाएँ।"

उसकी बातों को सुनकर उसमें उल्लास और उत्साह भर आये। उसने उसी क्षण निश्चय कर लिया कि जो भी हो, कुछ अवधि तक जंगल में, पास ही की पहाड़ी गुफ़ाओं में, इन वृक्षों की साया में प्रशांत जीवन बिताऊँगा।

उसने अपनी यह इच्छा जाहिर की तो उस सुंदरी ने बताया कि हो सकता है, मेरे लोग आपको हानि पहुँचाये। फिर भी उसकी बातों की परवाह किये बिना जयसिंह ने वहीं रह जाने की जिद की। तब उस सुंदरी ने उसे एक पहाड़ी गुफ़ा में रहने की सलाह दी और वचन भी दिया कि वह उसके लिए हर रोज़ खाना ले आयेगी। फिर वह वहाँ से चली गयी।

उस दिन से लेकर चांदनी, अपने निवास स्थल से जयसिंह के लिए साधारण भोजन के

साथ-साथ स्वादिष्ट फल और मीठा शहद आदि भी ले आती रही।

एक दिन वह चित्रलेखन के लिए आवश्यक सामग्री भी ले आयी। उसने जयसिंह से बताया कि यह सामग्री उसे जंगल में कहीं मिली है।

चित्रलेखन की सामग्री पाकर जयसिंह में अत्यधिक उत्साह भर आया। उसने तुरंत कूँची चलायी और अनेक भंगिमाओं में चांदनी के चित्र को चित्रित किया।

यों एक सप्ताह बीत गया। एक दिन सूर्योदय के समय चांदनी जयसिंह से मिलने आयी। वह बड़ी ही व्याकुल लग रही थी। लग रहा था, किसी गंभीर समस्या से होते हुए गुज़र रही हो। उसने घबराये हुए स्वर में कहा, ''महोदय, आप यहाँ से तुरंत चले जाइये। मेरे लोगों को आपका पता चल गया। बिना किसी हथियार के आप उनका सामना नहीं कर सकते।''

उसकी इन बातों से डरे बिना जयसिंह ने कहा, ''चांदनी, तुमने मेरे निरुत्साह को भगा दिया, मेरी स्तब्धता दूर कर दी। मुझमें प्राण फूंका। मैं तुमसे अलग होकर जीवित नहीं रह सकता। तुम्हें राजधानी ले जाऊँगा और माता-पिता की अनुमति लेकर तुमसे विवाह रचाऊँगा।''

दूसरे ही क्षण वृक्षों के पीछे से महाराज श्यामसिंह बाहर आते हुए कहने लगे, ''पुत्र, तुम्हारी इच्छा अवश्य पूर्ण होगी। यह कोई और नहीं है, तुम्हारी धर्मपत्नी मरुद्वती ही है।''

आश्चर्य में डूबे जयसिंह को प्रणाम करती हुई मरुद्वती ने कहा, ''स्वामी, मुझे क्षमा कीजिए। मैं मरुद्वती ही हूँ। आपका पीछा करती हुई जंगल में आयी। अपना पत्नी-धर्म निभाया। इसमें मुझसे कोई त्रुटि हो गयी हो तो क्षमा कीजिए। यह जो भी हुआ, महाराज के आदेशानुसार ही हुआ।''

इस घटना के एक महीने के अंदर ही श्यामसिंह ने शासन का भार जयसिंह को सौंपा। उसने बड़ी ही दक्षता के साथ राज्य की बागडोर संभाली, प्रजा को सुखी रखा और साबित कर दिया कि वह योग्य पिता का योग्य पुत्र है।
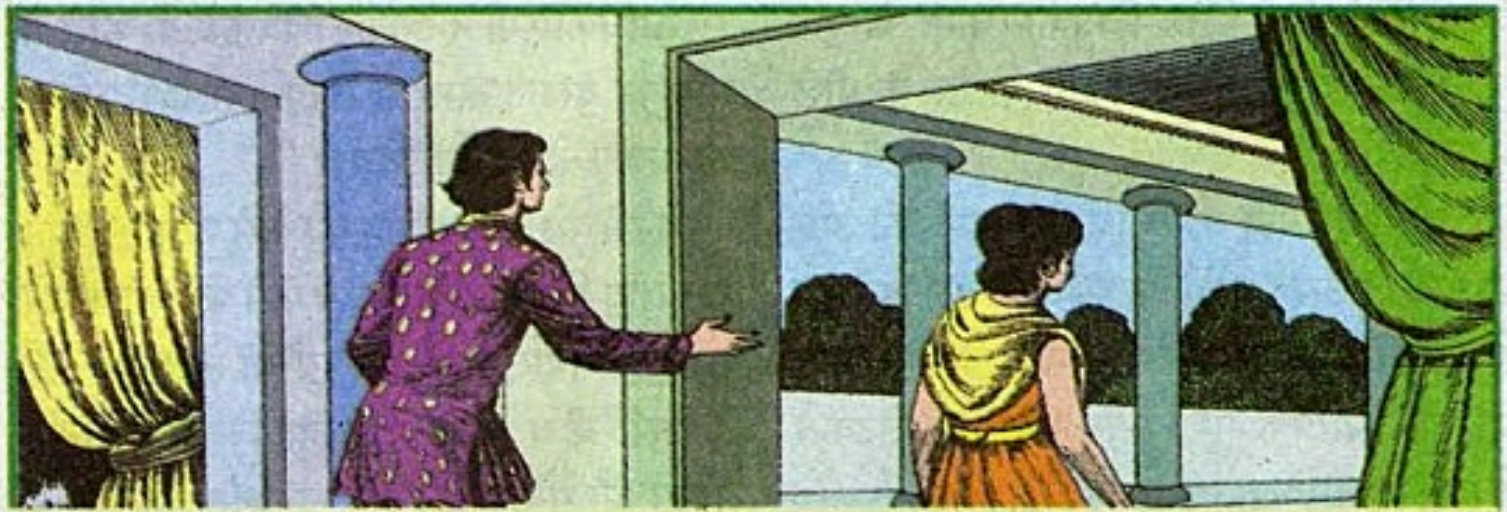
चतुर चित्रकार

प्राचीन काल में भारत के मध्यदेश से एक प्रतिभाशाली चित्रकार यवन देश में गया। वहाँ पर एक अनोखा यंत्राचार्य था। उसने चित्रकार को अपने यहाँ ठहराया। अतिथि की सेवा करने के निमित्त उसने एक यांत्रिक स्त्री को नियुक्त किया जिसे उस शिल्पी ने स्वयं तैयार किया था।

वह यांत्रिक स्त्री चित्रकार के पैर धोकर जा रही थी। वह यांत्रिक स्त्री देखने और व्यवहार करने में इतनी मानवीय और स्वाभाविक लग रही थी कि उस मूर्ति को देख चित्रकार ने सोचा कि वह सचमुच एक औरत है। वह उससे कुछ बातचीत करना चाहता था। इसलिए उसने उस नारी से कुछ सवाल किया, पर नारी ने कोई जवाब नहीं दिया।

इस पर चित्रकार ने उस नारी का हाथ पकड़कर खींचा। उसके धक्के से मूर्ति के भीतर की जोड़ें हिल गईं और वह मूर्ति नीचे गिर गयी। चित्रकार को यह समझते देर न लगी कि वह एक यांत्रिक स्त्री है। वह यंत्राचार्य की अक्लमंदी पर आश्चर्यचकित रह गया। लेकिन साथ ही उसे इस बात का दुख था कि उसे इस रहस्य के बारे में शिल्पी ने कुछ नहीं बताया। उसने महसूस किया कि उस यवन यंत्राचार्य ने उस मूर्ति के बारे में चित्रकार से कुछ भी न बताकर उसका अपमान किया है। यह बात चित्रकार के मन में खटकने लगी। इस अपमान का प्रतिकार करके यंत्राचार्य को भी अपनी अद्‌भुत प्रतिभा का परिचय देने का चित्रकार ने निर्णय कर लिया।

तत्काल ही चित्रकार ने एक ऐसा चित्र तैयार किया जो फांसी पर लटक रहा हो और देखनेवालों को लगे कि स्वयं चित्रकार ने ही फंदा अपने कंठ में लगाया हो। उस चित्र को अपने कमरे में चित्रकार ने इस तरह लटकाया, जिससे जो भी बाहर से कमरे में झाँककर देखे, उसे तुरंत वह

पच्चीस वर्ष पहले चन्दामामा में प्रकाशित कहानी

चित्र दिखायी दे। तब चित्रकार कमरे के एक कोने में पड़ी पुरानी लकड़ियों के ढेर के पीछे छिप गया।

थोड़ी देर बाद यंत्राचार्य उस कमरे की ओर से गुजरा। उसने देखा कि कमरे के द्वार खुले हुए हैं। इसलिए उसने भीतर झाँका। उसने ज़मीन पर गिरी यांत्रिक मूर्ति और फाँसी पर लटकते चित्रकार को देखा।

उस दृश्य को देख यंत्राचार्य डर गया। उसने जो यांत्रिक मूर्ति तैयार की थी, उसके नष्ट हो जाने की उसे ज़रा भी चिंता न थी, लेकिन भारत से आकर उसके घर ठहरे चित्रकार की मौत पर उसे दुःख हुआ। क्योंकि वह अपयश उसी के सर लगेगा, इसलिए उसने सरकारी अधिकारियों द्वारा इस घटना की तहक़ीकात कराना उचित समझा।

यह सोचकर यंत्राचार्य अपने देश के राजा के दरबार में गया और उसे सारी घटना कह सुनायी। राजा ने इसका पूरा हाल जानने के लिए अपने दरबारी अधिकारियों को यंत्राचार्य के घर भेज दिया।

अधिकारियों ने आकर चित्रकार के कमरे में झाँककर देखा। कमरे में लटकनेवाला चित्रकार का शव उन्हें दिखाई दिया।

वे सोचने लगे कि शव को कैसे उतारा जाये! कुछ लोग चित्रकार के कंठ में फँसे फंदे को काटने के लिए तलवार, भाले और छुरियाँ ले आये।

इसी बीच कमरे में छिपा चित्रकार उनके सामने आ गया। उसे देख सब लोग विस्मय में आ गये।

चित्रकार ने यंत्राचार्य से कहा, ''महाशय, यह बात सच है कि आपने यांत्रिक नारी को मेरी सेवा के लिए नियुक्त करके मुझे भ्रम में डाल दिया, मगर आपने अपनी अक्लमंदी द्वारा मुझ अकेले को ही भ्रम में डाला, जबकि मैंने अपनी अक्ल का प्रयोग करके आपको तथा राजा के द्वारा भेजे गये अधिकारियों को भी भ्रम में डाल दिया है।''

यह बात सुनकर यंत्राचार्य ने लज्जा के मारे अपना सर झुका लिया। और भारत के महान कलाकार की मन ही मन सराहना की।
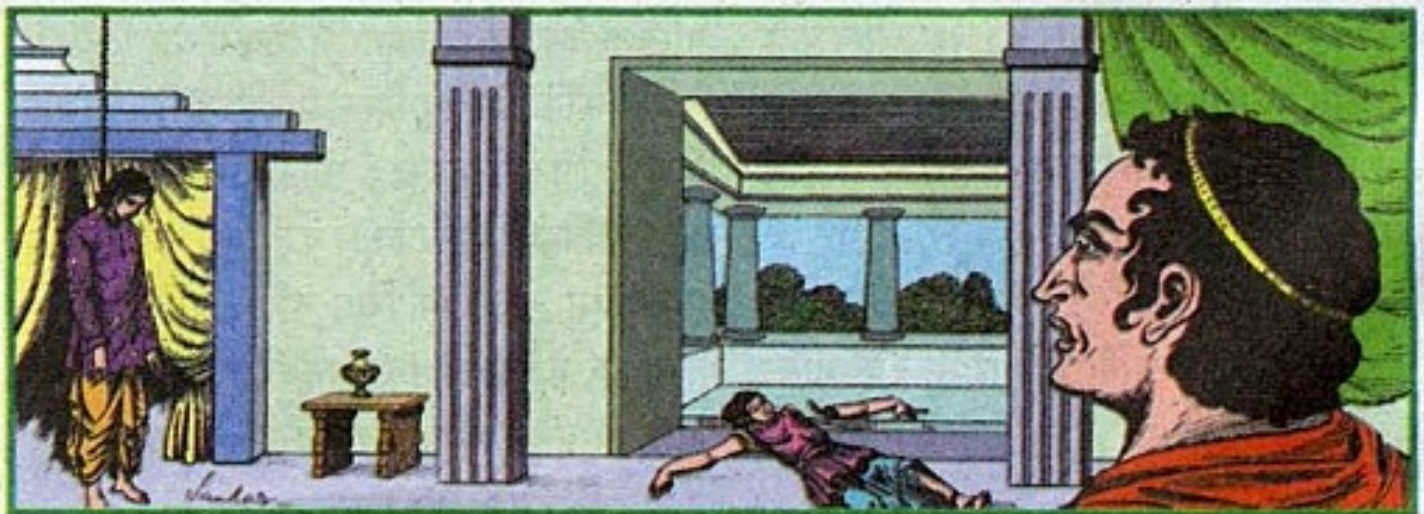
जयानन्द ध्यान में बैठ जाते हैं। भाग और भागी उसके पास आते हैं।

जब वे थपकी देकर उन्हें प्यार करते हैं तब बाघ उनके हाथ चाटने लगते हैं।

मुझे तुम दोनों से कुछ काम है। स्त्री के मृत शरीर की निगरानी करो।

कोई भी उसे स्पर्श न करे या उसे लेकर चला न जाये! कल उसे समाधि दी जायेगी।

दोनों पशु उसके कन्धों को छूने के लिए खड़े हो जाते हैं मानो वे अपना कर्त्तव्य समझ गये हैं।

ऋषि और उसके शिष्य यह देखकर कि दोनों बाघ शरीर के चारों ओर घूम रहे हैं, वहाँ से चले जाते हैं।

ऋषि और शिष्य आश्रम में लौट आते हैं और जंगल के पशु-पक्षी उनका अभिवादन करते हैं।
आह ! भालूकी! आओ, आओ। तुम इस शिशु की देखभाल कर सकते हो।
मेरे बच्चे, यह लॉकेट तुम्हारी पहचान को प्रकट कर देगा। तुम्हारी सुरक्षा के लिए मैं इसे हटा लेता हूँ।
इधर, भालूकी, इसकी ठीक से देखभाल करो।

मोंकू बन्दर वृक्ष से नीचे उतरता है। अन्य पशु भी ग्रूप में सम्मिलित हो जाते हैं। शिशु वृद्ध भालूकी के हाथों में न केवल आराम से है बल्कि वह पशुओं की उछल-कूद में आनन्द ले रहा है।
क्रमशः

सिर्फ एक घसीट में

महेश हवा में एक फ़ाखता को उड़ा रहा है।
क्या इस चित्र को हूबहू वैसा ही बना सकते हो?
आसान, क्या तुमने कहा? अच्छ, संकेत यह है —
तुम्हें सम्पूर्ण चित्र एक ही घसीट में बनाना है,
कागज पर से पेंसिल को बिना उठाये।
कोशिश करने में क्या हर्ज है!

I

चिड़िया का चक्कर

चिकी चिड़िया बहुत परेशान है। उसकी बेबी, टिप्पी घोंसले में उसकी प्रतीक्षा कर रही है। लेकिन कोशिश वह कितनी भी करे, उसे रास्ता नहीं मिल रहा है। क्या तुम उसकी मदद कर सकते हो? भुलभुलैया से होकर उसके लिए घोंसले तक रास्ता बना कर!

II

फ़र्क बताओ

ये दोनों चित्र एक समान दिखाई पड़ते हैं, लेकिन वे हैं नहीं। सावधानी से देखो तो तुम्हें दोनों चित्रों के बीच में छः फ़र्क मिलेंगे। कोशिश करो कि तुम्हें सभी फ़र्क मिल सकें।

(उत्तर - पृष्ठ ९४ पर)

रँग ने का मज़ा

प्रियदर्शिनी हंसिनी और उसका बेटा हरि मेले के लिए निकल रहे हैं। बांका छैला टोप पहन कर। इस चित्र को सर्वोत्तम रंगों से भरो।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा
चित्र परिचय बना सकते हो, जो एक
दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?

SOURAA

SOURAA

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.
जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा,
जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

सितम्बर अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

आशिमा सचदेवा
WZ-6A, हिन्द नगर
डाकघर - तिलक नगर,
नई दिल्ली - ११० ०१८.

घरेलू फोन को परिवार का बच्चा भी उठा ले।
मोबाइल को तो कोई व्यापारी ही संभाले ॥

मनोरंजन टाइम्स के उत्तर (पृष्ठ-९२-९३)

फ़र्क की खोज करो

१. घोड़े का दायां कान गायब
२. घोड़े के मुँह
३. घोड़े के शरीर पर धब्बे
४. घोड़े का दायां पिछला पाँव
५. गाड़ी पर रेखाओं की संख्या
६. गाड़ी के पहिये में गायब आरा

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam